दूरस्थ शिक्षा निदेशालय
Directorate of Distance Education
जम्मू विश्वविद्यालय
UNIVERSITY OF JAMMU
जम्मू
JAMMU

पाठ्य सामग्री
STUDY MATERIAL
कला स्नातक –सत्र –VI
B.A. Semester - VI

विषय : हिन्दी — आलेख संख्या 1–11

COURSE NO. H1-601 — **LESSON NO. 1- 11**

Dr. Anuradha Goswami
COURSE CO-ORDINATOR

इस पाठ्य सामग्री का रचना स्वत्व/प्रकाशनाधिकार दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू –180006 के पास सुरक्षित है।

http:/www.distanceeducationju.in
Printed and published on behalf of the Directorate of Distance Education, University of Jammu, Jammu by the Director, DDE, University of Jammu, Jammu

B.A. III
HINDI

Course Contributors

- Prof Anil Goel
  Retired Principal
  Govt Degree College

- Dr. Anju Thappa
  Associate Professor, Department of Hindi
  DDE, University of Jammu

- Dr. Vandana Sharma
  Assistant Professor
  Department of Hindi
  Central University, Jammu

Content Editing, Review & Proof Reading

Dr. Nisha Jamwal
Lecturer in Hindi
Directorate of Distance Education
University of Jammu

© Directorate of Distance Education, University of Jammu, Jammu, 2021

- All rights reserved. No part of this work may be reproduced in any form, by mimeograph or any other means, without permission in writing from the DDE, Universityof Jammu.
- The script writer shall be responsible for the lesson/script submitted to the DDE and any plagiarism shall be his/her entire responsibility.

Printed by :- Sudesh Printers / 2021 / 150 Books

बी.ए के छटे सत्र की परीक्षा वर्ष – 2017, 2018 तथा 2019 हेतु विस्तृत पाठ्यक्रम

Course No. : HI-601

विषय : हिन्दी
पेपर : कथा साहित्य
समय : 3 घंटे

कुल अंक : 100
1. बाह्य परीक्षा : 80
2. आन्तरिक परीक्षा : 20
Two written Assignment of 10 Marks each (Total 20 marks)

निर्धारित पुस्तकें

	पुस्तक	लेखक	प्रकाशक
1.	उपन्यास–आपका बंटी	मन्नू भंडारी	राधाकृष्ण प्रकाशन
2.	कहानी संग्रह–कहानी एकादशी	दशरथ ओझा	शिक्षा भारती, कश्मीरी गेट, दिल्ली

(पहली सात कहानियाँ ही पाठ्यक्रम में निर्धारित हैं)

पाठ्यक्रम का विवरण

1. उपन्यास
    1. बाल मनोविज्ञान की दृष्टि से 'आप का बंटी'
    2. वैवाहिक सम्बन्धों के बदलते मूल्य और 'आप का बंटी'।
    3. 'आप का बंटी' की शिल्पगत विशेषताएँ
    4. मन्नू भंडारी का साहित्यिक परिचय।
2. कहानी एकादशी
    1. हिन्दी कहानी का उद्‌भव और विकास
    2. निर्धारित कहानियों की तात्विक आलोचना
    3. निर्धारित कहानियों के प्रमुख पात्रों का चरिण–चित्रण।

प्रश्नपत्र का प्रारूप एवं अंक–विभाजन इस प्रकार होगा –

1. निर्धारित पुस्तकों में से शत प्रतिशत विकल्प के साथ एक–एक व्याख्या पूछी जाएगी। 7X2=14

2. आपका बंटी उपन्यास पर आधारित दो एवं कहानी संग्रह पर आधारित एक दीर्घ उत्तरापेक्षी प्रश्न (कुल तीन) शत प्रतिशत विकल्प के साथ पूछे जाऐंगे। 11X3=33

3. आपकी बंटी उपन्यास पर आधारित दो एवं कहानी संग्रह पर आधारित एक लघु उत्तरोपेक्षी प्रश्न (कुल तीन) शत प्रतिशत विकल्प के साथ पूछे जाऐंगे। 6X3=18

4. आपकी बंटी उपन्यास पर आधारित दो एवं कहानी संग्रह पर आधारित एक अति लघु उत्तरापेक्षी प्रश्न (कुल तीन) शत प्रतिशत विकल्प के साथ पूछे जाऐंगे। 3X3=9

5. दोनों पुस्तकों पर आधारित तीन–तीन वस्तुनिष्ठ प्रश्न बिना विकल्प के पूछे जाएँगे 1X6=06

संस्तुत पुस्तकें :–

1. डॉ. वंशीधर, डॉ. राजेन्द्र मिश्र : मन्नू भंडारी का श्रेष्ठ सर्जनात्मक साहित्य, नटराज पब्लिशिंग हाउस, हरियाणा।

2. नन्दिनी मिश्रा : मन्नू भंडारी का उपन्यास साहित्य।

3. डॉ. शशि जेकब : महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में वैचारिकता।

4. डॉ. सुखबीर सिंह : हिन्दी कहानी : समकालीन परिदृश्य, अभिव्यंजना प्रकाशक, नई दिल्ली।

5. डॉ. रघुवरदयाल वार्ष्णेय : हिन्दी कहानी : बदलते प्रमितान, पांडुलिपि प्रकाशन, दिल्ली।

6. डॉ. कान्ता मेहदीरता : हिन्दी कहानी का मूल्यांकन, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।

विषय सूची

पाठ् क्रम	आलेख	पृष्ठ संख्या
1.	उपन्यास 'आपका बंटी' की व्याख्या – डॉ. वंदना शर्मा	1
2.	पाठ्यक्रम में निर्धारित कहानियों की व्याख्या – डॉ. अनिल गोयल	10
3.	वैवाहिक संबंधों के बदलते मूल्य और 'आपका बंटी' – डॉ. वंदना शर्मा	18
4.	'आपका बंटी' की शिल्पगत विशेषताऐं – डॉ. वंदना शर्मा	24
5.	मन्नू भंडारी का साहित्यिक परिचय – डॉ. अन्जू थापा	28
6.	बाल मनोविज्ञान की दृष्टि से 'आपका बंटी' उपन्यास – डॉ. वंदना शर्मा	35
7.	हिन्दी कहानी का उद्‌भव और विकास पर प्रकाश – डॉ. अनिल गोयल	44
8.	'उसने कहा था', 'ईद का त्योहार' और 'छोटा जादूगर' कहानियों की तात्विक समीक्षा – डॉ. वदना शर्मा	52
9.	'पढ़ाई', 'प्रायश्चित', 'आदमी का बच्चा', 'दारोगा अमीरचन्द', नामक कहानियों की तात्विक समीक्षा – डॉ. अनिल गोयल	72
10.	'उसने कहा था', 'ईद का त्योहार', 'छोटा जादूगर' कहानियों के प्रमुख पात्रों का चरित्र–चित्रण – डॉ. वंदना शर्मा	85
11	'पढ़ाई', 'प्रायश्चित', 'आदमी का बच्चा' तथा 'दारोगा अमीरचन्द' कहानियों के प्रमख पात्रों का चरित्र–चित्रण – डॉ. वंदना शर्मा	92

आपका बंटी (व्याख्या भाग)

"क्या कहा, ताश, लूडो.....निकल कर भाग दौड़ने वाले।"....

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश 'आपका बंटी' से लिया गया है। मन्नू भण्डारी कृत 'आपका बंटी' मनोविश्लेषणवादी उपन्यास है। यहां बंटी को लड़कों वाले खेल खेलने के लिए प्रेरित किया गया है।

व्याख्या : इन पंक्तियों में बंटी के पिता बंटी को ताश, लूडो और कैरम जैसे खेल मना करते हुए क्रिकेट, हाकी, आदि लड़कों वाले खेल खेलने के लिए उत्साहित करते हैं। बंटी के पिता और वकील चाचा चाहते हैं कि बंटी का विकास लड़कों जैसा हो। वे चाहते हैं कि उसे हॉस्टल में डाल दिया जाए ताकि वहां लड़कों के साथ रहते हुये उसका शारीरिक और मानसिक विकास अच्छे से हो सके।

बंटी ने एक बार.....बता सकते हो इसका अर्थ?

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश 'आपका बंटी, से उद्धृत है। मन्नू भण्डारी कृत 'आपका बंटी' के माध्यम से उसके माता–पिता के बीच उत्पन्न तनाव को अभिव्यक्त किया गया है। उसने अपने मित्र से एक तथ्य सुन रखा है वह उसका अर्थ समझना चाहता है।

व्याख्या : बंटी बड़े रहस्यमय ढ़ंग से कहता है कि जब एक बार धुरी गड़बड़ा जाती है तो जिंदगी लड़खड़ा जाती है। बंटी ने यह वाक्य सुना अवश्य है किन्तु उसे इसका अर्थ मालूम नहीं, तभी चतुराई से वह मित्र से पूछता है क्या इस वाक्य का अर्थ बता सकते हो ? बता सकते हो इस बात का अर्थ ?

"एल्लो और सुनो! .....दिन में नहीं।"

प्रसंग : यह गद्यांश उपन्यास 'आपका बंटी; से लिया गया है। मन्नू भड़ारी द्वारा रचित 'आपका बंटी' उपन्यास मनोविश्लेषणवादी है। यहां बंटी द्वारा कहानी सुनने की जिद्द करने पर घरेलू नौकरानी फूफी उसे समझाने का प्रयत्न कर रही है।

व्याख्या : फूफी बंटी को समझाती है कि तुम्हें कहानी सुनने की सूझ रही है, अभी कहानी सुनने या सुनाने का समय नहीं है अभी तो मुझे घर का सारा काम करना है। कहानी तो रात को सुनी और सुनाई जाती है, दिन में नहीं।

उसी ने बताया.....तो ये जिएँ कैसे बेचारे?"

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश 'आपका बंटी' उपन्यास से उद्धृत है। मन्नू भण्डारी द्वारा लिखित 'आपका बंटी' मनोविश्लेषपवादी उपन्यास है। यहाँ बंटी पड़ोस में उसके माता–पिता के तलाक को लेकर हो रही चर्चा का ज़िक्र अपनी मां शकुन से करता है। शकुन यह सब सुन खीझ पड़ती हैं।

व्याख्या : बंटी अपनी माता शकुन से कहता है कि जब भी वह अपने मित्र के घर जाता है तो उनके घरवालों तथा मुहल्ले वाले उसके माता–पिता की लड़ाई और फिर तलाक के बारे में जरूर बातें करते हैं, जबकि उसे स्वयं मालूम नहीं कि तलाक क्या होता है। शकुन सुन कर बंटी पर खीझती है परन्तु फिर नरम पड़ जाती है। वह बंटी के भोलेपन को समझती हुई तथा तलाक की बात टालते हुए कहती है कि लोगों के पास इस तरह की बाते करने को न हो तो वे बेचारे जिएँगे कैसे?

".....तुम भी जानती.....यह तो कोई बात नहीं हुई न!"

प्रंसग : प्रस्तुत गद्यांश 'आपका बंटी' उपन्यास से उद्धृत है। मन्नू भण्डारी कृत 'आपका बंटी' मनोविश्लेषणवादी उपन्यास है। यहाँ वकील चाचा बंटी की माता शकुन को बंटी को उसके उचित विकास के लिए हॉस्टल भेजने की सलाह देते हैं।

व्याख्या : वकील चाचा बंटी की माता शकुन से कहता है कि तुम भली–भांति जानती हो कि मैं सीधी–सीधी और स्पष्ट बात करने वाला व्यक्ति हूँ। मैं जानता हूँ कि तुम बंटी की देख–भाल में कोई कमी नहीं रखती हो। लेकिन उसे लड़कों जैसा विकसित होने वाला परिवेश नहीं मिल रहा, उसे तो केवल तुम्हारा घरेलू नौकरानी फूफी या उन महिलाओं का साथ मिल रहा है जो तुम्हारे यहाँ आती हैं। इसके अलावा आस–पड़ोस का एक–दो बच्चा उसे खेलने को मिल जाता किन्तु इस माहौल या वातावरण या परिवेश में बंटी का लड़कों जैसा विकास असंभव है।

"अच्छा, क्या प्रेम.....उसे तुम क्या कहोगे?"

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश 'आपका बंटी' उपन्यास से उद्धृत है। मन्नू भण्डारी द्वारा लिखित 'आपका बंटी' मनोविश्लेषण्वादी उपन्यास है। यहाँ शकुन प्रेम का रहस्य जानने हेतु अपने दूसरे पति डॉ॰ जोशी से उसकी पूर्व की पत्नी के साथ उसके सम्बन्धों को जानना चाहती है।

व्याख्या : शकुन अपने दूसरे पति डॉ॰ जोशी से जानना चाहती है कि क्या प्रेम सच में मात्र एक शारीरिक आवश्यकता है और सुविधाजनक समायोजन अथवा सामंजस्य है। डॉ॰ जोशी अपनी पूर्व पत्नी की मृत्यु हो जाने पर शकुन से सम्बन्ध जोड़ते हैं। डॉ॰ शकुन जोशी से विवाह कर शारीरिक सुख भोग रही है। सिर्फ शारीरिक आवश्यकता की पूर्ति के लिए प्रेम विवाह के रूप में समझौता ही तो है। क्या डॉ॰ जोशी को शकुन से यह आवश्यकता पूरी हो जाने के बाद अपनी मृत पूर्व पत्नी की याद आती है? अगर आती है तो क्यों? और ऐसी स्थिति में डॉ॰ जोशी तुम उससे क्या चाहोगे?

"तुम नौकरी करो या छोड़ो.....मैं उचित नहीं समझता।"

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश 'आपका बंटी' नामक उपन्यास से उद्धृत है। मन्नू भण्डारी द्वारा रचित 'आपका बंटी' मनोविश्लेषणवादी उपन्यास है। यहां शादी से पूर्व डॉ॰ जोशी और शकुन के सम्बन्ध को कस्बे के लोग उचित नहीं मान रहे और शकुन के कॉलेज का मैनेजर भी शकुन को अपनी आपत्ति जतला देता है। इसी बात का ज़िक्र शकुन डॉ॰ जोशी से करती हुई कहती है कि ये लोग अगर ज्यादा चूँ–चपड़ करेंगे तो मैं अपनी नौकरी छोड़ दूँगी। इस बात पर डॉ॰ जोशी शकुन को संयम तथा विवेक से काम लेने की सलाह देते हैं।

व्याख्या : डॉ॰ जोशी शकुन से कहता है कि नौकरी करना या छोड़ना उसकी अपनी इच्छा पर निर्भर करता है। लेकिन किसी की इस तरह आपत्ति करने से व्यक्ति जीना थोड़े छोड़ सकता है। आप अगर मैनेजर की आपत्ति पर नौकरी छोड़ रही हो तो कल शहर वाले आपत्ति करेंगे तो तुम शहर छोड़ दोगी या छोड़ने की बात करोगी। लोगों का काम है आपत्तियाँ या चर्चाएँ करना, छोटी जगहों के लोग इस तरह की बातें आसानी से पचा नहीं पाते। किन्तु उनके सामने घुटने टेक देने से काम नहीं चल सकता। डॉ॰ जोशी शकुन को समझाता हुआ कहता है कि सच पूछो तो आपत्ति बाहर नहीं बल्कि अपने मन के भीतर ही कहीं होती है। जिससे छोटी–छोटी बातें हमें उद्वेलित करती रहती हैं। समझदारी इसी में है कि इन आपत्तियों के लिए एक मिनट भी माफ नहीं करना चाहिए। डॉ॰ जोशी शकुन को यही समझाना चाहते हैं कि यदि वह जोशी से अपने सम्बन्ध को सही मानती है तो उसे किसी की भी चिन्ता नहीं करनी चाहिए और यदि अनुचित मानती है तो उस सम्बन्ध को तोड़ देने में ही भलाई है।

"मन न इस बात.....सात साल तक यों घिसटती रही?"

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश 'आपका बंटी' उपन्यास से लिया गया है। मन्नू भण्डारी द्वारा लिखित 'आपका बंटी' मनोविश्लेषणवादी उपन्यास है। यहाँ डॉ॰ जोशी से विवाह कर लेने के पश्चात् शकुन अपने सुख के अनुभव का स्मरण कर रही है और इस बात को लेकर पश्चाताप भी कर रही है कि डॉ॰ जोशी से उसके विवाह का निर्णय देरी से क्यूँ लिया गया यह निर्णय तो उसे बहुत पहले ले लेना चाहिए था। अब अपने बीते दिनों को भूल जाना चाहती है।

व्याख्या : शकुन डॉ॰ जोशी से किए अपने विवाह तथा पूर्व (पहले) पति अजय से अलगाव के कारण तलाक के बारे में सोच रही है। वह इस असमंजस में है कि उसने सही कदम उठाया है या गलत। किन्तु अजय के साथ बीते उस अतीत के बारे में ज्यादा जानने या सोचने के लिए तैयार नहीं है। वह इस समय अपने वर्तमान के भरेपूरे जीवन को ही स्मरण तथा अनुभव कर उसी में खोए रहना चाहती है। अब अगर उसे किसी बात का अफसोस है तो केवल इस बात का कि अजय से तलाक तथा डॉ॰ जोशी से विवाह बहुत पहले ही क्यों नहीं कर लिया यदि वह पहले ही ऐसा निर्णय ले लेती तो पिछले सात वर्षों तक यों ही बेकार में घिसटती या दुःख झेलती रही। यदि अजय के साथ निभनी ही नहीं थी तो व्यर्थ में ही प्रयास और प्रतीक्षा कर अपना अमूल्य समय बर्बाद करती रही।

"लगता है उम्र बीत.....आदमी को मारती रहती हैं।"

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश 'आपका बंटी' उपन्यास से उद्धृत है। मन्नू भण्डारी कृत 'आपका बंटी' मनोविश्लेषणवादी उपन्यास है। यहाँ डॉ॰ जोशी से विवाह कर लेने के पश्चात् यौन तृप्ति प्राप्त करके शकुन अनुभव कर रही है कि उम्र बीत जाने से ही दमित कामनाएँ मरती नहीं बल्कि और अधिक बलवती हो उठती हैं।

व्याख्या : शकुन डॉ॰ जोशी से विवाह कर अनुभव करती है कि यौवन और किशोर उम्र बीत जाने के साथ समाप्त नहीं हो जाता बल्कि अतृप्त होने के कारण यौन–आकांक्षाएँ या भावनाएँ मरती नहीं और अधिक बलवती होकर व्यक्ति को मारती रहती हैं। इन आकांक्षाओं को तृप्ति करके ही संतुलित जीवन जीने में भलाई है।

"बोल, बोल तू क्यों.....मैं भेज दूँगी, नहीं रहो।"

प्रसंग :– प्रस्तुत गद्यांश 'आपका बंटी' उपन्यास से उद्धृत है। मन्नू भण्डारी द्वारा लिखित 'आपका बंटी' मनोविश्लेषणवादी उपन्यास है। यहाँ शकुन की बंटी के प्रति खीझ अभिव्यक्त हुई है। बंटी डॉ॰ जोशी के घर के परिवेश के अनुसार स्वयं को ढाल नहीं पा रहा है और न ही डॉ॰ जोशी को पिता का स्थान दे रहा है। इस नयी उलझन में फंस कर शकुन बंटी पर खीझ पड़ती है।

व्याख्या : शकुन बंटी को डाँट–डपट रही है। बता तू यह सब करने पर क्यों तुला हुआ है? क्यों मेरी और अपनी जिन्दगी में जहर घोलने की कोशिश कर रहा है। तुम्हें डॉ॰ जोशी के यहां रहने से क्या तकलीफ है? तुम्हें यहां पर क्या परेशानी है जिसकी वजह से तुम रोज एक नया हंगामा खड़ा कर देते हो। रोज एक मुसीबत। लेकिन तुम्हारे यह रोज–रोज के तमाशे कौन झेलेगा? यदि तुम पापा अजय के साथ रहना चाहते हो तो और तेरे पापा तुझे अपने साथ रखना चाहते है तो मैं तुझे कलकत्ता भेज दूँगी। यदि तुम्हें मेरे यहां नहीं रहना तो न रहो।

"देखो शकुन, बंटी.....तुम्हारे साथ देख ही नहीं सकता।"

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश 'आपका बंटी' उपन्यास से उद्धृत है। मन्नू भण्डारी द्वारा लिखित 'आपका बंटी' मनोविश्लेषणवादी उपन्यास है। यहाँ डॉ॰ जोशी शकुन को समझाता है कि बंटी अब समस्याग्रस्त बच्चा बन गया है। उसके विद्रोही स्वभाव को देखते हुए उसे स्नेह, सद्भावना तथा अन्य बच्चों से किए जाते व्यवहार से भिन्न प्रकार का व्यवहार करना होगा और उसके प्रति अतिरिक्त सहानुभूति रखनी होगी।

व्याख्या : डॉ॰ जोशी शकुन को बंटी के प्रति सचेत करता हुआ समझाता है कि बंटी अब साधारण बच्चा नहीं बल्कि प्राबल्म बच्चा हो गया है, क्योंकि वह नये परिवार और माहौल में स्वयं को एडजेस्ट नहीं कर पा रहा है और न वह अपनी मां का सम्बन्ध किसी और से चाह रहा है। वह शकुन के साथ अकेले रहते–रहते बहुत पोजेसिव अधिकारात्मक हो गया है। वह नहीं चाहता कि शकुन उससे दूर जाए किसी और से सम्बन्ध स्थापित करे। उसे लगता है कि डॉ॰ जोशी ने उसकी मां छीन ली है।

'शुरू के दिनों में .....विभोर क्षणों के अभिनय की।"

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश 'आपका बंटी' उपन्यास से उद्धृत है। मन्नू भण्डारी द्वारा लिखित 'आपका बंटी' मनोविश्लेषणवादी उपन्यास है। यहाँ शकुन अपने और पहले पति अजय के बीच के असफल वैवाहिक जीवन के तनाव एवं कुण्ठा का स्मरण कर रही है। विवाह के आरम्भिक दिनों में ही उन्हें अहसास हो गया था कि शादी का निर्णय सही नहीं है लेकिन फिर भी उन्होंने इस गलत निर्णय को सुधारने के लिए कई तरह के भरसक प्रयास किये, प्रेम समर्पण में सुधार लाने के नाटक भी हुए थे परन्तु प्रेम और समर्पण पनपा नहीं।

व्याख्या : शकुन का मानना है कि उन्होंने पहले वैवाहिक जीवन में मात्र प्रेम का अभिनय ही किया। वास्तव में विवाह का गलत निर्णय ले डालने का अहसास दोनों को शुरू के दिनों में ही हो गया था। लेकिन फिर भी विवाह को बनाए रखने के लिए सभी तरह के दाव–पेंच खेले कभी कोमलता के, कभी कठोरता के। कभी सब कुछ लुटा देने वाली उदारता एवं सहृदयता के तो कभी सब कुछ समेट लेने वाली कृपणता एवं कंजूसी के। प्रेम के झूठे नाटक भी किए तथा अपने को न्यौछावर एवं तन–मन को डुबो देने वाले विभोर क्षणों का अभिनय भी किया किन्तु फिर भी वैवाहिक जीवन में कोई सुधार नहीं हुआ बल्कि दिन–प्रतिदिन अलगाव और तलाक की ओर बढ़ता गया।

"साथ रहने की यन्त्रणा.....क्या कुछ अमूल्य खो दिया है।"

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश 'आपका बंटी' उपन्यास से उद्धृत है। मन्नू भण्डारी द्वारा लिखित 'आपका बंटी' एक मनोविश्लेषणवादी उपन्यास है। यहाँ शकुन अपने अलगाव के दिनों के बारे में सोच रही है। अलग रहकर भी एक ठण्डा युद्ध जारी रहा और शायद अलगाव के कारण अजय और शकुन दोनों ने हर दूसरे के महत्व को समझा होगा।

व्याख्या : शकुन सोच रही है कि अजय के साथ रहने की यन्त्रणा बड़ी कष्टदायक थी और अब अलग रहना भी दुःखदायक है। अलग रहकर भी दोनों में एक ठण्डा युद्ध कुछ समय तक जारी ही नहीं रहता वरन् अनजाने में ही इस युद्ध में अपने जीतने की संभावनाएँ पैदा होने लगी थीं क्योंकि यह विचार जाग गया था कि शायद अलग रहकर ही सही तरीके से अनुभव होगा कि सामने वाले को खोकर क्या कुछ अमूल्य खो दिया है। इसी चिन्ता में उसे पाने के लिए फिर से दाम्पत्य जीवन शुरू हो सकता है।

"याद नहीं, पर किसी संदर्भ में .....जहाँ जस्टिफिकेशन है, वहां गिल्ट है।"

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश 'आपका बंटी' उपन्यास से उद्धृत है। मन्नू भण्डारी द्वारा लिखित 'आपका बंटी' मनोविश्लेषण्वादी उपन्यास है। यहाँ शकुन स्मरण कर रही है कि डॉ॰ जोशी ने एक बार उसे अपराध बोध की स्थिति के बारे में समझाया था और कहा था व्यक्ति को आरोपों के बजाए स्वयं अपना मूल्यांकन करना चाहिए और अपराध बोध से बचना चाहिए।

व्याख्या : शकुन याद करती हैं कि डॉ॰ जोशी ने एक बार किसी संदर्भ में कहा था कि जब मनुष्य अपने–अपने अपराधी महसूस करता है तो तर्क के आधार पर अपने आप को उचित ठहराता रहता है। तथा अपने हर गलत काम को भी जस्टीफाई न करे तो वह अपराधबोध को झेलता हुआ अधिक दिन न जी पाएगा। तर्क द्वारा ही व्यक्ति स्वयं को जस्टीफाई करके अपराध बोध से छूट सामान्य जिंदगी जीने लगता है। इस प्रकार जहां जस्टीफिकेशन है वहाँ अपराध बोध भी है।

यह सही है कि मैं अजय का मित्र हूँ।.....ही शुड ग्रो लाइक ए बाए, लाइक एक मैन।"

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश 'आपका बंटी' उपन्यास से उद्धृत है। मन्नू भण्डारी द्वारा लिखित 'आपका बंटी' मनोविश्लेषणवादी उपन्यास है। यहाँ वकील चाचा शकुन से कहता है कि वह अजय का मित्र अवश्य है और कलकत्ता में ही रहता है और दोनों में तलाक कराने का जिम्मा उसी पर है, फिर भी वह शकुन से मैत्री और स्नेह भाव रखता है। समय–समय पर शकुन तथा बंटी के हित में सलाह देता रहता है। ऐसे में शकुन चाहकर भी वकील चाचा के प्रति कोई शिकायत नहीं कर सकती।

व्याख्या : वकील चाचा बंटी की माता को समझाते हुए कहते हैं कि यह सही है कि मैं आपका मित्र हूँ और कलकत्ता रहता हूँ, पर तुम्हारे लिए भी मेरे मन में स्नेह, सहानुभूति कम नहीं हैं। मेरे प्रति पक्षपात की कोई शिकायत करना चाहोगी, तो भी तुम्हें ढूँढे कोई बात नहीं मिलेगी। वकील चाचा शकुन को बंटी के विषय में समझाता हुआ कहता है कि बंटी की पढ़ाई की ओर ध्यान दे, पड़ोस या मुहल्ले के एक–दो बच्चों के साथ खेल लेने से उसके व्यक्तित्व का समुचित विकास नहीं हो सकता। आठ–नौ साल के बढ़ती उम्र के बच्चे के इस तरह का वातावरण ठीक नहीं है। उसे हॉस्टल भेज देना चाहिए। ताकि उसका विकास एक लड़के की भांति, एक पुरूष की भांति हो सके।

कभी–कभी लगता जैसे.....मन हुआ पापा से पूछ ले।

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश 'आपका बंटी' उपन्यास से उद्धृत है। मन्नू भण्डारी द्वारा लिखित 'आपका बंटी' मनोविश्लेषणवादी उपन्यास है। यहाँ हॉस्टल में प्रवेश के लिए बंटी को उसके पिता अजय गाड़ी में बिठा कर ले जा रहे हैं। गाड़ी के चलते रास्ते में पेड़ पौधे दृश्य पीछे छूटते जा रहे हैं जिन्हें देख बंटी को लगता है कि वह आगे बढ़ता जा रहा है और उसके सगे संबंधी पीछे छूटते जा रहे हैं, कहीं अतीत में धुंधले होते जा रहे हैं।

व्याख्या : हॉस्टल के लिए जाते हुए गाड़ी में बंटी को कभी लगता है कि सब के सब उसके साथ दौड़ रहे हैं और कभी उसे लगता है कि वह दौड़ रहा है, बाकि सब पीछे छूटते चले जा रहे हैं। उसने जब गर्दन निकालकर बाहर देखा तो सचमुच सभी पीछे छूट गए थे, कोई साथ नहीं दौड़ रहा था, जो जहां था वहीं खड़ा है बस वही आगे–आगे बढ़ता जा रहा है। न जाने क्यों फिर ऐसा लगता है कि साथ–साथ दौड़ रहे हैं। बंटी का मन हुआ कि पापा से एक बार पूछ ले लेकिन पापा भी तो पीछे छूट गए हैं। अब उनका अक्स भी तो धुंधला दिखाई पड़ रहा है।

सामने वाले को पराजित.....घुटी–घुटी और कृत्रिम।

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश 'आपका बंटी' उपन्यास से उद्धृत है। मन्नू भण्डारी द्वारा लिखित 'आपका बंटी' मनोविश्लेषणवादी उपन्यास है। यहाँ शकुन अपने वैवाहिक जीवन के द्वन्द्व को याद कर रही है। पूर्व पति अजय को पराजित करने हेतु कैसे वह साँस रोके, दम साधे, घुटी–घुटी और कृत्रिम ढंग से जीवन जीती रही जबकि अजय संघर्ष का क्षेत्र छोड़ बहुत पहले ही पलायन कर चुका था।

व्याख्या : यहां शकुन अपने अतीत का स्मरण कर रही है कि अजय को पराजित करने की मुद्रा में यांत्रिक जीवन जी रही थी, वह सब कृत्रिम था और वह प्राकृत स्वाभाविक जीवन की अपेक्षा संघर्ष कर रही थी। साँस रोके, दम साधे, वह दाव लगाने के लिए तत्पर रहती थी और आज भी उसी मुद्रा में है जबकि सामने वाले व्यक्ति अर्थात् अजय के रूप में प्रतिपक्ष तो पता नहीं था कब से परिदृश्य से हट गया था। वह अपने जीवन संघर्ष और उपलब्धियों की निरर्थकता का महसूस करती हुई पश्चाताप कर रही है।

"मन को मारना भी तपस्या.....उसकी तपस्या से?.....पापा....."

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश 'आपका बंटी' उपन्यास से उद्धृत है। मन्नू भण्डारी द्वारा लिखित 'आपका बंटी' मनोविश्लेषणवादी उपन्यास है। यहाँ बंटी सोच रहा है कि पापा द्वारा दिये गए खिलौने आदि को छिपा कर न चाहते हुए भी पापा के बारे में कुछ न सोच कर बड़ी तपस्या कर रहा हैं वह सोचता है यदि मन को मारना तपस्या है तो वह भी तपस्या कर रहा है।

व्याख्या : यहाँ बंटी मां के प्रति अपने दायित्व को लेकर उसे किसी भी प्रकार का कष्ट न पहुँचाने के उद्देश्य से पापा द्वारा दिए गए खिलौनों से नहीं खेल रहा बल्कि पापा की तस्वीर और खिलौनों को छिपा देता है ताकि मां उसे पापा के पक्ष में जान कर उदास न हो जाए। वह यह सब मन मारकर ही कर रहा है और विचार करता है कि यदि मन मारना ही तपस्या या भक्ति है तो वह तपस्या ही कर रहा है इस सोच भर से ही उसके भीतर एक अजीब सी पुलक जागी, और एक अजीब सा आत्म–विश्वास। उसके भीतर बार–बार प्रश्न उठ रहे हैं कि कौन प्रसन्न होगा उसकी इस तपस्या से!

"वह भीतर ही भीतर.....किसी को नहीं आने देगी।"

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश 'आपका बंटी' उपन्यास से उद्धृत है। मन्नू भण्डारी द्वारा लिखित 'आपका बंटी' मनोविश्लेषणवादी उपन्यास है। यहाँ बंटी को हॉस्टल भेजने के उद्देश्य से शकुन चिन्तित है। उसे अकेलेपन का डर भयभीत किये हुए है साथ ही उसे अपना अधिकार भी कम प्रतीत होने लगता है। जिस कारण वह बंटी को हॉस्टल भेजने के पक्ष में नहीं है।

व्याख्या : बंटी को हॉस्टल भेजने के वकील चाचा के परामर्श पर शकुन हताश हो जाती है, उसका हृदय गुस्से और आक्रोश से भर उठता है। वह सोच रही है कि उसके अधिकार को कम करने के उद्देश्य से बंटी को हॉस्टल

भेजा जा रहा है। वह एक निश्चय सा करती है कि वह अपने अधिकार की सीमा में किसी को नहीं आने देगी। शकुन को संदेह है कि बंटी के प्रति प्रेम के कारण अजय वापिस उस तक न पहुँच जाए, और यदि बंटी को चालाकी से शकुन से अलग कर दिया गया तो अजय को वह पीड़ा नहीं मिलेगी जो शकुन उसे देना चाहती है।

तर्कों और बहसों से दिन बीतते थे.....बंटी की उस खाई को पटाने के लिए सेतु नहीं बन सका, नहीं बना।

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश 'आपका बंटी' उपन्यास से उद्धृत है। मन्नू भण्डारी द्वारा लिखित 'आपका बंटी' मनोविश्लेषणवादी उपन्यास है। यहाँ शकुन अजय के साथ अपने वैवाहिक जीवन में चलते रहे शीत युद्ध का वर्णन कर रही है वे हमेशा एक दूसरे को पराजित करके अपने अनुकूल बनाने के उद्देश्य से परस्पर बहसें करते, तर्क करते और रात्रि के समय दूसरे को दुखी, बेचैन और छटपटाते हुए देखने की आकांक्षा में रातें बिताते।

व्याख्या : शकुन अपने भीतर को स्मरण कर रही है कि अजय के संग उसके दिन तर्क और बहस करते बीते, वहीं रातें दूसरे को दुखी, बेचैन और छटपटाते देखने की आकांक्षा में बीतीं। दोनों में लगातार अजीब सा शीत युद्ध चलता रहा और दम साध कर दोनों प्रतीक्षा करते हैं कि कब सामने वाले की साँस उखड़ जाती है और वह घूटने टेक दे, जिससे फिर वह बड़ी उदारता और क्षमाशीलता के साथ उसके सारे अवगुण या गुनाह माफ कर उसे स्वीकार कर ले, उसके व्यक्तित्व को पूरी तरह शून्य में बदल कर, उसे स्वीकार कर ले और इसी स्थिति को लाने के लिए हर तरह के दाँवपेंच खेले थे–कभी कोमलता के, कभी कठोरता के। इसी सर्वस्व लुटा देने वाली उदारता के तो कभी सब कुछ समेट लेने वाली कृपणता के। शकुन मानती है कि वे दोनों एक दूसरे की हर बात, हर व्यवहार और हर अदा को एक नया दाँव समझने को मजबूर थे परन्तु इस सारे युद्ध और दाँव पेंचों ने दोनों के बीच की दूरी को इतना बढ़ाया कि फिर बंटी की उस खाई को पाटने के लिए पुल नहीं बन पाया।

जो होना था सो हो ही गया.....बस उसी में अटका रह जाता है।

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश 'आपका बंटी' उपन्यास से उद्धृत है। मन्नू भण्डारी द्वारा लिखित 'आपका बंटी' मनोविश्लेषणवादी उपन्यास है। यहाँ शकुन तलाक हो जाने के पश्चात् सोच रही है कि चलो जो हुआ अच्छा ही हुआ क्योंकि यह होना ही था। तलाक होने के बाद उनका परस्पर सम्बन्ध समाप्त हो गया, नहीं तो दोबारा मिलने की आशा बनी रहती और मन यूं ही, अटका रहता एक दूसरे के लिए।

व्याख्या : शकुन तलाक को निश्चित मानती हुई कहती हैं यही होना था सो हो गया और चलो अच्छा ही हुआ नहीं तो सारी जिन्दगी अलगाव के कारण पैदा हो रहे तनाव में काटने की अपेक्षा तो उसके मुक्त हो जाना ही लाख गुणा अच्छा है। कानूनी कार्यवाही हो कर तलाक हो जाए तो अच्छा ही रहेगा। क्योंकि यह दाम्पत्य सम्बन्ध ही ऐसा है कि चाहे जितना लड़ झगड़ लो, अलग रहने लगो, पर कहीं न कहीं मिलने की इच्छा

जागृत हो ही जाती है एवं वैवाहिक जीवन का धागा जुड़ा ही रहता है। आशायें चाहें जिन्दगी –भर पूरी न हो, होती भी नहीं है, फिर भी मन में मिल जाने की आशा बनी रहती है जो व्यक्ति को परेशान करती है जीवन उसी में अटका रहता है और मन को उद्वेलित किये रहती हैं तनाव मुक्त हो स्वतन्त्र एवं शान्त जीवन नहीं जीने देती।

पाठ्यक्रम में निर्धारित कहानियों की व्याख्या

उसने कहा था

1. रात भर तुम अपने दोनों कम्बल.....पड़े रहते हो। (पृ.–19)

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश डॉ. दशरथ ओझा द्वारा संपादित पुस्तक 'कहानी एकादशी' में संकलित चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की कहानी 'उसने कहा था' में से लिया गया है।

व्याख्या : प्रस्तुत गद्यांश में लहनासिंह के त्याग और सच्चे प्रेम का चित्रण है। वह सूबेदारनी को दिए अपने वचन को निभाता है और वजीरासिंह के ये शब्द उसके इस सच्चे त्याग का खुलासा करते हैं कि वह बोधासिंह के बीमार हो जाने पर अपनी जान की परवाह किए बिना उसे अपने दोनों कम्बल ओढ़ा देता है। इसके पहरे पर होने पर भी उसकी ड्यूटी लहनासिंह देता है। उसे सूखे लकड़ी के तख्ते पर सुलाता है ताकि वह ठण्ड से बच सके परन्तु खुद कीचड़ में पड़ा रहता है।

विशेष : लहनासिंह के सच्चे त्याग और बलिदान को प्रस्तुत पंक्तियों में चित्रित किया गया है।

2. "बिजली की तरह.....चित्र हो गए। (23)

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियाँ डॉ. दशरथ ओझा द्वारा संपादित पुस्तक 'कहानी एकादशी' में पं. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी द्वारा लिखित कहानी 'उसने कहा था' से ली गई हैं।

व्याख्या : इन पंक्तियों में लहनासिंह की चतुराई का परिचय मिलता है जो जर्मनी वेशधारी को पहचान लेता है जो उसके लपटन साहब की वर्दी धारण कर उसके सामने आता है। चतुराई के साथ–साथ लहना की बहादुरी का भी पता चलता है। वह बिजली की तेजी से उस वेशधारी लपटन साहब पर वार करता है और वह मूर्छित होकर गिर पड़ता है।

विशेष : युद्ध क्षेत्र में लहनासिंह की चतुराई और बहादुरी का चित्रण इन पंक्तियों में हुआ है।

3. **"सुनिए तो, सूबेदारनी होराँ को चिट्ठी लिखो तो**

मेरा मत्था टेकना लिख देना और जब घर जाओ

तो कह देना कि मुझसे जो उसने कहा था वह

मैंने कर दिया"

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश डॉ॰ दशरथ ओझा द्वारा संपादित पुस्तक 'कहानी एकादशी' में संकलित पं. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी द्वारा लिखित कहानी 'उसने कहा था' में से लिया गया है।

व्याख्या : जर्मन के विरूद्ध जंग से लौटते हुए बोधासिंह और सूबेदार लहना को भी गाड़ी पर चढ़ने के लिए कहता है तो वह मना कर देता है। वह सूबेदार से कहता है कि जब वे सूबेदारनी को चिट्ठी लिखेंगे तो उसकी तरफ से भी मत्था टेकना लिख दे और साथ ही यह भी बता दे जो उसने कहा था वह लहना ने कर लिया है। लहना ने जो वचन सूबेदारनी को दिया था कि वह उसके पति और पुत्र की रक्षा करेगा।

विशेष : लहनसिंह की इमानदारी और त्याग की भावना का प्रदर्शन प्रस्तुत गद्यांश में हुआ है।

4. **'अब दोनों जाते हैं। मेरे भाग। तुम्हें याद है, ...पसारती हूँ।'**

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश डॉ॰ दशरथ ओझा द्वारा संपादित पुस्तक 'कहानी एकादशी' में संकलित पं॰ चन्द्रधर शर्मा गुलेरी द्वारा लिखित कहानी 'उसने कहा था' में से लिया गया है।

व्याख्या : लहना सिंह स्वप्न में है और उसे सूबेदारनी के वह शब्द याद आ रहे हैं जो उसने जंग पर जाने से पहले लहना से कहे थे कि अब तो सब कुछ उसके भाग्य पर निर्भर है क्योंकि उसका पति और पुत्र दोनों जंग पर जा रहे हैं। वह लहना को बचपन की घटना याद करवाती है कि जब उसने बिगड़े घोड़े से उसकी जान बचाई थी और स्वयं घोड़े की लातों के आगे था। वह उसी घटना को याद करवाते एक बार दोबारा उसके आगे गुहार लगाती है कि जंग के मैदान में दोनों की रक्षा करना। वह भिक्षा के रूप में उनकी सुरक्षा मांगती है।

विशेष : सूबेदारनी के रूप में एक माँ की ममता और पत्नी की चिन्ता की अभिव्यक्ति है जो कि स्वाभाविक है।

ईद का त्योहार

1. **रमज़ान के तीस.....बधाई दे रहा है।**

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश डॉ॰ दशरथ ओझा द्वारा संपादित पुस्तक 'कहानी एकादशी' में संकलित प्रेमचन्द की कहानी 'ईद का त्योहार' से लिया गया है।

व्याख्या : प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक ने रमज़ान के महीने में आने वाले रोजों के बाद आई ईद का प्राकृतिक चित्रण

किया है। ईद के दिन प्रभात भी सौन्दर्य से भरा–भरा लगता है। वृक्षों पर भी हरियाली छा जाती है। खेतों में भी रौनक दिखती है और आसमान में भी सुन्दर लालिमा दिखाई देती है। ईद के दिन का सूर्य भी मानों सबको बधाई देता है और उसकी शीतलता भी मन को भाती है।

विशेष : लेखक ने ईद के दिन का चित्रण प्राकृतिक सौन्दर्य के चित्रण के माध्यम से किया है।

2. "मिट्टी के तो है.....ले सकता।

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियाँ डॉ॰ दशरथ ओझा द्वारा संपादित पुस्तक 'कहानी एकादशी' में संकलित प्रेमचन्द की कहानी 'ईद का त्योहार' से ली गई हैं।

व्याख्या : हामिद के मित्र मेले में खिलौने खरीदते हैं परन्तु हामिद के पास इतने पैसे नहीं कि वह खिलौने खरीद सके। सभी मित्र अपने–अपने खिलौने की प्रशंसा करते हैं पर हामिद कहता है कि मिट्टी के ही तो हैं गिरेंगे तो चकनाचूर हो जाएंगे परन्तु अन्दर बाल मन उन खिलौनों को ललचाई आँखों से देख रहा है कि काश वह इन खिलौनों को हाथ में लेकर छू सकता।

विशेष : लेखक ने इन पंक्तियों में बाल मनोभावों का चित्रण किया है जो बहुत ही स्वाभाविक है।

3. हामिद लोहे की.....खिलौने से क्या फायदा!

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश डॉ॰ दशरथ ओझा द्वारा संपादित पुस्तत 'कहानी एकादशी' में संकलित प्रेमचन्द की कहानी 'ईद का त्योहार' से लिया गया है।

व्याख्या : मेले में गए बच्चों के साथ हामिद भी गया है। सभी बच्चे खिलौने खरीदने में व्यस्त हैं किन्तु हामिद के मन में कुछ और ही चल रहा है वह लोहे की एक दुकान पर रूक जाता है। वहाँ पड़े चिमटों को देखकर उसे अपनी दादी का ध्यान आया कि दादी के हाथ रोटियाँ पकाते समय जल जाते हैं क्यों न वह भी एक चिमटा ले जाकर दादी को दे दे तो उनकी उंगलियाँ भी नहीं जलेंगी। दादी चिमटे को देखकर बहुत खुश होंगी। खिलौने से कोई फायदा नहीं होने वाला इसलिए दादी के लिए चिमटा लेना ही ठीक रहेगा।

विशेष : हामिद का अपनी दादी के प्रति सोचना बाल सुलभ प्यार का चित्रण करता है कि उसे खिलौने से ज्यादा दादी के लिए चिमटा लेना ज़्यादा सही लग रहा है।

4. मैं नहीं खेलता.....खिलौने लोगे

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश डॉ॰ दशरथ ओझा द्वारा संपादित पुस्तक 'कहानी एकादशी' में संकलित प्रेमचन्द की कहानी 'ईद का त्योहार' से लिया गया है।

व्याख्या : हामिद के बालमन का चित्रण इन पंक्तियों में हुआ है। मेले में जाने पर भी वह पूरी तरह खुश नहीं था। अपने मित्रों को खिलौनों से खेलते देखकर वह सोच रहा था कि मुझे नहीं खेलना खिलौनों से।

मैं गरीब हूँ तो क्या हुआ किसी से कुछ भी माँगने तो नहीं जाता। वह अपने अब्बाजान के बारे में सोचने लगा कि कभी न कभी तो अम्मा और अब्बाजान आएंगे। तब मैं इन लोगों से पूछूँगा कि बोलों कितने खिलौने चाहिए।

विशेष : हामिद के अन्तर्मन की पीड़ा का चित्रण है कि बिना माता–पिता की संतान को किन–किन परिस्थितियों को झेलना पड़ता है।

5. यह मूक स्नेह था.....गद्‌गद हो गया।

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश डॉ॰ दशरथ ओझा द्वारा संपादित पुस्तक 'कहानी एकादशी' में संकलित प्रेमचन्द की कहानी 'ईद का त्योहार' से ली गई हैं।

व्याख्या : हामिद की दादी उस पर नाराज़ होती है कि न इस लड़के ने कुछ खाया न पिया और मेले से एक लोहे का चिमटा उठा लाया। दादी का क्रोध बढ़ने लगा तो हामिद कहता है कि वह यह चिमटा उसके लिए लाया है ताकि उसकी उंगलियाँ न जल जायें तो दादी का क्रोध स्नेह में बदल जाता है और वह शब्दों में भी उसे व्यक्त नहीं कर पाती क्योंकि यह उसका अपने पोते के प्रति मूक स्नेह था जो खूब रस और स्वाद से भरा था। दादी सोचने लगी कि दूसरे बच्चों को खिलौने लेते देख इसका मन ललचाया होगा परन्तु इसे वहाँ भी दादी की याद रही। यह सोच–सोच कर उसका मन गद्‌गद हो गया अर्थात वह प्रसन्न थी कि हामिद मेले में जाकर भी अपने लिए न सोचकर अपनी दादी के लिए चिंतित था।

विशेष : दादी की प्रसन्नता का चित्रण है क्योंकि हामिद मेले से उसके लिए चिमटा लाया है ताकि रोटियाँ सेंकते समय उसकी उँगलियाँ न जलें।

पढ़ाई

1. माँ इससे बड़ी असन्तुष्ट है.....कैसे चले।

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियाँ डॉ॰ दशरथ ओझा द्वारा संपादित पुस्तक 'कहानी एकादशी' में संकलित जैनेन्द्र कुमार की कहानी 'पढ़ाई' से ली गई हैं। प्रस्तुत पंक्तियों में सुनयना की माँ सुनन्दा की चिन्ता अभिव्यक्त हुई है कि लड़की बिगड़ जाएगी तो कौन सँभालेगा।

व्याख्या : लेखक जैनेन्द्र कुमार सुनन्दा की चिंता का वर्णन करते हैं कि किस तरह वह अपनी बेटी सुनयना से असंतुष्ट है। उसकी चिंता का सबसे बड़ा कारण है कि एक तो वह लड़की है और वह ऐसे बिगड़ रही है। बिगड़ जाएगी तो कौन संभालेगा तब भी उनके सिर पर ही पड़ेगी। सुनन्दा चाहती है कि सुनयना अब अदब सीखे और सबका कहना माने।

विशेष : सुनन्दा का मन चिन्ताग्रस्त है कि उसकी बेटी अब छः बरस की हो गई इसलिए वह अदब सीखे क्योंकि यदि लड़की बिगड़ गई तो उसे माता के अतिरिक्त कौन संभालेगा। इसी बात को लेकर उसकी अपनी ननद के

साथ कहा सुनी हो जाती है।

2. माँ तो माँ है, पर लड़की तो .....बड़े प्यार से पाला है।

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियाँ डॉ॰ दशरथ ओझा द्वारा संपादित पुस्तक 'कहानी एकादशी' में संकलित जैनेन्द्र कुमार की कहानी 'पढ़ाई' से ली गई हैं। कहानी की पात्र सुनन्दा की चिन्ता का वर्णन है कि किस तरह लड़की की माँ होने के कारण वह समाज में प्रचलित मानदंडों से परेशान है।

व्याख्या : जैनेन्द्र एक माँ की चिन्ता का वर्णन करते हैं कि किस तरह एक लड़की की माँ होना चिन्ता का विषय बन जाता है। माँ तो माँ बनी रहेगी परन्तु लड़की सदा लड़की नहीं रहेगी। माँ के मन को यही बातें दर्द दे रही हैं। आज तो लड़की है परन्तु एक कल भी आने वाला है जो सबसे बड़ी चुनौती है कि जब उसका ब्याह होगा और लोग पूछेंगे कि कितना पढ़ी है तब यह कहना मुश्किल होगा कि उन्होंने अपनी बेटी को बड़े लाड प्यार से पाला है अर्थात् उस समय उसकी पढ़ाई, उसके ज्ञान और उसकी सीख के बारे में पूछेंगे।

विशेष : समाज में लड़की की इज्जत और मान तभी है जब कि वह पढ़–लिख कर समझदार हो जाए अन्यथा समाज उसे स्वीकार नहीं करता इसका चित्रण प्रस्तुत पंक्तियों में हुआ है।

छोटा जादूगर

"तमाशा देखने नहीं.....प्रसन्नता होती।

प्रसंग : प्रस्तुत गद्यांश डॉ॰ दशरथ ओझा द्वारा संपादित पुस्तक 'कहानी एकादशी में संकलित जयशंकर प्रसाद की कहानी 'छोटा जादूगर' से लिया गया है।

व्याख्या : कार्निवल में मिले छोटे लड़के से बातचीत में लेखक को पता चलता है कि वह तमाशा देखने नहीं दिखाने निकला है । इन पंक्तियों से उस लड़के की मार्मिक स्थिति की अभिव्यक्ति हुई है। वह लेखक को बताता है कि तमाशा दिखाने से उसे कुछ पैसे मिलेंगे तो वह अपनी बीमार माँ का इलाज करवा सकेगा। इसलिए वह लेखक से कहता है कि आपने शरबत न पिलाकर यदि मेरा खेल देखकर मुझे कुछ पैसे दिए होते तो मुझे अधिक प्रसन्नता होती। इन पंक्तियों में छोटे लड़के की दयनीय स्थिति का वर्णन है कि आर्थिक विपन्नता ने उसकी ज़रूरतों और सोच को बदल दिया है।

विशेष : आर्थिक अभाव से ग्रस्त छोटे लड़के की मानसिक स्थिति का चित्रण किया गया है।

"माँ ने कहा है कि आज तुरन्त चले आना। मेरी घड़ी समीप है।"

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियाँ डॉ॰ दशरथ ओझा द्वारा संपादित पुस्तक 'कहानी एकादशी' में संकलित जयशंकर प्रसाद की कहानी 'छोटा जादूगर' से ली गई हैं।

व्याख्या : छोटा लड़का सड़क के किनारे अपना जादू दिखा रहा था परन्तु आज उसके जादू में वह जोश नहीं

था। लेखक उसे पूछता है कि आज तुम्हारा खेल जमा नहीं तो लड़के के शब्द एक बालक की पीड़ादायक स्थिति को व्यक्त करते हैं जब वह कहता है कि माँ ने कहा था कि जल्दी आ जाना मेरी घड़ी समीप है अर्थात् बीमार माँ का अन्तिम समय करीब था इसलिए वह उसे जल्दी लौट आने के लिए कहती है।

विशेष : पंक्तियों में माँ की विवशता और छोटे लड़के की मानसिक पीड़ा का चित्रण है।

प्रायश्चित

1. राम की बहू पर खून.....उसे देख रही है

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियाँ सम्पादक डॉ॰ दशरथ ओझा द्वारा संपादित पुस्तक 'कहानी एकादशी' में संकलित भगवती चरण वर्मा की कहानी 'प्रायश्चित' से ली गई हैं। इस कहानी में कहानीकार ने भारतीय समाज में फैले अंधविश्वास का चित्रण किया है।

व्याख्या : रामू की बहू बिल्ली को फंसाने के लिए बड़े यत्न करती है और उसके लिए बढ़िया भोजन रखती है परन्तु बिल्ली उसकी पकड़ में नहीं आती। वह बिल्ली की हरकतों से तंग आ जाती है। एक दिन तो वह बुरी तंग आ जाती है जब बिल्ली कटोरे को फेंक कर उसकी रखी खीर को चट कर जाती है। अब राम की बहू के गुस्से की सीमा खत्म हो चुकी थी और वह बिल्ली को मारने के लिए कमर कसकर तैयार हो चुकी थी। वह सोच में पड़ गई कि कबरी पर किस तरह से वार किया जाए कि वह ज़िन्दा न बचे। इसी स्थिति का चित्रण इन पंक्तियों में हुआ है।

विशेष : कहानी में बिल्ली से तंग पड़ी रामू की बहू की स्थिति का चित्रण है किस तरह वह बिल्ली को मारने की योजनाएँ तैयार करने लगती है।

2. "माँजी, बिल्ली की हत्या.....हत्या रहेगी।"

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियाँ सम्पादक डॉ॰ दशरथ ओझा द्वारा संपादित पुस्तक 'कहानी एकादशी' में संकलित भगवतीचरण वर्मा की कहानी 'प्रायश्चित' से ली गई हैं। समाज में किस तरह के अंधविश्वास फैले हैं उन्हीं का चित्रण इन पंक्तियों में हुआ है।

व्याख्या : बिल्ली पर आई खीज के कारण रामू की बहू बिल्ली को मार चुकी थी परन्तु समाज में फैले अंधविश्वास के कारण उस पर बिल्ली की हत्या का आरोप लग रहा था। बिल्ली को मार देने पर मिसरानी कहती हैं कि बिल्ली की हत्या और आदमी की हत्या एक बराबर है। वह कहती है कि वह तब तक रसोई नहीं बनाएगी जब तक रामू की बहू के सिर पर बिल्ली की हत्या का इलज़ाम रहेगा।

विशेष : अंधविश्वास के कारण किस तरह हम अपने जीवन को बंधनों में जकड़ देते हैं उसी का चित्रण इन पंक्तियों में हुआ है।

3. **"पण्डित परमसुख ने पन्ने के पन्ने उलटे.....विधान।"**

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियाँ डॉ॰ दशरथ ओझा द्वारा संपादित पुस्तक 'कहानी एकादशी' में संकलित भगवतीचरण वर्मा की कहानी 'प्रायश्चित' में से ली गई हैं। इन पंक्तियों में पण्डा–पण्डितों पर किए जाने वाले अंधविश्वास का व्यंग्यपूर्ण चित्रण हुआ है।

व्याख्या : रामू की बहू ने बिल्ली की हत्या की है इसलिए उसकी सास पण्डित जी को बुलवाती है ताकि बहू के सिर से पाप को उतारा जाए। पण्डित जी पूछने पर बताते हैं कि अकेले बिल्ली की हत्या से नरक का नाम नहीं बतलाया जा सकता क्योंकि जब तक महूरत मालूम न हो तब तक नरक का पता नहीं लग सकता है। मिसरानी के बताने पर कि सुबह सात बजे बिल्ली की हत्या हुई है तो पण्डित ने पन्ने के पन्ने उलटे और कुछ सोचने लगे और बड़े गम्भीर स्वर में बोलने लगे कि प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त में बिल्ली की हत्या ये तो बहुत बुरा हुआ। कुम्भी पाक नरक मिलेगा।

विशेष : इन पंक्तियों में पण्डितों पर किए जाने वाले अंधविश्वास का चित्रण है।

आदमी का बच्चा

1. **लड़की उधर जाती तो उन बेहूदे.....जाने का।**

प्रसंग : ये पंक्तियाँ संपादक डॉ॰ दशरथ ओझा द्वारा सम्पादित पुस्तक 'कहानी एकादशी' में संकलित कहानी 'आदमी का बच्चा' से ली गई हैं।

व्याख्या : अभिजात–वर्ग के अन्तर्मन में फैले डर का चित्रण इन पंक्तियों में करते हुए लेखक ने स्पष्ट किया है कि किस तरह मिसेज़ बग्गा के मन में डर है कि उनकी बेटी डोली माली या धोबी के बच्चों के साथ खेलेगी तो बिगड़ जाएगी परन्तु शिशु मन इस अन्तर को नहीं जानता इसीलिए डोली का आकर्षण माली के घर जन्में नए बच्चे की तरफ है। माँ को यह डर है कि लड़की उधर जाएगी तो उन बेहूदे बच्चों के साथ धूल से उठा–उठाकर शहतूत खाएगी। सबसे बड़ा डर उसके मन में यह था कि उन बच्चों के साथ खेलेगी तो उसकी आदतें बिगड़ जाएंगी।

विशेष : गरीबों के बच्चों के प्रति अभिजात–वर्ग के मन में किस–किस तरह के डर पनपते हैं उसी का चित्रण इन पंक्तियों में हुआ है।

2. **जीवन से सन्तुष्ट हैं परन्तु.....किए हैं।**

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियाँ डॉ॰ दशरथ ओझा द्वारा संपादित पुस्तक 'कहानी एकादशी' में संकलित यशपाल की कहानी 'आदमी का बच्चा' से ली गई हैं। इन पंक्तियों में बग्गा साहब के चरित्र को उद्‌धाटित किया गया है।

व्याख्या : बग्गा साहब का चरित्र आदर्श चरित्र है और अपने जीवन से वे पूर्ण रूप से संतुष्ट हैं लेकिन अपने कर्तव्य से बेपरवाह बिल्कुल नहीं हैं। उनकी एक ही बेटी है जिसका नाम डोली है। डोली के बाद उनके कोई सन्तान नहीं हुई । अपनी इकलौती सन्तान के प्रति अपना पूरा कर्त्तव्य निभाने के कारण वे पूर्ण रुप से संतुष्ट हैं ।

बग्गा साहब के जीवन में संतान के प्रति अपना कर्त्तव्य निभाना सबसे उंचा आदर्श है । उनके चरित्र की सबसे बड़ी विशेषता है कि वे डोली को ही बेटी आरै बेटा दोंनों मानकर संतोष किए हुए हैं अर्थात उनके लिए बेटी और बेटे में कोई अंतर नहीं ।

विशेष : बग्गा साहब की चरित्रिक विशेषताओं को प्रस्तुत पंक्तियों में पूर्ण रुप से वर्णित किया है ।

दारोग़ा अमीरचन्द

1. मैं हज़ारा जेल में नया–नया आया था.....मुझे निराश नहीं होना पड़ा।

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियाँ संपादक डॉ॰ दशरथ ओझा द्वारा सम्पादित पुस्तक 'कहानी एकादशी' में संकलित अज्ञेय की कहानी 'दारोग़ा अमीरचन्द' में से ली गई हैं। अकाली सियासियों द्वारा दारोग़ा अमीरचन्द के दबदबे को खत्म करने की घटना का वर्णन कहानी में कई मोड़ों के रूप में प्रस्तुत है।

व्याख्या : लेखक इन पंक्तियों में बी क्लास के कैदियों की स्थिति का वर्णन करता है। हरिपुर हज़ारा जेल का सी क्लास का कैदी अपनी स्थिति को स्पष्ट करता है कि वह लाहौर की जेल में बी क्लास कैदी था। वहाँ सूने जीवन से वह मायूस था। जबकि वहाँ सुविधाएं अधिक थीं। इस सूने वातावरण के कारण ही उसने उस जेल में झगड़ा किया था ताकि उस माहौल से निकल सके। वह अपने इरादे में कामयाब भी रहा। वहाँ हज़ारा जेल में तरह–तरह के कैदी थे। कई तरह के रंग उस जेल में उपस्थित थे अर्थात् उसे वह सब मिल गया था जो वह चाहता था।

विशेष : जेल के कैदियों के जीवन का चित्रण इन पंक्तियों में हुआ है कि वे भी जीवन में अलग रंगों की तलाश में रहते हैं।

2. "तुम लोगों की दरख़ास्त पर.....मोड़ दिया।"

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियाँ संपादक डॉ॰ दशरथ ओझा द्वारा सम्पादित पुस्तक 'कहानी एकादशी' में संकलित अज्ञेय की कहानी 'दारोग़ा अमीरचन्द' में से ली गई हैं। दारोग़ा अमीरचन्द द्वारा कैदियों के सामने अपनी मूँछे नीचे करने की घटना का वर्णन है।

व्याख्या : अकालियों के द्वारा अपनी मांगे मनवाने पर भी जब दारोगा नहीं मानता तो वे उसके दबदबे को कुचलने के लिए एक चाल चलते हैं और उससे कहते हैं कि वह उनके सामने अपनी मूँछे नीची कर ले तो दारोग़ा रात–भर सोच लेने के बाद अगले दिन सुबह ही बैरक में आ जाता है। उन अकालियों को समझाता हुआ कहता है कि आखिर उन्हें साथ–साथ रहना है। कभी उनका पलड़ा भारी हो जाता है तो कभी उसका। ये तो चलता ही रहेगा कि कभी आपने हमें दबा लिया कभी हमने आपको, कभी हमने तुम्हारी गर्दन नाप ली, कभी हमने तुम्हारे सामने अपनी मूँछे नीची कर लीं। इतना कहते ही दरोग़ा ने अपनी मूँछे हाथ से मसल कर नीचे कर लीं।

विशेष : दारोगा की हास्यास्पद स्थिति का वर्णन इन पंक्तियों में हुआ है।

वैवाहिक सम्बन्धों के बदलते मूल्य और 'आपका बंटी'

3.0 रूपरेखा

3.1 उद्देश्य

3.2 प्रस्तावना

3.3 वैवाहिक संबंधों के बदलते मूल्य

3.4 सारांश

3.5 कठिन शब्द

3.6 अभ्यासार्थ प्रश्न

3.7 सन्दर्भग्रन्थ / पुस्तकें

3.1 **उद्देश्य** : प्रस्तुत आलेख के अध्ययनोपरान्त आप

– पारिवारिक विसंगति के शिकार पति पत्नी एवं पुत्र का लेखिका ने जो मनोवैज्ञानिक और यथार्थवादी चित्रण किया है उससे अवगत हो सकेंगे।

– वैवाहिक संबधों के बदलते मूल्यों को जान सकेंगे।

– भारतीय संस्कृति और आधुनिक बदलाव के द्वन्द्व से उत्पन्न प्रभाव को जान सकेंगे।

3.2 प्रस्तावना

'आपका बंटी' उपन्यास मन्नू भंडारी का स्वतन्त्र रूप से लिखा गया उपन्यास है। इस उपन्यास में पारिवारिक विसंगति के शिकार पति–पत्नी के एक मात्र पुत्र बंटी को केन्द्र बनाकर उसके समूचे मानसिक संसार का मनोवैज्ञानिक और याथार्थवादी चित्रण किया गया है। सामाजिक परिवेश में मम्मी और पापा के सम्बन्ध उसके जीवन को किसी अनायास तनाव से बुन देते हैं।

ममी और पापा का अलगाव बंटी के लिए एक गहरे दर्द का कारण है। यह उपन्यास आज के सामाजिक और द्वन्द्वात्मक परिवेश में जहाँ आधुनिक पति–पत्नी, ममी–पापा होकर भी अपने स्वतन्त्र अस्तित्व और अर्थवान होने की

सार्थकता के कारण, एक अन्तहीन विसंगति में यातना का सामना करते हैं।

'आपका बंटी' उपन्यास अपनी समग्रता में भी, कमोवेश दो भागों में विभाजित हैं– एक पति–पत्नी के प्रेम और विवाह तथा उसके उपरान्त 'एडजस्मेंट' की समस्या। दूसरे उनके माता–पिता के रूप में बच्चे की उनके पृथक् होने के कारण मनोवैज्ञानिक 'एडजस्मेंट' की समस्या। इस समस्या का कारण खोजने के लिए आधुनिकता और समकालीन परिवेश के बीच सतत विरोध की स्थिति उत्तरदायी है।

3.3 वैवाहिक सबंधों के बदलते मूल्य :

'आपका बंटी' में ममी और पापा अपनी–अपनी स्वतन्त्रता की अपनी–अपनी अवधारणा के कारण एक–दूसरे से निर्वाह नहीं कर पाते। यह अनुभवहीन पारिवारिक जीवन की वास्तविकता और आधुनिक वातावरण में पल रही मानसिकता के कारण हुआ है। विवाह पूर्व की उन्मुक्त मानसिकता में नारी और पुरूष दोनों ही दायित्वपूर्ण बन्धन को निभा नहीं पाते। पुरूष आदिम शक्ति में विश्वास रखते हुए मध्ययुगीन संस्कारों से ग्रस्त रहता है और नारी आधुनिकता को फैशन मानकर उच्छृंखलता की सीमा तक चली जाती हैं। उसका दृष्टिकोण अंहवादी है और वह भी मानसिक रूप से किसी भी तरह अपने पारिवारिक जीवन में 'एडजस्टमेंट' नहीं कर पाती। इस तरह निरन्तर दोनों में एक–दूसरे को नीचा दिखाने और संघर्ष की स्थिति बनी रहती हैं। किन्तु जब वे दोनों एक नये पारिवारिक जीवन में संलग्न होते हैं तो उसका वह जीवन कमोवेश निर्वाह की हद तक पहुँच जाता है। अजय की नयी पत्नी मीरा उससे 'एडजस्ट' करती है। वहीं शकुन भी डॉ॰ जोशी से 'एडजस्मेंट' करने लगती है। इस तरह नारी का कुछ सीमा तक झुकना और समर्पित होना उपन्यासकार को भी स्वीकार है। किन्तु अजय और शकुन का 'एडजस्ट न कर पाना ही उपन्यास की रचना का केन्द्रबिन्दु है।

वस्तुत : मध्यमवर्गीय बुद्धिजीवी परिवारों की विसंगतियों को लेकर उपन्यास का कथानक निर्मित हुआ है। इन परिवारों का आधार भारतीय होकर भी उनका रूपान्तरण पश्चिमी हो चुका है। इस प्रकार पुराने मूल्यों के विघटन और नये मूल्यों के अभाव के कारण एक जटिल स्थिति निर्मित हो गई हैं।

इनका बेटा बंटी, पापा के अभाव और ममी के विशेष अनुराग के बीच संवेदनात्मक त्रासदी भोगता है। बंटी सम्पूर्ण भौतिक सुखों के बीच भी मानसिक त्रासदी से त्रस्त है। वह न तो नये पापा को स्वीकार कर सकता है और न नयी ममी को, क्योंकि ये पापा और ममी उसके नहीं है। इस प्रकार पति–पत्नी का पारिवारिक अन्तर्विरोध बंटी के जीवन की त्रासदी बन जाता है। इस त्रासदी का पहलू यथार्थवादी है। जहाँ शकुन और अजय एक नया परिवार खोज सकते हैं वहाँ बंटी इसलिए 'एडजस्ट' नहीं हो सकता है कि उसका व्यक्तित्व विभाजित हो जाता है। बंटी के प्रति ममी का अनुराग भी शकुन को अजय का 'चेलेंज' स्वीकार करने से नहीं रोक पाता। जब एक पुरूष दूसरी नारी को अपना बनाकर उसे तलाक दे सकता है तो नारी भी ऐसा क्यों नहीं कर सकती? इसका कारण यही है कि जहाँ पश्चिम में माता–पिता के अपने सन्तान से सम्बन्ध अत्यन्त यान्त्रिक रहते हैं वहाँ भारत में यह नहीं हो पाता। ममी और पापा का एक बालक के प्रति भी स्नेह है और दूसरी ओर वे विदेशी संस्कृति का अनुकरण भी करते हैं।

'बंटी' अतिरिक्त संवेदनशील होने के कारण 'एब्नार्मल' है और वास्तव में उसकी समस्या ही प्रमुख है।

उपन्यासकार ने दाम्पत्य विसंगति को माध्यम मानकर इस परिस्थिति में बालक के मनोविज्ञान को ही अपनी रचना का केन्द्र बनाया है।

बंटी, शकुन और अजय का पुत्र है। शकुन और अजय दो ऐसे नाम हैं जो इस तरह के किसी भी नारी और पुरुष के नाम हो सकते हैं। वह बंटी उनका पुत्र है और हम सबका पुत्र भी हो सकता है। इस प्रकार यह समस्या आधुनिक भारतीय परिवारों की ही नहीं, सम्पूर्ण मानव जाति की पारिवारिक विसंगतियों से उत्पन्न बाल–जीवन की समस्या है जो ऐसे बालकों के ममी और पापा की अपेक्षा उनकी अपनी ही समस्या अधिक है।

इन समस्या के प्रमुख रूप में दो पक्ष हैं– सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक, इस तरह के समाज में यह समस्या एक 'नार्मल' रुटीन न रहकर मनुष्य की रागात्मक चेतना का स्पर्श कर लेती है, क्योंकि यह समस्या सामाजिक होते हुए भी मनोवैज्ञानिक अधिक है। यह आवश्यक नहीं कि सभी बच्चे बंटी की तरह हों। पर सब स्त्रियाँ न शकुन हो सकती है और न सभी पुरूष अजय। इस तरह बंटी 'एबनॉर्मल' है यह प्रश्न प्रासंगिक नहीं है। प्रासंगिकता का वास्तविक सन्दर्भ यह है कि पारिवारिक विसंगतियाँ ही वैयक्तिक बिखराव का आधार बनती हैं। तभी तो डॉ॰ जोशी के घर में अपने साथ भिन्न व्यवहार के कारण बंटी एक गहरी वेदना से गुजरता है। 'नार्मल' परिवारों में व्यवहार की यह भिन्नता तो मिलती है पर उसकी चेतना के अभाव के कारण अहसास की इतनी तीव्र अभिव्यंजना नहीं हो पाती।

बंटी आत्मनिर्भर नहीं हो पाता और उसकी प्रवृत्ति विगतावस्था से चिपके रहने की हो जाती है। बंटी भी अपने विकास के साथ माँ पर ही निर्भर रहता है। उपन्यास में अनेक बार पात्रों ने उसके स्वतन्त्र विकास के लिए एक मनुष्य के रूप में बड़े होने हेतु अवसर देने की स्थिति को स्वीकार किया है जिनमें वकील चाचा प्रमुख हैं। स्वप्न तो 'आपका बंटी' उपन्यास में एक व्यापक तकनीक के रूप में प्रयुक्त किया गया है। स्वप्न वास्तव में दमित वासनाओं की पूर्ति का ही माध्यम है। सुषुप्ति की अवस्था में ये दमित वासनाएँ अपना रूप परिवर्तन कर चेतन के क्षेत्र में प्रवेश करने लगती हैं। बंटी स्वप्न में अनेक घटनाओं की कल्पना करता है। यहाँ तक कि वह स्वप्न तक देखता है। इस प्रकार 'आपका बंटी' उपन्यास का बंटी पारिवारिक विसंगति के बीच पल रहे एक यातनाग्रस्त बालक के अन्तर्मन की गहराई तक जाने का प्रयास किया है।

बंटी हीनता–ग्रन्थि का शिकार भी है। वस्तुतः यह ग्रन्थि उसके मन में डॉ॰ जोशी के घर निर्मित होती है जहाँ वह बस के 'क्यू' में खड़ा रहता है और परिवार के दूसरे बच्चे कार में स्कूल जाते हैं। प्रसिद्ध मनोविश्लेषक युग के अनुसार मनुष्य दो प्रकार का होता है– बहिर्मुखी और अन्तर्मुखी। वस्तुतः बंटी में दोनों प्रकार की भावनाएँ हैं। एक ओर वह आन्तरिक संवेदना से ग्रस्त है और वह असामाजिक अधिक दृष्टिगत होता है, क्योंकि उसकी प्रवृत्ति एकांतिक है। वहीं दूसरी ओर वह बहिर्मुखी भी है, क्योंकि वह स्थितियों को उसी रूप में स्वीकार न कर उसके प्रति विद्रोह भी करता है। इस प्रकार बंटी जो उपन्यास का केन्द्र है, अपनी समस्त मूल प्रवृत्तियों में अपने ही एक काल्पनिक संसार की रचना करता है।

इस उपन्यास का एक सामाजिक पक्ष भी है। क्या अपने बालक को विशेष परिवेश देने के लिए उसके माता–पिता अपना 'एडजस्टमैंट' करें और अपनी उस स्वाधीनता को छोड़ दें जिसके दबाव में वे अलग होने को बाध्य हो रहे हैं? तब भारतीय जीवन में तलाक की क्या प्रासंगिकता रह जाती है। यदि तलाक अप्रासंगिक है तो आधुनिक

बदले हुए जीवन में सन्तुलन की स्थापना हर स्थिति में किस प्रकार सम्भव हो सकती है। यही सामाजिक प्रतिबद्धता की अपेक्षा नारी पुरुष की पारिवारिक व्यवस्था का प्रश्न भी महत्त्वपूर्ण हो जाता है। भारतीय परिवारों में नारी की पुरुष में समानता व्यावहारिक रूप में अभी भी यथार्थ नहीं हैं और हम पुरानी परम्पराओं एवं रूढ़िवादी आदर्शों से चिपके हुए हैं। इसलिए बंटी की समस्या सामाजिक परिवेश की उतनी नहीं जितनी आधुनिक मानसिकता की समस्या है, किन्तु हमारी मानसिकता का कारण क्या हमारा सामाजिक परिवेश नहीं है? बंटी को 'होस्टल' में भेजने का निर्णय क्या यह सिद्ध नहीं करता कि आज के माता–पिता अपने बच्चों के पारिवारिक दायित्व से बचना चाहते हैं? लेकिन मुक्त समाज की ओर अग्रसर नारी–पुरुष इसका कोई समाधान नहीं खोज सकते।

आधुनिक मध्यमवर्गीय बुद्धिजीवी एकल परिवारों की परिस्थितियों के माध्यम से बंटी को केन्द्र बनाकर प्रेम और विवाह से अलग एक नयी समस्या की ओर जो बालकों की समस्या है, 'आपका बंटी' उपन्यास में उभारा गया है। यह आधुनिक जीवन की यथार्थवादी समस्या है जिसका सामना करने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। सम्पूर्ण उपन्यास में एक 'फेंटेसी' का तनाव बुना गया है जो भीतरी अधिक लगता है। पर वह अन्त में बाहरी बन जाती है। जिस समाज में सभी स्वाधीन होकर पारस्परिकता के बन्धन को समाप्त कर चुके हों और अपनी ही समस्या से ग्रस्त हों वहाँ परिवार का त्रिभुज बिखर जाता है। जब पति–पत्नी अपने पहले परिवेश से अलग एक नये परिवेश में हों तो उनके अपने परिवार का बंटी, परिवारहीन हो जाता है और वह अकेले ही सामाजिक यथार्थ का सामना करने को अभिशप्त होता है।

'आपका बंटी' की रचना–प्रक्रिया में वे सभी तत्व समा गए है जो भारतीय संस्कृति और आधुनिक बदलाव के द्वन्द्व से उत्पन्न हुए हैं। उपन्यासकार भी एक नारी है और वास्तव में भारतीय परिवेश में बालक के साथ दूसरी समस्या उस नारी की ही होती है। इस कारण बंटी की समस्या शकुन की भी समस्या बन जाती है। शकुन एक कामकाजी महिला है और आर्थिक रूप से स्वतन्त्र। आत्मनिर्भर नारी ही अपने व्यक्तिगत और अस्तित्व के प्रति चेतन रह सकती है। शकुन का अतिरिक्त अहंवाद इसलिए मुखर हुआ है कि अजय भी उससे अधिक अहंवादी है जिसे वह प्रबुद्ध और कामकाजी होने के कारण सहन नहीं करती। शकुन डॉ॰ जोशी से इसलिए एडजस्ट रहती है कि डॉ॰ जोशी कहीं भी उसके क्रियाकलापों में नारी के अहंवाद की भी एक सीमा होती है। शायद शकुन और अजय उन्मुक्त नारी और पुरुष नहीं थे। अजय का अहंवाद उसे ऐसी नारी के साथ एडजस्ट करा सकता था जो अधिक प्रबुद्ध और कामकाजी न हो और इस रूप में उसे मीरा मिलती है। शकुन के लिए डॉ॰ जोशी इसलिए उपयुक्त है कि वह उसे संगिनी भाव से ग्रहण करता है जिसमें समानता का आंशिकभाव तो निश्चित ही है। अजय बंटी को होस्टल भेजता है और इस सम्बन्ध में आर्थिक अभाव की मीरा की चिन्ता की भी परवाह नहीं करता। वह अपने पुत्र से 'अटेच' है किन्तु उसका दृष्टिकोण शकुन से भिन्न है। शकुन का 'अटेचमेंट' बंटी को व्यक्तित्वहीन बना देता है। जहाँ बंटी अपने स्वतन्त्र अस्तित्व की कल्पना भी नहीं कर सकता। उपन्यासकार ने नारी होते हुए भी इस तथ्य को स्वीकार किया है कि सामाजिक दृष्टि से नारी और पुरुष के दृष्टिकोण में बुनियादी अन्तर होता है।

3.4 सारांश

इन सभी आयामों में 'आपका बंटी' उपन्यास एक यथार्थवादी प्रयोगशील रचना है। लेखिका ने मनोविज्ञान या समाजशास्त्र के सिद्धान्तों का अनुकरण नहीं किया है बल्कि अपनी सृजनशील संवेदना के माध्यम से पारिवारिक जीवन

की उन गहराइयों तक घुसपैठ की है जहाँ मनोविज्ञान और समाजशास्त्र नहीं जा सकते। हिन्दी उपन्यासों में बालक को केन्द्र बनाकर पारिवारिक परिवेश में उसकी जीवन यात्रा के चित्रण की दृष्टि से यह उपन्यास अद्वितीय स्थान रखता है। आधुनिक जो विज्ञान की निर्मिति है, में बदले हुए जीवन–संबन्धों के बीच मनुष्य की खोखली रागात्मकता और उसमें भटकी एक अतिरिक्त संवेदना इन सभी प्रतीकों के बीच से उस बंटी का बिम्ब गुजरता है जो एक परिवार का होते हुए भी आपका बन जाता है।

3.5 कठिन शब्द

1) विसंगति

2) अस्तित्व

3) उच्छृंखलता

4) यान्त्रिक

5) अभिव्यंजना

6) सृजनशील

7) रागात्मकता

3.6 अभ्यासार्थ प्रश्न

प्र॰1. 'आपका बंटी' में वैवाहिक संबंधों के बदलते मूल्यों पर प्रकाश डालें?

.....

.....

.....

प्र॰2. बंटी को केन्द्र बनाकर उसके समूचे मानसिक संसार का जो मनोवैज्ञानिक और यथार्थवादी चित्रण लेखिका ने किया है, इस पर अपने विचार व्यक्त करें?

.....

.....

.....

प्र.3. आपका बंटी के संदर्भ में भारतीय संस्कृति और आधुनिक बदलाव के द्वन्द्व से उत्पन्न प्रभाव पर रोशनी डालें?

.....

.....

.....

प्र.4. मन्नू भंडारी पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखें?

.....

.....

.....

3.7 सन्दर्भग्रन्थ पुस्तकें

1) मन्नू भंडारी : आपका बंटी, राधाकृष्ण प्रकाशन।

2) दशरथ ओझा : कहानी एकादशी (कहानी संग्रह), शिक्षा भारती, कश्मीरी गेट, दिल्ली।

3) डॉ. वंशीधर, डॉ. राजेन्द्र मिश्र : मन्नू भंडारी का श्रेष्ठ सर्जनात्मक साहित्य, नटराज पब्लिशिंग हाउस, हरियाणा।

4) नन्दिनी मिश्रा : मन्नू भंडारी का उपन्यास साहित्य।

5) डॉ. शशि जेकब : महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में वैचारिकता।

6) डॉ. सुखबीर सिंह : हिन्दी कहानी : समकालीन परिदृश्य : अभिव्यंजना प्रकाशक, नई दिल्ली।

7) डॉ. रघुवरदयाल वार्ष्णेय : हिन्दी कहानी : बदलते प्रतिमान : पांडुलिपि प्रकाशन दिल्ली।

8) डॉ. कान्ता मेहदीरत्ता : हिन्दी कहानी का मूल्यांकन : राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।

'आपका बंटी' की शिल्पगत विशेषताएं

4.0 रूपरेखा

4.1 उद्देश्य

4.2 प्रस्तावना

4.3 'आपका बंटी' की शिल्पगत विशेषताएँ

4.4 सारांश

4.5 कठिन शब्द

4.6 अभ्यासार्थ प्रश्न

4.7 सन्दर्भग्रन्थ / पुस्तकें

4.1 **उद्देश्य** : प्रस्तुत आलेख के अध्ययनोपरान्त आप

– शिल्प की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

– 'आपका बंटी' की शिल्पगत विशेषताएँ जान सकेंगे।

4.2 **प्रस्तावना** : 'शिल्प' का शाब्दिक अर्थ निर्माण अथवा गढ़न के तत्व है। हिन्दी में शिल्प, शिल्प विधि, शिल्प विधान आदि शब्दों का प्रयोग, समानार्थी रूप में प्रयुक्त होता है। 'शिल्प' शब्द अंग्रेजी के 'टेकनीक' (Technique) का हिन्दी पर्याय है। किसी भी कृति में शिल्प का बड़ा महत्व है। शिल्प किसी रचना के कौशलपूर्ण निर्माण की एक प्रक्रिया है। शिल्प की दृष्टि से किसी भी कृति के मूल्यांकन के लिए शिल्प के अंतर्गत छः बिन्दुओं की चर्चा की जाती है जैसे : कथावस्तु, चरित्र चित्रण, संवाद, देशकाल, भाषा शैली, उद्देश्य। हिन्दी साहित्य के विभिन्न विद्वानों ने शिल्प को अपने–अपने दृष्टिकोण से परिभाषित किया है जैसे जैनेन्द्र कुमार के अनुसार 'टेकनीक ढाँचे के नियमों का नाम है। पर ढाँचे की उपयोगिता इसी में है कि वह सजीव मनुष्य के जीवन में काम आए। वैसे ही टेकनीक साहित्य सृजन में योग के लिए है। डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के अनुसार ''शिल्पविधि कला के विभिन्न तत्वों तथा उपकरण की योजना का वह विधान, वह ढंग है जिससे कलाकार की अनुभूति अमूर्त से मूर्त हो जाए।'' इस प्रकार किसी रचना का शिल्पविधान साहित्यकार की अनुभूति, प्रतिभा एवं सृजनशील कल्पना का परिणाम होता है। मन्नू भण्डारी कृत 'अपाका बंटी'

मनोविश्लेषणवादी उपन्यास है। इसका शिल्प सहज एवं सपाट है। इसमें कथानक घटनाओं की अपेक्षा विचारों में चलता है।

4.3 'आपका बंटी' की शिल्पगत विशेषताएँ

'आपका बंटी' उपन्यास का शिल्प सहज और सपाट है। उसमें विश्लेषण और संवाद दोनों माध्यमों से कथानक का विकास किया गया है। उपन्यासकार ने अधिकतर एकालाप शैली का प्रयोग ही किया है, जिसमें बंटी अपनी मनोग्रन्थियों के भीतर आन्तरिक जीवन की यात्रा से गुजरता है। बहुत सारी भावनाएँ और प्रतिक्रियाएँ उसके अवचेतन में ही पनपती रहती हैं। इसी प्रकार उसकी ममी भी अकेले ही यातनाओं का भार ढोती हैं।

इस उपन्यास का शिल्प अधिक प्रवाहशील नहीं है, क्योंकि कथानक घटनाओं में नहीं, विचारों में चलता है। मनोवैज्ञानिक उपन्यासों में यह स्वाभाविक ही है। घटनाएँ तो किसी मनोविज्ञान को उभारने के लिए ही प्रसंग का काम करती हैं, जैसे अजय और शकुन का तलाक बंटी की यातना बन जाता है और यह प्रतिक्रिया के रूप में शकुन को डॉ॰ जोशी से विवाह की प्रेरणा देता है। और इस विवाह के प्रति विद्रोह ही बंटी को उसकी ममी से अलग कर देता है। यहाँ तलाक एक समाजिक समस्या इसलिए नहीं है कि इसका सम्बन्ध पति–पत्नी के अहंवादी व्यक्तित्वों से अधिक है। उनकी कोशिश एक साथ रहने की नहीं, एक दूसरे को झुकाकर रखने की कोशिश है। वे आपस में 'एडजस्ट' नहीं करते पर अपने दूसरे विवाहों में 'एडजस्ट; कर लेते हैं।

मनोवैज्ञानिक उपन्यास के अनुसार ही इसके शिल्प में जीवन के उन सन्दर्भों को 'रिफ्लेक्शन्स' के रूप में चित्रित किया गया है जो उपन्यास में प्रत्यक्ष रूप से तो नहीं आये है पर जिनका आभास भर मिलता है। जैसे शकुन और अजय के पूर्व सम्बन्ध। इसी प्रकार पात्रों की मनोग्रन्थियों को व्यक्त करने के लिए आत्मदृष्टि आत्ममथन की प्रणालियों का सहारा लिया गया है। इस उपन्यास में सभी पात्रों में विशेष कर बंटी और ममी में एक भावशक्ति है। और कभी–कभी तो प्रसंग में आयी घटनाओं को भी विकारों के माध्यम से वर्तमान का रूप दिया गया है।

इसमें समूचा शिल्प पात्रों की मानसिक स्थितियों का परिचय कराने के लिए पर्याप्त है। उपन्यासकार ने वस्तुतः मानसिक दृष्टि से 'कटबैक– प्रणाली का उतना प्रयोग नहीं किया जितना कि 'इन्साइड व्यू; का। बंटी अपनी मानसिक क्रिया में, अपनी आन्तरिकता का सदैव परिचय देता है।

उपन्यास को एक ही लम्बी कहानी का रूप मानना चाहिए। केवल संख्या क्रम के मध्यवर्ती अंतर्गत से अवांतर स्थितियों को ही अलग किया गया है। वस्तुतः कथानक की अनेक स्थितियाँ जुड़कर एक बिम्ब की रचना करती हैं। शकुन और अजय के सम्बन्ध, बंटी का शकुन और अजय के बीच विभाजित व्यक्तित्व, शकुन और अजय का दोहरा समाजिक जीवन, इन सबसे मिलकर पारिवारिक विसंगति के बीच विमुक्त माँ–बाप के सन्दर्भ से कटा, बंटी का त्रासद जीवन, यह चित्र उभरता है। उपन्यास के शिल्प में इतनी सहजता है कि वह ऊपर से थोपा हुआ नहीं लगता।

यह भी माना जा सकता है कि 'आपका बंटी' उपन्यास का शिल्प कुछ है ही नहीं। यह एक शिल्पविहीन रचना है। इस भ्रम का कारण यह हो सकता है कि इस उपन्यास का शिल्प इसके कथानक से ही उभरा है और वह समूचे कथानक में फैल गया है। उपन्यासकार ने एक अनवरत मानसिक प्रवाह को अंकित करने की कोशिश की है।

उपन्यास की भाषा सपाट और सम्प्रेषणीय है। वह मन के अनुकूल, सार्थक शब्दों से नियोजित है। उसमें किसी एक भाषा के शब्दों के प्रयोग का आग्रह नहीं है। अंग्रेजी के शब्द भी अनेक बार आये हैं। इस तरह उपन्यासकार ने आधुनिक मध्यमवर्गीय बौद्धिक समाज की भाषा का प्रयोग किया है।

कथा परिवेश में यह एक एकल आधुनिक परिवार की कथा है, जिसमें पति–पत्नी अपनी अधिकार भावना और व्यक्तिपरक सामाजिक चेतना के कारण एक–दूसरे से पृथक् रहते हैं। इस परिवार में इन दोनों की एक सन्तान है जो ममी के पास रहकर ममी से अनुराग की एक मनोग्रन्थि का निर्माण करती है। इसमें पापा का अभाव उसकी सामाजिक यातना का कारण बनता है। आधुनिक परिवेश में पति–पत्नी एक नए परिवार की तलाश कर लेते हैं। पत्नी के नए परिवार के साथ उसकी सन्तान का 'एडजस्टमेंट' नहीं होता।

'एडजस्टमेंट' की यह समस्या केवल बंटी तक ही सीमित नहीं है। इसके आनुवंशिकी और परिवेशगत कारण हैं। उसने पिता के गुण वंश परम्परा से प्राप्त किए हैं और वातावरण ममी के परिवेश से ले लिया है इसलिए वह न वातावरण में 'एडजस्ट' होता है और न स्वभाव से ही किसी संगति का निर्वाह कर पाता है। बंटी इसलिए 'नार्मल' नहीं है कि वह जिन परिस्थितियों में बड़ा हुआ है वे भी 'नार्मल' नहीं है। इसलिए उसका अपने परिवार में कोई स्थान नहीं रह पाता। और अन्त में अपनी समूची मनोग्रन्थियों के साथ होस्टल चला जाता है। उपन्यास मनोवैज्ञानिक है इसलिए पात्र केन्द्रित है, घटना केन्द्रित नहीं। ''आपका बंटी'' ही कथानक की रीढ़ है। वह बंटी आपका ही है। इस अर्थ में शीर्षक साभिप्राय है, क्योंकि यह कहानी एक विशेष बालक की होकर भी आज के अनेक बालकों की है। उपन्यास की पात्र रचना उतार–चढ़ाव पूर्ण नहीं है। संघर्ष और अन्तविरोध की समतल सतह की तरह पात्र 'इन्डिवीजुअल' कम है, 'टाइप' अधिक हैं।

4.4 सारांश : उपन्यास का शिल्प ''काम्पेक्ट'' है, क्योंकि वह कथानक से ही उभरा है। उसमें एकालाप अधिक है। सम्वाद और विश्लेषण दोनों माध्यमों का प्रयोग भी किया गया है। उपन्यास की भाषा आधुनिक समाज की भाषा है और इसीलिए उसकी सम्प्रेषणीयता का दायरा व्यापक है। कथानक संयोजन, पात्र–रचना ओर शिल्प–गठन में उपन्यासकार ने यथार्थ–वादी दृष्टि का प्रयोग किया है।

4.5 कठिन शब्द

1) विश्लेषण 2) विकार 3) आनुवंशिकी 4) एकालाप

5) सम्प्रेषण 6) मनोग्रन्थि 7) संयोजन

4.6 अभ्यासार्थ प्रश्न

प्र.1. शिल्प का अर्थ स्पष्ट करते हुए उसके स्वरूप पर प्रकाश डालें?

.....

.....

.....

प्र॰2. 'आपका बंटी' की शिल्पगत विशेषताओं पर प्रकाश डालें?

.....

.....

.....

4.7 सन्दर्भग्रन्थ / पुस्तकें

1) मन्नू भंडारी : आपका बंटी, राधाकृष्ण प्रकाशन।

2) दशरथ ओझा : कहानी एकादशी (कहानी संग्रह), शिक्षा भारती, कश्मीरी गेट, दिल्ली।

3) डॉ. वंशीधर, डॉ. राजेन्द्र मिश्र : मन्नू भंडारी का श्रेष्ठ सर्जनात्मक साहित्य, नटराज पब्लिशिंग हाउस, हरियाणा।

4) नन्दिनी मिश्रा : मन्नू भंडारी का उपन्यास साहित्य।

5) डॉ. शशि जेकब : महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में वैचारिकता।

6) डॉ. सुखबीर सिंह : हिन्दी कहानी : समकालीन परिदृश्य : अभिव्यंजना प्रकाशक, नई दिल्ली।

7) डॉ. रघुवरदयाल वार्ष्णेय : हिन्दी कहानी : बदलते प्रतिमान : पांडुलिपि प्रकाशन दिल्ली।

8) डॉ. कान्ता मेहदीरत्ता : हिन्दी कहानी का मूल्यांकन : राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।

मन्नू भंडारी का साहित्यिक परिचय

5.0 रूपरेखा

5.1 उद्देश्य

5.2 प्रस्तावना

5.3 मन्नू भंडारी का व्यक्तित्व

5.4 मन्नू भंडारी का साहित्यक परिचय

5.5 सारांश

5.6 कठिन शब्द

5.7 अभ्यासार्थ प्रश्न

5.8 सन्दर्भ ग्रन्थ/पुस्तकें

5.1 उद्देश्य

प्रस्तुत अध्याय के अध्ययनोपरान्त आप 'मन्नु भंडारी के साहित्यिक परिचय' के अर्न्तगत :–

1. मन्नू भंडारी के व्यक्तित्व और
2. साहित्यक परिचय के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
3. मन्नू भंडारी के साहित्य की विशेषताओं को जान पाएगें।
4. मन्नू भंडारी के साहित्य को केन्द्र में रखकर आज के समय के बदलते मानवीय मूल्यों की पहचान और
5. पारिवारिक विघटन की समस्या के कारणों को जान सकेंगे।

5.2 प्रस्तावना

प्रत्येक साहित्यकार समसामयिक रचनाधर्मिता का निर्वाह निजी स्तर पर करता है, व्यक्ति का व्यक्तित्व परिवेश से बनता है जो अपने साथ सामाजिक विषमताओं और मानवीय संवेदनाओं का एक पूरा संसार लिए रहता है। परिवेश से जुड़कर लिखना ही सच्चा लेखन है। हिन्दी साहित्य में भी देश की स्वतन्त्रता के पश्चात ऐसे साहित्यकार आए जिन्होंने अपने सामाजिक परिवेश को यथार्थ रूप में अपने साहित्य में उतारा। ऐसे ही साहित्यकारों में प्रतिभासम्पन्न साहित्यकार मन्नू भंडारी का स्थान विशिष्ट है, साहित्य की विभिन्न विधाओं में लेखनी चला कर हिन्दी साहित्य को समृद्ध करने में इनकी अहम भूमिका रही है। उन्होंने साहित्य में आज के जीवन की परिवर्तनशीलता और नारी जीवन के विविध पहलुओं का यथार्थ चित्रण किया है। स्त्री–पुरूष संबंधों, प्रेम के विविध पक्षों एवं परिवार की परिवर्तित व्यवस्था को भी मार्मिकता और सहजता के साथ साहित्य में चित्रित किया है। हिन्दी साहित्य जगत में विराट साहित्य की रचना कर मन्नू भंडारी ने हिन्दी साहित्यकारों में अग्रणी स्थान बनाया है।

5.3 मन्नू भंडारी का व्यक्तित्व :

1. **जन्म :** मन्नू भंडारी जी का जन्म 3 अप्रैल 1931 को मध्यप्रदेश के 'भानपुरा' नामक एक छोटे गांव में हुआ। मन्नू जी अपनी माता–पिता की सन्तानों में सबसे छोटी रही हैं और लाडली भी। उनका असली नाम महेन्द्रकुमारी है। लेकिन परिवार वाले प्यार से उन्हें मन्नू बुलाते थे और वही नाम आगे जाकर प्रचलित हुआ।

2. **माता–पिता :** मन्नु जी के पिता श्री सुखसंपतराय भंडारी जी अंग्रेजी–हिन्दी शब्दकोश के निर्माता थे, जिसका नाम 'टवेंटिएथ सेंचुरी इंग्लिश हिन्दी डिक्शनरी' है। वे अपने समय के प्रसिद्ध कांग्रेसी कार्यकर्ता थे। उनकी माता का नाम अनूप कुमारी है। वह अनपढ़ थी। उन्होंने अपना सारा जीवन अपने परिवार की सेवा में लगा दिया था।

3. **भाई–बहन :** दो भाई और दो बहनों का स्नेह बचपन से लेकर उन्हें मिलता रहा है। बड़े भाई का नाम प्रसन्न कुमार और दूसरा वसंत कुमार है। बहनों में बड़ी का नाम स्नेहलता और छोटी सुशीला है।

4. **शिक्षा :** मन्नू जी का जन्म मध्यप्रदेश में हुआ किन्तु उनकी शिक्षा अलग–अलग स्थानों पर हुई। प्रारम्भिक शिक्षा के लिए उनका अजमेर के सावित्री स्कूल में दाखिला करवाया गया। अजमेर में ही उन्होंने 'इटंर मीडियट' तक शिक्षा प्राप्त की। इसके बाद जब मन्नू जी कॉलेज में आयी तो उनका परिचय हिन्दी की प्राध्यापिका शीला अग्रवाल से हुआ। उस समय भारत को आज़ाद करवाने के लिए कई स्वतन्त्रता संग्राम चलाये जा रहे थे। मन्नू जी भी अपने कॉलेज में जुलूस निकलवाती, अंग्रेजी सरकार के विरूद्ध अपने सहपाठियों को आन्दोलनों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करती रहती थी। इसके पश्चात वे अपनी बहन सुशीला के पास कलकत्ता गयी और वहाँ बनारस विश्वविद्यालय से हिन्दी विषय में एम.ए. किया।

5. **अध्यापन कार्य :** एम.ए. परीक्षा उत्तीर्ण होने के तुरंत बाद ही उन्होंने कलकत्ता के ही एक विद्यालय 'बालीगंज' शिक्षा सदन में अध्यापन का कार्य आरंभ कर दिया। यहाँ नौ वर्ष काम करने के बाद तीन वर्ष कलकत्ता

के एक अन्य कॉलेज 'ब्रिडला कॉलेज' में अध्यापन कार्य किया। इसके पश्चात 1963 में वह दिल्ली आई और दिल्ली के 'मिरांडा हाउस' कॉलेज में प्राध्यापिका बन गई। 'मिरांडा हाउस' कालेज से सन् 1991 में सेवानिवृत्ति होकर 1994 तक उन्होंन उज्जैन के प्रेमचंद विद्यापीठ के निर्देशिका के रूप में काम किया बाद में स्वास्थय बिगड़ जाने के कारण अब घर पर ही लेखन कार्य कर रही हैं।

6. विवाह एवं परिवार : जिस समय मन्नू जी लेखन के क्षेत्र में उतर रही थी उनका परिचय राजेन्द्र यादव से हुआ। यादव जी उस समय हिन्दी साहित्य जगत में प्रतिष्ठित हो चुके थे। लेखन के माध्यम से हुआ यह परिचय कालांतर में घनिष्ठता में बदल गया। बाद में यह मित्रता विवाह में परिणत हुई। राजेन्द्र यादव जी से विवाह होने के पश्चात् मन्नू जी का लेखन तथा अध्यापन और अधिक निखर गया। सन 1961 में मन्नू जी ने एक पुत्री को जन्म दिया जिसका नाम राजेन्द्र यादव और मन्नू जी ने 'रचना' रखा। अपने लेखन कार्य के कारण मन्नू जी ने हिन्दी साहित्य में अपनी पहचान बनाई है। उन्होंने हिन्दी साहित्य की प्रत्येक विद्या में अपनी कलम चलाई। उनके साहित्य का परिचय निम्न है।

5.4 मन्नू भण्डारी का साहित्यक परिचय :– मन्नू भण्डारी जी का रचना संसार कहानी, उपन्यास, नाटक आदि रूपों में व्याप्त है, जो इस प्रकार है।

1) कहानी संग्रह :–

1. मैं हार गई 1957 : इसमें 12 कहानियाँ संकलित हैं। मैं हार गई, श्मशान, अभिनेता, पण्डित गजाधर शास्त्री, दो कलाकार, एक कमजोर लड़की की कहानी, दीवार बच्चे और बरसात, कलि और कसक, ईसा के घर इन्सान गीत का चुंबन, जीती बाजी की हार, सयानी बहु आदि।

2) यही सच है (1966 ई.) :– इसमें आठ कहानियां हैं– 'क्षय, तीसरा आदमी, 'सज़ा', 'नकली हीरे', 'नशा', 'इन्कम टैक्स और नींद', 'रानी माँ का चबूतरा', 'यही सच है'।

3) एक प्लेट सेलाब (1968 ई.) :– इसमें दस कहानियां हैं:– बांहो का घेरा, संख्या के पार, 'कमरे, कमरा और कमरे' एक प्लेट सैलाब, छत बनाने वाले, एक बार और, बन्द दराजों का साथ, ऊँचाई, नई नौकरी, दरार भरने की दरार आदि।

4) तीन निगाहों की एक तस्वीर (1968 ई.) :– इस संग्रह में नौ कहानियां हैं तीन निगाहों की एक तस्वीर, अकेली, अनचाही गहराइयाँ, खोटे सिक्के, घुटन, चश्में, हार, मजबूरी, अकुंश आदि।

5) त्रिशंकु (1978 ई.) :– यह मन्नू भंडारी का अन्तिम कहानी संग्रह है। इस संग्रह में भी नौ कहानियाँ संकलित हैं। आते–जाते यायावर, दरार भरने की दरार, स्त्री सुबोधिनी, शायद, त्रिशंकु, रेत की दीवार, तीसरा हिस्सा, अलगाव, एँखाने आकाश नाई। इस संकलन की त्रिशंकु कहानी पर टेलीफिल्म बनी है जबकि 'एँखाने आकाश नाई' पर 'जीना यहां' नाम से फीचर फिल्म बनी है।

उपन्यास साहित्य :

1) **'एक इंच मुस्कान' :–** (1963 ई.) यह मन्नू भंडारी का प्रथम उपन्यास है जिसे राजेन्द्र यादव और मन्नू जी ने मिलकर लिखा। इस उपन्यास के पुरूष पात्रों से संबंधित खंडों का लेखन राजेन्द्र यादव ने किया और नारी पात्रों से संबंधित खंड़ों का लेखन मन्नू जी ने किया है। यह उपन्यास एक संवेदनशील और प्रतिभा सपन्न रचनाकार अमर की कहानी है जो पत्नी और प्रेमिका के मध्य अंतर्द्वन्द्व से ग्रस्त होकर एकाकी जीवन जीने को बाध्य हो जाता है।

आपका बंटी (1971 ई.) :– मन्नू भंडारी का प्रथम स्वतंत्र उपन्यास माना जाता है। इस उपन्यास में लेखिका ने बंटी नामक एक बालक का मर्मस्पर्शी चित्रण करते हुए आधुनिक व्यक्ति चेतना सपन्न नारी की समस्या की ओर संकेत किया है। यह उपन्यास आधुनिक नारी की बनती बिगड़ती पारिवारिक स्थिति एवं बाल मनोविज्ञान का चित्र लिए है जो अपने पति से अलग दूसरे आदमी के साथ जीवन व्यतीत करती है। परन्तु इन सब परिस्थितियों में उसका बेटा 'बंटी' मानसिक पीड़ा से ग्रस्त रहता है। यह उपन्यास बदलते परिवेश के कारण टूटते परिवार और व्यक्ति को चित्रित करता है।

महाभोज (1979 ई.) :– इस उपन्यास का कथानक सामाजिक ही है किन्तु परिवेश राजनीतिक होने के कारण इसे राजनैतिक उपन्यास कहना अधिक उचित है। इस उपन्यास में लेखिका ने गांवों में व्याप्त सांमती सभ्यता का साम्राज्य और उसके द्वारा किसान मजदूर वर्ग पर किए जाने वाले अत्याचार तथा तत्कालीन शासन व्यवस्था में व्याप्त भ्रष्टाचार का चित्रण किया है।

नाटक साहित्य :–

1. बिना दीवरों के घर 2. महाभोज

महाभोज उपन्यास पर आधारित नाटक 'महाभोज' की रचना मन्नू जी ने की है।

अन्य कृतियाँ :– मन्नू जी की रचनाएं केवल हिन्दी साहित्य जगत में ही सीमित नहीं हैं बल्कि अन्य भारतीय और विदेशी भाषाओं में भी इसका अनुवाद हो चुका है। पंजाबी में उनकी बीस कहानियों का अनुवाद कर उसका एक संकलन निकाला गया है। गुजराती में 'खोटे सिक्के' कहानी का अनुवाद हुआ है। तमिल, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं में 'आप का बंटी' उपन्यास का अनुवाद हो चुका है। 'आप का बंटी' और 'महाभोज' का फ्रेंच, जर्मन, अंग्रेजी और जापानी में अनुवाद निकल गया है। तमिल भाषा में 'आप का बंटी' उपन्यास 'कुमुदम' नामक पत्रिका में सीरियल के रूप में आया था।

इतना ही नहीं मन्नू भण्डारी के नाटकों का सफल मंचन भी हुआ है और कुछ कहानियों का फिल्मांकन भी हुआ है। 'बिना दीवारों के घर' नाटक का मंचन दिल्ली, भोपाल, ग्वालियर में हो चुका है। 'यही सच है' कहानी पर 'रजनीगंधा', नाम से फीचर फिल्म बन चुकी है, इसके साथ ही साहित्यकार के रूप में मन्नू भंडारी कई बार सम्मानित हो चुकी है। जैसे महाभोज के लिए 'रामकुमार भुवाल्का' पुरस्कार, भारतेन्दु हरीशचन्द्र पुरस्कार, महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी पुरस्कार, हिन्दी अकादमी दिल्ली शलाका सम्मान आदि।

5.5 सारांश :– अतः हम कह सकते हैं कि मन्नू भंडारी की तमाम रचनाएं, उनकी मान्यताओं की बहस करती रहती है। उनको साहित्य में स्त्री चरित्रों की प्रमुखता प्राप्त हुई है। उनमें स्त्री का एक नया ही रूप उभरकर सामने आया है। सामाजिकता के साथ–साथ उनकी रचनाओं में विवाह और जीवन संबंधी जटिलताओं को लेकर उनका अपना दृष्टिकोण लेखकीय ईमानदारी के साथ व्यक्त हुआ है।

5.6 कठिन शब्द :

1.	समसामयिक	2. विषमता	3. यथार्थ
4.	सेवानिवृत्ति	5. अंतर्द्वन्द्व	6. विशिष्ट
7.	निर्वाह	8. प्रोत्साहन	

5.7 अभ्यासार्थ प्रश्न :

क) दीर्घ उत्तरापेक्षी प्रश्न :

1. मन्नू भंडारी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए उनके उपन्यासों की चर्चा करें?

.....

.....

.....

2. मन्नू भंडारी के सम्पूर्ण सृजनात्मक साहित्य पर विचार प्रस्तुत करें?

.....

.....

.....

ख) लघु उत्तरापेक्षी प्रश्न :

1. मन्नू भंडारी के 'त्रिशंकु' कहानी संग्रह में संकलित कहानियों के नाम बताएँ?

.....

.....

.....

2. मन्नू भंडारी का उपन्यास 'महाभोज' किस समस्या पर केन्द्रित है उस पर अपने विचार व्यक्त करें?

.....

.....

.....

ग) **वस्तुनिष्ठ प्रश्न :**

1. मन्नू भंडारी का जन्म कब और कहाँ हुआ?

.....

2. 'आपका बंटी' उपन्यास का प्रकाशन वर्ष क्या है?

.....

3. 'यही सच है' कहानी संग्रह में संकलित किन्हीं 4 कहानियों का नाम लिखें?

.....

4. मन्नू भंडारी का विवाह किस प्रसिद्ध साहित्यकार से हुआ।?

.....

5. मन्नू भंडारी के किसी एक नाटक का नाम लिखें ?

.....

6. 'यही सच है' कहानी पर कौन सी हिन्दी फीचर फिल्म बनी है।

.....

7. मन्नू भंडारी का वास्तिवक नाम क्या है?

.....

5.8 सन्दर्भ ग्रन्थ/पुस्तकें

1. किशोर गिरडकर; मन्नू भंडारी कथा सृजन की अंतर्यात्रा; विकास प्रकाशन; कानपुर।
2. डॉ. बंसीधर, डॉ. राजेन्द्र मिश्र; मन्नू भंडारी का श्रेष्ठ सृजनात्मक साहित्य; नटराज पब्लिशिंग हाउस; हरियाणा।

3. डॉ. भीमसिंग राठोड; मन्नू भंडारी व्यक्तित्व और कृतित्व; वाङ्मय बुक्स, अलीगढ़।

4. डॉ. भूमिका पटेल : मन्नू भंडारी का कथा साहित्य : संवेदना एवं शिल्प; विनय प्रकाशन; कानपुर।

5. डॉ. सुखबीर सिंह; हिन्दी कहानी, बदलते प्रतिमान; अभिव्यंजना प्रकाशन; नई दिल्ली।

बाल मनोविज्ञान की दृष्टि से 'आपका बंटी'

6.0 रूपरेखा

6.1 उद्देश्य

6.2 प्रस्तावना

6.3 बाल मनोविज्ञान

6.4 बाल मनोविज्ञान की दृष्टि से 'आपका बंटी'

6.5 सारांश

6.6 कठिन शब्द

6.7 अभ्यासार्थ प्रश्न

6.8 सन्दर्भग्रन्थ / पुस्तकें

6.1 उद्देश्य :– प्रस्तुत आलेख के अध्ययनोपरान्त आप

– बाल मनोविज्ञान के अन्तर्गत बाल मनोभावों का अध्ययन कर सकेंगे।

– बाल मनोविज्ञान की दृष्टि से 'आपका बंटी' का मूल्यांकन कर सकेंगे।

– बाल समाज की विभिन्न अवस्थाओं में बदलती समस्याओं से अवगत हो सकेंगे।

6.2 प्रस्तावना

जीवन का प्रथम चरण शैशव काल होता है जिसके अध्ययन तथा साहित्यिक अभिव्यक्ति का विशिष्ट महत्त्व है। मनोभाव मूलतः सहज सामान्य तथा व्यक्तिगत अथवा असामान्य होते हैं। इसके अतिरिक्त प्रतिक्रियाजन्य, स्पष्टीकरण, तुलनात्मक तथा परिवर्तित मनोभाव भी इसी सन्दर्भ में उल्लिखित किये जा सकते हैं। बच्चों की विविध आयु में मानसिक, भाषाजन्य, शारीरिक, संवेगात्मक, सामाजिक तथा खेल प्रवृत्तियों का भी अध्ययन करना अपेक्षित है। बाल प्रवृत्तियों का सम्यक् अध्ययन करने के लिए उसकी आनुवंशिकता एवं सामाजिक पर्यावरण का अध्ययन आवश्यक होता है। आनुवंशिकता में माता–पिता के द्वारा प्राप्त संस्कार तथा सामाजिक पर्यावरण में पारिवारिक वातावरण, पड़ोस तथा मित्र मंडली एवं

विद्यालयी दीक्षा आते हैं। इन सभी का बच्चे की मनोभावात्मक प्रवृत्ति पर प्रभाव पड़ता है। बाल–समाज एक विस्तृत एवं वृहद समाज है। उसकी भी अपनी विशिष्ट समस्याएँ हैं। प्रत्येक अवस्था में उनकी समस्याएँ विभिन्न और विशिष्ट हुआ करती हैं। उनका भय, कल्पना, कहानी, खेल इत्यादि सभी अपनी अवस्था के अनुसार परिवर्तित हुआ करते हैं। उन्हें सुखी देखने के लिए उनके खेल, कहानी, भय इत्यादि का पर्यवेक्षण बड़ों के द्वारा किया जाना चाहिए, अन्यथा उनके सहज मनोभाव विकृत स्वरूप ग्रहण कर लेते हैं। बाल मनोविज्ञान पर अनेक देशी तथा विदेशी मनोवैज्ञानिकों ने अनुसन्धानपूर्ण लेख एवं ग्रन्थ लिखे हैं, किन्तु बाल मनोभावों का अध्ययन नहीं किया गया है। अतः बाल जगत के विषय में अध्ययन अपूर्ण ही रहा है।

साहित्य समाज का प्रतिरूप होता है। अतः उसमें सामाजिकों का मानस दर्शन भली–भाँति किया जा सकता है। इस उद्देश्य से उपन्यास–साहित्य अत्यन्त महत्त्वपूर्ण विधा है जिसमें लेखक के व्यक्तिगत जीवन के आस पास के चरित्रों का चित्रण मिलता है। विशेष रूप से मनोवैज्ञानिक एवं यथार्थवादी उपन्यास के पात्रों की सहजता एवं जीवन से अत्यधिक निकट व्यावहारिक रूप में चित्रण इस दृष्टि से अध्ययन करने में सहायक सिद्ध होता है। इस प्रकार के अध्ययन के लिए बाल मानस को जानकर ही बाल शिक्षा एवं विकास प्रक्रिया हो सकती है। उनकी अवस्था जनित समस्याओं एवं मनोभावों का ज्ञान कर इस अध्ययन को उनके लिए उपयोगी बनाया जा सकता है। मनोवैज्ञानिकों का विचार है कि लगभग दस प्रतिशत ऐसे बालक होते हैं जिनकी मनोभावनाओं का अनादर अथवा उपेक्षा होने पर विकृत प्रवृत्ति एवं असामान्य स्वभाव वाले बालक बन जाते हैं। अतएव यदि बच्चों के संवेगात्मक एवं भावनात्मक विकास पर पूरा ध्यान दिया जाय तो वे भविष्य–जीवन में निश्चित रूप से सफल मानव बन सकेंगे।

6.3 बाल मनोविज्ञान

बाल मनोभावों का अध्ययन संपूर्ण मानव समाज की मनोभावनाओं के अध्ययन की प्रथम सीढ़ी है जिसके आधार पर किशोर, युवक, प्रौढ़ एवं वृद्धों के विभिन्न मनोभावों के अध्ययन में सहायता मिलती है, क्योंकि बड़ें का मानसिक विकास बालकों के मानसिक विकास के आधार पर ही होता है। बाल मनोभावों के अध्ययन से सामान्य व्यक्ति के भी विचार तथा संवेगों एवं मनोभावनाओं को भली प्रकार समझा जा सकता है। इसे इस प्रकार भी कह सकते हैं कि बाल मनोभावों के अध्ययन से हमें उसी प्रकार की उपलब्धि होती है जिस प्रकार किसी विषय की उत्पत्ति तथा इतिहास को जान कर होती है।

शिशु के प्रत्येक व्यवहार से उसका शिशु की अवस्था होता है। उसमें पूर्व दृष्टि एवं निर्णयात्मक शक्ति नहीं होती। वह स्वयं क्रियाशील होता है। उसमें कारण के प्रति अतार्किकता होती है। उसमें तोते की भाँति स्मरण शक्ति होती है। वह बड़ों के द्वारा बताये गये अर्थ को समझने–अनुकरण करने का प्रयत्न करता है। अतः शिशु अथवा बालक के व्यवहार को व्यस्क के मानस से परितुलन नहीं किया जाना चाहिए। अतः शिशु अथवा बालक के व्यवहार तथा मनोभाव की समीक्षा के लिए विशिष्ट दृष्टि तथा मानदंड स्थापित करने होंगे। शैशवकाल समस्याओं का आगार होता है। कोई भी शिशु ऐसा नहीं होता जो कुछ समय के लिए भी समस्या नहीं बनता। वह माता–पिता, अपने अध्यापक अथवा वर्ग के सदस्यों के लिए, जहाँ वह निवास करता है, कहीं न कहीं समस्या के रूप में प्रश्नचिह्न बन कर उपस्थित होता है। शिशु अथवा बालक अपनी प्राकृतिक अभिचेतना को सहज रूप में प्रकट करना चाहता है जिसे

समाज द्वारा स्वीकार नहीं किया जाता अथवा उसकी मूल भावना को समाज तद्नुरूप ग्रहण नहीं कर पाता। कुछ समय पूर्व बाल जीवन को सामान्यतः परिवारों में समस्या के रूप में अधिक ग्रहण नहीं किया जाता था। सामान्यतः आज भी परिवारों में बालक की प्राकृतिक अभिचेतना को माता–पिता तथा बड़े परिवार के व्यस्क सदस्यों के व्यस्त जीवन में महत्त्व नहीं दिया जाता। एक ओर प्राकृतिक अभिचेतना के पहचान की चेष्टा तथा दूसरी ओर व्यस्क सदस्यों की उदासीनता के कारण सहज भावनाएँ प्रतिक्रिया के रूप में परिवर्तित हो जाती हैं। अत्यधिक चंचलता अथवा कष्टदायक प्रवृत्तियाँ भी व्यस्त माँ को सचेत नहीं करतीं। किन्तु आज अब परिवार छोटा होता है। दो–तीन बच्चे होते हैं। इस स्थिति में माँ और बच्चे का सम्बन्ध अत्यन्त ही निकटतर होता है। जो पहले घटनाएँ एवं क्रियाएँ परिवार की सघनता के कारण अनदेखी हो जाती थीं वे आज भली प्रकार देखी और सुनी जाती हैं। ऐसी हरकतें देखी और सुनी जाने पर अप्रसन्नता का कारण बनती हैं जिनकी व्याख्या माता–पिता एक समस्या के रूप में करते हैं तथा उनके समाधान एवं औचित्य की ओर सचेत होते हैं। जब बच्चे को अल्पव्यस्क मान लिया जाता है, तो व्यस्क की दृष्टि से न्याय करने में भूल हो ही जाती है। ऐसे वातावरण में बच्चे की सहजता भंग हो जाती है, जबकि होना यह चाहिए कि उसकी आयु सीमा को सदा ध्यान में रखा जाय। बच्चा जन्म से ही अपनी विशिष्ट प्रतिभा तथा व्यक्तित्व लेकर आता है। उसकी इच्छाओं, भावनाओं तथा व्यवहार में जुड़वे बच्चों को छोड़ कर एक दूसरे से भिन्नता निश्चित रूप में होती है। जिस प्रकार प्रत्येक बच्चे का शारीरिक विकास भिन्न रूप में होता है, उसी प्रकार उसका मानसिक विकास भी भिन्न रूप में होता है, ऐसा मानकर चलना चाहिए। किसी वंश में वंशानुगत विशिष्टताओं के कारण तथा कुछ अंश में सामाजिक पर्यावरण के कारण यह स्थिति वास्तविक भी है। यहाँ तक कि एक ही परिवार, एक ही वातावरण में पले बच्चों में उनकी अभिरुचियों, आकांक्षाओं तथा मनोभावनाओं में भिन्नता पाई जाती है।

बच्चों की मानसिक गतिविधियों के प्रति उदासीन रहने पर उनकी क्षमता को गलत मोड़ मिल सकता है। साथ ही यदि उनकी स्वच्छंद वृत्तियों पर दबाव डाला गया तो उनकी सहज प्रवृत्तियाँ भ्रष्ट हो सकती है। इससे बच्चे के विकास में बाधा उत्पन्न होने के साथ उसकी उचित योग्यता का अनुमान भी नहीं किया जा सकता। बच्चों के कार्य में धीमापन अथवा प्रशिक्षण के अभाव के कारण परिवार के व्यस्क सदस्य उन्हें अयोग्य जान कर अवसर न देकर स्वयं करने लगते हैं। इससे उनकी क्षमता तथा अन्तस् की भावनाओं को बाहर आने का अवसर नही मिलता।

प्रत्येक बालक–बालिका को निर्देशन की आवश्यकता होती है। वह प्रसन्न तभी होता है जब उसकी अक्षमता एवं भूलों को सहज रूप में स्वीकार करते हुए उसकी सहज प्रवृत्तियों तथा मनोभावनाओं को स्वीकार करते हुए सहर्ष निर्देशन मिले। साथ ही जिन्हें बच्चों की गतिविधियों तथा उनकी अभिरुचियों को पहचानने की क्षमता है तथा जिनमें बच्चों की व्यवहारजन्य त्रुटियों को सुधारने की आन्तरिक इच्छा है। यह अवस्था जीवन के सभी अवसरों से अधिक महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इसकी आधारशिला पर ही व्यक्ति का जीवन–भवन खड़ा होता है जिसमें वह अपना आश्रय ग्रहण करता है।

बच्चों तथा व्यस्कों की आयुगत भावनाओं में अत्यधिक अन्तर है। अतः बालकों की भावनाएँ अत्यन्त अल्प अवधि की होती हैं। उनके अन्दर भावनाएँ उत्पन्न होते ही शारीरिक प्रक्रियाओं को आन्दोलित करती हुई वायु के एक झोंके की भाँति आतीं और चली जाती है, जैसे कुछ हुआ ही न हो। ठीक इसके विपरीत व्यस्क व्यक्ति में मनोभावनाओं के नियंत्रण

की क्षमता होने के कारण अन्दर ही अन्दर सन्तुलित मनोभावनाओं के रूप में व्यक्त होती है। बच्चों की भावनओं को कभी–कभी मोड़ा जा सकता है। उनकी आंतरिक संवेदना इतनी लचीली तथा अस्थायी होती है कि किसी भी ओर उसे मोड़ दिया जा सकता है। बाल्यावस्था की स्मृति अत्यन्त क्षणिक एवं लघुतर होती है। युवक की भाँति उसमें स्थायित्व नहीं होता, अतः किसी भी कठोर अनुभव को बच्चा अविलंब भूल जाता है तथा उसे कुछ क्षण पूर्व की दुःखद अनुभूति देर तक सताती नहीं है। अतः बाल मनोभाव, चंचल, क्षणिक एवं स्थानान्तरिक होने का स्वभाव रखते हैं। एक मनोभाव पर दूसरा मनोभाव सहज रूप में जादू की भाँति अधिकार कर लेता है, जैसे रोता हुआ बालक अनुकूल प्रिय वस्तु अथवा नट्य देखकर हँसने लगता है जबकि उसके गाल पर लुढ़के हुए आँसू की बूँद सूखती भी नहीं है। बालक का मन सहज रूप में विश्वास कर लेने वाला होता है। वह बिना किसी संकोच के किसी भी बात को निश्छल रूप से दूसरे के समक्ष व्यक्त कर देता है। उसके स्वभाव में सरलता अधिक होती है। किसी के भी सद्व्यवहार से वह शीघ्र प्रभावित हो जाता है तथा उससे प्रेरणा लेकर स्वयं वैसा ही कार्य करने लगता है। सहज एवं स्वच्छन्द उल्लास बाल्यावस्था की सरलता का प्रतीक है। सामान्यतः स्वस्थ बालकों में उल्लास एवं आनन्द का स्वरूप दिखाई देता है।

पारिवारिक एवं सामाजिक संस्कारों के आधार पर आकांक्षाओं का स्वरूप एवं परिष्कार निर्धारित होता है। बाल मन सहज रूप में विश्वासी होता है। उसमें सरलता आयुगत प्रवृत्ति होती है जिसके कारण किसी भी स्थिति, व्यक्ति अथवा प्रक्रिया परिणाम पर विश्वास कर लेता है। इस अवस्था में व्यावहारिकता एवं परिस्थितियों के आगत परिणाम के प्रति अनभिज्ञ होने के कारण किसी व्यक्ति अथवा स्थिति के प्रति विश्वास कर लेने की विवशता भी होती है। सहज, निर्विकार एवं मुक्त उल्लास की भावना बाल्यावस्था की पहचान है। हाथ–पैर चलने योग्य होने के बाद बालक–बालिका में इस प्रवृत्ति को विकास होता है। विषम परिस्थितियाँ, इस भावना के कारण विषम नहीं लगतीं। उनके मन में नैसर्गिक आनन्द की अनुभूति होती है। जिस परिमाण में वे जी भर कर रोते हैं, उसी परिमाण में जी खोल कर हँसते भी हैं।

कल्पना के सहारे बालक–बालिकाएँ अपनी नवीन सृष्टि की रचना करते हैं। असमर्थ एवं अशक्त आयु प्राप्त होने के कारण प्राप्त ज्ञान को मूर्त रूप देने के लिए खंडित उपलब्धियों को योगित करके तुष्टि प्राप्त करने की चेष्टा करते हैं। बालमन बड़ों के आचरण एवं बाह्य ज्ञान का अनुकरण करने की आकांक्षा को कल्पनाजन्य मनोभावों के माध्यम से पूरा करता है। उसका कल्पनाचारी दैनिक जीवन रचना और विनाश में व्यतीत होता है। वस्तुस्थिति की अल्पज्ञता के कारण बालक को नवीन रहस्यात्मक वस्तुओं को देखकर सन्देह उत्पन्न होता है। कुतूहल मिश्रित भय जैसे नवीन भाव की सृष्टि होती है। आयु वृद्धि के साथ नवीन वस्तु की संदिग्धता समाप्त होती जाती है। परिकल्पना शक्ति में वृद्धि होने के कारण स्थिति, स्वभाव एवं प्रभाव के सन्दर्भ में स्पष्ट ज्ञान हो जाने पर कुतूहल समाप्त हो जाता है तथा कुतूहल मिश्रित भय लुप्त हो जाता है।

अपने अस्तित्व की असुरक्षा का अनुभव करने पर बालक में हीन भावना का उदय होता है। वह प्रयास करने पर असफलता प्राप्त करता है। बच्चों में निछल भावना होने के कारण बड़ों को आदर देने तथा उनकी सेवा करने की मनोवृति जाग्रत होती है। माता–पिता तथा परिवार के प्रिय सदस्यों को किसी प्रकार के कष्ट तथा रुग्णता अथवा असमर्थता पर उसके मन में अपनी व्यक्तिगत समझ के आधार पर सेवा भावना का उदय हो सकता है, यह सीमित मनोभाव विस्तार लेकर समाज के अन्य क्षेत्रों में भी बालक–बालिका को सहानुभूति की भावना से गरीब अथवा असमर्थ

व्यक्ति की सेवा करते देखा जा सकता है। शारीरिक तथा बौद्धिक अक्षमता के कारण बच्चा अपने कार्य क्षेत्र में कभी–कभी विवशता का अनुभव करता है। दूसरे साथियों को खेलते–कूदते देखकर उनके मन में भी उसी प्रकार उन्मुख दौड़–धूप, गाने, नाचने, कूदने की इच्छा उत्पन्न होती है किन्तु शारीरिक अक्षमता के कारण वैसा न कर पाने के कारण विवशता का करुणापूर्ण मनोभाव व्यक्त होता है। अनुभव से परे अनेक रहस्यों के उद्‌घाटन करने की भी विवशता बच्चे को एहसास हो जाती है। बच्चे में स्नेह प्राप्त करने की अत्यधिक भूख बनी रहती है। वह क्षण प्रति क्षण अपने माता–पिता तथा परिवार के अन्य सदस्यों से स्नेह की आकांक्षा करता है। उसकी सहज मधुरता के वशीभूत होकर परिवार के सदस्य उसे अधिक से अधिक स्नेह भी प्रदान करते हैं। किन्तु जब आयु वृद्धि अथवा अन्य नवीन सदस्य के आगमन के कारण स्नेह भी विभाजित हो जाता है। अथवा स्नेही व्यक्ति व्यस्त रहता है तो बच्चा उपेक्षा का अनुभव करता है जिसके फलस्वरूप उसके मन में तीव्र प्रतिक्रिया होती है। विभाजित स्नेह के कारण उसे ईर्ष्या होने लगती है।

विभिन्न मनोभाव भावनात्मक सघनता के कारण व्यक्त नहीं हो पाते। वह या तो दंड के भय अथवा सामाजिक अस्वीकृति के कारण अव्यक्त रह जाते हैं। बच्चे के अन्दर अव्यक्त मनोवेगों में विभिन्न प्रकार की प्रतिक्रियाएँ होती हैं जिनमें उदासी, चुप्पी, रूठना, मुख पर अप्रसन्नता का भाव व्यक्त करना आदि हैं। इनके द्वारा उसके अन्दर की घुटती हुई प्रतिक्रिया की भावना व्यक्त होती है। बाल्यावस्था के प्रमुख मनोभाव, भय, लज्जा, ईर्ष्या, आह्‌लाद, ममत्व, जिज्ञासा आदि हैं जिनके अभिज्ञान के लिए शिशुकाल अथवा बाल्यकाल की विभिन्न प्रवृत्तियों को जानना नितान्त आवश्यक है, तभी मनोभावों के स्वरूप का उचित विश्लेषण किया जा सकता है। क्रोध बाल्यावस्था का विशिष्ट मनोभाव है किन्तु वह व्यक्तिगत मनोविकार के रूप में ग्रहण किया गया है। प्रत्येक शिशु अथवा बालक–बालिका का जीवन व्यस्कों के मध य विकसित होता है। यदि बालक को अपने मनोनुकूल कार्य करने का अवसर प्राप्त होता है तो उसे प्रसन्नता होती है। किन्तु यदि मन के विपरीत अवसर मिला तो अप्रसन्नता होती है, उसे क्रोध आता है। भोजन के लिए, बाहर खेलने के लिए अथवा माँ की अनुपस्थिति में बिस्तर पर सोने की स्थिति में उसे अप्रसन्नता हो सकती है। बड़ों द्वारा किसी कार्य को करने की अनुमति न मिलने पर अथवा इच्छानुकूल परिस्थिति प्राप्त न होने पर क्रोध के मनोभाव व्यक्त करता है। जैसे–जैसे उसकी आयु में वृद्धि होती जाती है, वैसे–वैसे वह इस मनोवृत्ति को नियंत्रित करता जाता है। समाज भी मनोभावों को नियंत्रित करने के लिए प्रेरित करता है। फिर भी क्रोध करने पर विभिन्न प्रकार की भंगिमाएँ प्रदर्शित करता है। छोटा बच्चा क्रोध में किसी को पैर से मारता है, पैरों को बार–बार पटकता है, जमीन पर लेटता है, किसी वस्तु को उठा कर फेंकता है, काटता है, नाचता है और जोरों से चीखता है। इस प्रकार की विभिन्न कार्यविधि उसके द्वारा इसलिए अपनायी जाती है कि उसकी इच्छाओं तथा आक्रोश की ओर बड़ों द्वारा ध्यान दिया जाय तथा उसकी बाधित इच्छा को पूरा किया जाय। सामान्यतः बालक में इच्छापूर्ति उद्देश्य का क्रोध व्यक्त करने का होता है किन्तु जैसे–जैसे वह विकास प्राप्त करता जाता है, वैसे–वैसे अपनी इच्छापूर्ति के लिए दबाव की प्रवृत्ति बनती जाती है तथा बड़ों एवं माता–पिता के स्नेह का अनुचित लाभ, क्रोध दिखा कर उठाता है। यह उसकी प्रवृत्ति बन जाती है। जैसे–जैसे बच्चा आयुगत विकास एवं अनुभव प्राप्त करता रहता है, वैसे–वैसे भयजन्य मनोभाव तिरोहित होते जाते हैं। जिन्हें देखकर वह भयभीत होता रहा, उन्हें अब भली प्रकार स्थितिज्ञान के कारण संवेगात्मक सुधार करता जाता है। बालक में इच्छा शक्ति अत्यन्त तीव्र होती है। वह बड़ों के मध्य रहता हुआ अनुकरण की प्रवृत्ति के कारण अपनी आयुवृद्धि

की ओर सचेत हो जाता है तथा अपनी कार्यविधि में सुधार लाता जाता है। अल्पज्ञ और असमर्थ समझने वाले बड़ों के मध्य अपनी सुविज्ञता एवं कुशलता का प्रदर्शन करने की तीव्र इच्छा जागृत हो जाती है। बड़े–बड़े आयु को देखते हुए कभी–कभार इस प्रकार की भावना व्यक्त कर देते हैं कि 'अभी बच्चा है'। उस समय बच्चे के अहम् को अपनी आयुगत असमर्थता का आभास होने पर ठेस पहुँचती है जिसके कारण वह अपनी बुद्धि प्रदर्शन की भावना से विभिन्न–मनोभाव व्यक्त करता है।

बाल मनोभावों के सैद्धान्तिक सन्दर्भ के विवेचन में यह ऊपर स्पष्ट किया जा चुका है कि इसके अन्तर्गत सर्वप्रथम सहज या सामान्य मनोभाव उल्लेखनीय हैं। ये मनोभाव मानव हृदय में आधारभूत रूप में विद्यमान रहते हैं। इनमें मुख्यतः मातृ–पितृ प्रेम, मोह–ममत्व, आकांक्षा, विश्वास, उल्लास, चंचलता, जिज्ञासा, कल्पना आदि प्रमुख हैं। इनमें कुछ के उपभेद भी उपलब्ध होते हैं जिनमें से ममत्व, स्नेह, मनुहार, आश्चर्य मनोभाव आदि हैं।

6.4 बाल मनोविज्ञान की दृष्टि से 'आपका बंटी'

'आपका बंटी' उपन्यास में पात्र बंटी की मनोभावना इसी प्रकार की प्रकट हुई है। वह छुट्टियों में बेकार इधर–उधर घूमता है। उसे करने के लिए कोई काम नहीं है। एक बार बगीचे का चक्कर लगाता है : "वहाँ मोंगरे खूब महके हुए थे। एक–एक पौधे को उसने खूब प्यार से छुआ। फिर गिनकर देखा कितनी नई कलियाँ खिली हैं। हर एक पौधे की फूल–पत्तियों का हिसाब उसके पास है।" बंटी आनन्द से झूम उठता है। अपने द्वारा लगाये एवं पोषित मोंगरे को झूमता देखकर। यह उसका मोंगरे के प्रति मोहजन्य मनोभाव है, जिसने उसकी पत्तियों को धोकर साफ करने के लिए प्रेरित किया तथा हवा में झूलने के लिए प्ररित किया है। बंटी की आकांक्षा देखने योग्य है क्योंकि बालक सहज स्नेह का इच्छुक होता है। उसे कृत्रिम स्नेह तथा सहज स्नेह में स्पष्ट अन्तर अनुभव होता है। कालेज के लिए तैयार मम्मी का मुस्कुराना, बंटी को चिपकाना कृत्रिम स्नेह सा लगता है, क्योंकि उसे यह अनुभव होता है कि उसका यह कृत्य अपनत्व से भरा हुआ नहीं है मात्र औपचारिकता है। बंटी को मातृ स्नेह की आकांक्षा है। उसे विभाजित स्नेह के कारण मानसिक प्रतिक्रिया का आघात सहन करना पड़ता है। उसको स्नेह की कमी दूसरों के प्रति आकर्षित करती है। माली को अपना देखकर उसका प्रेम उभर आता है। उछल कर उसके पास पहुँचता है और पूछता है : "माली दादा, कैसा है मेरा बीचा? तुम ठीक से पानी तो देते हो ना?" इस प्रकार विभाजित स्नेह की पूर्ति वह वनस्पति के पेड़–पौधों पर स्नेह लुटा कर करता है। बंटी ममी की उपेक्षा से क्षुब्ध होकर पापा के पास भले ही आ जाए किन्तु वह आज भी ममी के स्नेह का भूखा है। "पापा उसे घुमा रहे हैं। कलकत्ते के बारे मे बता रहे हैं। पर बंटी कुछ सुन ही नहीं रहा। वह सोच रहा है,सोच ही नहीं रहा, देख रहा है – ममी उसके पलंग पर बैठी रो–रोकर कह रही है 'मत जा बंटी, मत जा। मैं तेरे बिना रह नहीं सकूँगी। माँ बालक की संरक्षिका ही नहीं होती अपितु उल्लास के क्षणों में उसकी मित्र भी होती है। किन्तु ऐसा सहयोग न मिलने पर माँ की उपेक्षा अथवा रूष्टता को सहन नहीं कर पाता। बालक बंटी, माँ की उदासी से अत्यधिक चिन्तित है। उसके द्वारा बिना बोले बंटी को सुलाना, न अपने पलंग पर बुलाया न उससे सारे दिन के विषय में कोई सूचना प्राप्त की। पापा के पास से वापस लौटने पर बंटी को अनुभव हो रहा है कि जैसे उसने कोई गलती कर दी है। स्वयं से कहता है 'नहीं भेजना था तो ममी मना कर देती। इतना नाराज़ होने की क्या जरूरत थी?' वह हर इच्छा की पूर्ति के लिए तैयार है, लेकिन मम्मी की उपेक्षा नहीं सहन कर सकता।'

बच्चे सहज रूप में विश्वासी होते हैं। उसके मन की सरलता आधार है। वह कोरा कागज है जिस पर कुछ भी लिखा जा सकता है। उसकी प्रकृति के स्वरूप निर्माण की अवस्था होती है। बाल्यावस्था जिज्ञासा की अवस्था है। बंटी भी इससे संत्रस्त है। वह अपने पापा के आने के रहस्य को उद्‌घाटित करना चाहता है। वकील चाचा के आने पर पापा के विषय में जानने की तीव्र इच्छा उत्पन्न होती है क्योंकि वह जानता है कि पापा के द्वारा उसके लिए अनेक वस्तुएँ वकील चाचा ही लाते हैं। मम्मी से पूछता है "मम्मी, पापा हम लोगों के साथ क्यों नहीं रहते।" मम्मी से उचित समाधान न पाने पर, उसकी पापा के विषय में जानने की इच्छा और भी तीव्रता प्राप्त कर लेती है। पापा के विषय में मम्मी तथा वकील चाचा की वार्ता को बड़ी चतुरता से सुनता है किन्तु पूर्ण रूपेण रहस्योद्‌घाटन न होने के कारण अन्ततः वह मम्मी से ही पूछता है "चाचा क्या कहते थे मम्मी?" मम्मी ने ऐसी चुभती नजरों से उसे देखा कि वह भीतर तक सहम गया और खट से उसने अपनी आँखें बंद कर लीं। पर बन्द आँखों से भी वह उस चुभन को महसूस करता रहा।

बाल्यावस्था में निकटस्थ व्यावहारिक अनुभव की न्यूनता के कारण कल्पना का आधार अधिक ग्रहण करना पड़ता है। वह किसी भी स्थिति को अपने मनोनुकूल कल्पना जगत में प्राप्त करने तथा देखने की चेष्टा करता है। कल्पना लोक में विचरण करने की प्रवृत्ति बालकों में अत्यधिक होती है विशेष रूप से चमत्कार एवं आश्चर्य में डाल देनेवाले कृत्य तथा अस्वाभाविक स्थितियों के प्रति वह अत्यधिक रुचि लेता है। बंटी भी इन प्रवृत्तियों से अछूता नहीं है। फूफीके द्वारा स्नान करने के लिए कहने पर जिद करता है कि वह स्नान तभी करेगा जब उससे सोनल रानी की कहानी सुन लेगा। फूफी के विरोध करने पर वह पुनः जिद करता है, "नहीं, मैं अभी सुनूँगा। कोई काम–वाम नहीं।"

बालक में तीन वर्ष के पश्चात् सुरक्षात्मक अनुभूति होने लगती है। किन्तु साहसिक प्रवृत्ति होने के कारण उसके मन में आनन्द प्राप्त करने का उत्साह उस भय को अधिक महत्त्व नहीं देता। बंटी भी ऐसे मनोभाव प्रकट करता है। सामने से दो लड़के साइकिल पर बातें करते हुए गुजर जाते हैं। तो सोचता है "थोड़ा और बड़ा हो जायेगा तोवह भी दो पहिए की साइकिल खरीदेगा।" आयु वृद्धि के साथ–साथ बालक अपने चतुर्दिक प्राप्त अनुभवों के आधार पर बड़ों की भाँति अनुकरण करता है। समवयस्कों के साथ अपनी सुयोग्यता प्रकट करता हुआ बुद्धि प्रदर्शन करता है तथा बड़ों केबीच अपने अनुभव एवं अभिरुचियों के परिष्कार का प्रदर्शन करता हुआ अपनी बुद्धिमता प्रदर्शित करने की सहज प्रवृत्ति बना लेता है। बंटी स्थान–स्थान पर अपने मनोभाव व्यक्त करता है। नये सत्र में बंटी प्रथम दिवस पर स्कूल से किताबें लाता है। किताबें देखकर उसकी फूफी कहती है कि ''एल्लो, इत्ता भारी बस्ता। ये जब तुम इत्ता बोझ ढो–ढोकर ले आया करोगे?" बंटी अपने बुद्धि विकास की ओर इंगित करने हुए सन्तोष और गर्व भरी मुस्कान से कहता है, "रोज ले जाना पड़ेगा। अभी तो ये बाहर और पड़ी हैं। चौथी क्लास की पढ़ाई क्या यों ही हो जाती है? बहुत किताबें पढ़नी पढ़ती हैं।"

बाल्यावस्था में संवेदनशीलता अत्यन्त तीव्र एवं क्षणिक होती है। उसमें प्रेम, ममत्व, दया, सहानुभूति आदि भावनाओं से उद्‌बुद्ध सेवा भावना भी जाग्रत होती है। शैशव काल में जो बच्चा अपने माँ–बाप से सेवा करवाता है वही बाल्यवस्था में आकर माँ–बाप को कष्ट में देखकर उनके प्रति सहानुभूति व्यक्त करता है तथा सुखी और प्रसन्न करने की आकांक्षा से उनकी सहायता अथवा सेवा करता है। यह बाल काल की असामान्य प्रवृत्ति है। मां के प्रति बेटे का मम्त्व विभिन्न प्रकार से व्यक्त होता है। उसे दुखी देखकर अपने विभिन्न वार्ताओं, चपलताओं एवं क्रियाओं के मध्यम से चैतन्य करना चाहता है। उपन्यास का बालक बंटी जब माँ को थकी–हारी देखता है तो वह व्याकुल हो उठता है। उसने देखा

कि मम्मी अपना सिर धोकर आयी हैं। किसी प्रकार की बात न करके चुपचाप पलंग पर जाकर लेट गयी हैं। वह दौड़ा–दौड़ा गया, स्टूल पर चढ़कर चीनी उतारी, नींबू काटा, थर्मस में से बर्फ निकाला।

"मम्मी।" सारी मिठास घोल कर उसने धीरे से पुकारा।

"मम्मी, यह शिकंजी ले लो। मैं बना कर लाया हूँ।"

बाल मन संवेदनशील होता है। वह सम्बन्धों से स्नेह, दुलार और प्यार की अपेक्षा करता है। आयु के साथ अपनी ओर आकर्षित करने की इच्छा ग्रन्थि के रूप में विकसित होती है। बालक जैसे–जैसे दैनिक कार्यों में आत्मनिर्भर होता जाता है वैसे–वैसे परिवार के अन्य सदस्य निश्चित होते जाते हैं। उसके अनन्तर स्नेह प्राप्त करने की प्रक्रिया ध्यानाकर्षण की अवस्था को किसी रूप में छोड़ना नहीं चाहता। वह उपेक्षा महसूस करने लगता है। बंटी अपनी मम्मी के द्वारा डाक्टर जोशी की ओर झुकाव को देखकर उसके मन में मम्मी के द्वारा की जाने वाली उसकी उपेक्षा खलती है। वह अनुभव करता है "एक मम्मी ही तो थीं पर वे भी उन्हीं लोगों में जाकर मिल गयीं।"

बालक में तार्किकता की कमी होने के कारण कभी–कभी अपनी सामान्य और सहज स्थिति त्याग कर असामान्य हो उठता है। वह आक्रोश से युक्त होने पर तभी शान्त होता है जब वह अपेक्षित आपूर्ति कर लेता है। मनोवांछित फल न मिलने पर मानव स्वभाव है कि मन में क्रोध, भय, निराशा आदि विकार उत्पन्न होते हैं। बंटी खेलते हुए अपने मित्र टीटू से मारपीट कर लेता है तथा एक दूसरे की चीजों की वापसी के लिए शन्नो आती है तो कहती है, "बंटी, टीटू की सारी चीजें दे दो, वह अब तुमसे कभी नहीं बोलेगा।" बंटी की प्रतिक्रिया देखिए "हमारी भी पक्की कुट्टी है। उससे कहो, पहले हमारी चीजें दे जायेगा, फिर अपनी ले जायेगा। हमें नहीं चाहिए सड़ी–सड़ी चीजें।"

बालक की जिज्ञासा जब शांत नहीं होती तो उसके तन मन में विभिन्न प्रकार की शारीरिक प्रतिक्रिया होने लगती हैं। वह अपने को एकाकी एवं उपेक्षित अनुभव कर सकता है। उपन्यास का पात्र बंटी जब मम्मी तथा फूफी से उपेक्षित होता है तो उसे क्रोध आता है। फूफी द्वारा नाश्ते के लिए दूध–दलिया मेज पर रखे जाने पर देखते ही बंटी भभक उठता है "फिर वही दलिया। मैं नहीं खाता रोज–रोज सड़ा दलिया।"

6.5 सारांश

अतः बाल मनोविज्ञान का पूरा चित्रण 'आपका बंटी' उपन्यास में हुआ है। बाल मनोभावों की दृष्टि से बंटी के मनोभावों को स्पष्ट अभिव्यक्ति उपन्यास में मिली है। बाल मन की भावनाएँ किस तरह पारिवारिक परिस्थितियों से प्रभावित होती हैं इसका चित्रण करने में उपन्यास लेखिका सफल हुई है।

6.6 कठिन शब्द

1)	संवेगात्मक	2) अनुवांशिकता	3) पर्यवेक्षण	4) उद्‌भासित
5)	अभिज्ञान	6) निर्विकार	7) नैसर्गिक	8) अशक्त
9)	तिरोहित	10) परिष्कार		

6.7 अभ्यासार्थ प्रश्न :–

प्र॰1. बाल मनोविज्ञान से क्या तात्पर्य है?

.....

.....

.....

प्र॰2. बाल प्रवृत्तियों के सम्यक अध्ययन में आनुवांशिकता एवं सामाजिक पर्यावरण क्यों महत्वपूर्ण है स्पष्ट करें?

.....

.....

.....

प्र॰3. बाल मनोविज्ञान की दृष्टि से 'आपका बंटी' उपन्यास का मूल्यांकन करें?

.....

.....

.....

6.8 सन्दर्भगन्थ / पुस्तकें

1. डॉ. वंशीधर, डॉ. राजेन्द्र मिश्र : मन्नू भंडारी का श्रेष्ठ सर्जनात्मक साहित्य, नटराज पब्लिशिंग हाउस, हरियाणा।
2. नन्दिनी मिश्रा : मन्नू भंडारी का उपन्यास साहित्य।
3. डॉ. शशि जेकब : महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में वैचारिकता।
4. डॉ. सुखबीर सिंह : हिन्दी कहानी : समकालीन परिदृश्य, अभिव्यंजना प्रकाशक, नई दिल्ली।
5. डॉ. रघुवरदयाल वार्ष्णेय : हिन्दी कहानी : बदलते प्रमितान, पांडुलिपि प्रकाशन, दिल्ली।
6. डॉ. कान्ता मेहदीरत्ता : हिन्दी कहानी का मूल्यांकन, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।

हिन्दी कहानी का उद्‌भव और विकास

7.0 रूपरेखा

7.1 उद्देश्य

7.2 प्रस्तावना

7.3 हिन्दी कहानी का उद्‌भव

7.4 हिन्दी कहानी का विकास

7.4.1 प्रारम्भिक काल अथवा पूर्व प्रेमचन्द काल

7.4.2 विकासकाल अथवा प्रेमचन्द काल

7.4.3 समृद्धिकाल अथवा प्रेमचन्दोत्तर काल

7.4.4 स्वतन्त्रता परवर्ती काल की हिन्दी कहानी

7.5 सारांश

7.6 कठिन शब्द

7.7 अभ्यासार्थ – प्रश्न

7.8 सन्दर्भग्रन्थ/पुस्तकें

7.1 उद्देश्य

प्रस्तुत आलेख के अध्ययनोपरान्त आप

– हिन्दी कहानी के उद्‌भव के विषय में जानकारी प्राप्त करेंगे।

– हिन्दी कहानी के विकास के विभिन्न चरणों की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

7.2 प्रस्तावना

"नदी जैसे जल स्त्रोत की धारा है, मनुष्य वैसे ही कहानी का प्रवाह" – रवीन्द्रनाथ टैगोर की इस परिभाषा

के अनुसार यह जीवन और जगत स्वयं ही एक कहानी है । जब से मनुष्य इस सृष्टि में आया, तब से उसमें कहानी कहने तथा सुनने की प्रवृत्ति भी आई । शैशव में दादी, नानी, माँ या आया के मुंह की कहानियाँ, वृद्धों के पौराणिक आख्यान, सखी सहेलियों से सुनी गई साहस अथवा प्रवास की कथाएँ, स्कूलों कालेजों में पढ़ी गई प्रेम–कथाएं, जवानी की जासूसी, तिलिस्मी और ऐय्यारी की कहानियां और नहीं तो कम से कम तट, नाव, चौपाल आदि पर बैठे मनगढ़न्त किस्से सुनना–सुनाना ये सभी इस बात की सूचना देते हैं कि कहानियां अनन्त काल से कही जा रही हैं, कही जाएंगी ।

7.3 हिन्दी कहानी का उद्‌भव

कहानी साहित्य की सर्वाधिक लोकप्रिय विधा है । इसके वर्तमान स्वरूप का जो विकास हुआ है, उसकी पृष्ठभूमि में सुदीर्घ परम्पराएं और क्षेत्रीए प्रभाव हैं । प्राचीन भारतीय कथा साहित्य में वैदिक साहित्य, पुराण साहित्य, महाभारत, रामायण, जातक कथाएँ, पंचतन्त्र, हितोपदेश, बृहत्कथा, कथा सरित–सागर आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं । इनमें विद्यमान कथा सूत्रों और कथात्मक तत्त्वों से युक्त रचनाओं को कथा, आख्यान, आख्यायिका, खंडकथा, गल्प आदि शीर्षकों के अन्तर्गत उल्लिखित किया जाता है । इनमें से कहानी और कथा प्रायः समानार्थक हैं । आधुनिक युग के पूर्व अपभ्रंशकालीन वीरगाथाओं, मध्ययुगीन प्रेमाख्यानों, रीतियुगीन वीर गाथाओं तथा हिन्दी गद्य की आविर्भावकालीन रचनाओं के रूप में यह कथा परम्परा विकासशील रही ।

हिन्दी गद्य का विधिवत विकास लल्लूलाल, सदल मिश्र, सदा सुखलाल एवं इंशा अल्ला खाँ की रचनाओं से माना जाता है । आधुनिक अर्थ में हिन्दी कहानी का जन्म काल भी इसी समय से माना जा सकता है । इशां अल्ला खां कृत 'रानी केतकी की कहानी' अथवा 'उदयमान चरित' कहानियाँ ही हैं । कुछ आलोचकों ने 'रानी केतकी की कहानी' को हिन्दी की सर्वप्रथम कहानी माना है । इसमें लेखक ने एक काल्पनिक प्रेम कथा प्रस्तुत की है । कहानी में चमत्कारिक तत्वों की बहुलता है । किन्तु सच यह है कि इसमें आधुनिक कहानी के लक्षण ठीक नहीं बैठते और न ही इससे कहानी की किसी अविछिन्न परम्परा का प्रवर्त्तन हुआ । इसके अनन्तर राजा शिव प्रसाद सिंह सितारे हिन्दी की उपदेशात्मक कहानी 'राजा भोज का सपना' और भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की हास्य रस प्रधान कहानी 'एक अद्‌भुत अपूर्व स्वप्न' दृष्टिगोचर होती है ।

आधुनिक ढंग की कहानियों का आरम्भ आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने सन् 1900 में प्रयाग से 'सरस्वती' पत्रिका के प्रकाशन काल से माना है । इन्होंने आरम्भिक कहानियों का विवरण इस प्रकार दिया है –

1. इन्दुमती–किशोरी लाल गोस्वामी (1900 ई0)
2. गुलबहार–किशोरी लाल गोस्वामी (1902 ई0)
3. प्लेग की चुड़ैल–मास्टर भगवान दास (1902 ई0)
4. ग्यारह वर्ष का समय – रामचन्द्र शुक्ल (1903 ई0)
5. पंडित और पंडितानी–गिरिजादत्त वाजपेयी (1903 ई0)

6. दुलाई वाली–बंगमहिला (1907 ई0),

ये सभी कहानियाँ 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित हुई थीं । हिन्दी के कुछ विद्वानों ने किशोरीलाल गोस्वामी की 'इन्दुमती' को हिन्दी की सर्वप्रथम मौलिक कहानी स्वीकार किया । बाद में देखा गया कि इस कहानी पर शेक्सपीयर के 'टेम्पेस्ट' नाटक की स्पष्ट छाप है । अतः इसे हिन्दी की सर्वप्रथम मौलिक कहानी कहना उचित नहीं जान पड़ता । ऊपर लिखित प्रारम्भिक कहानीकारों के अनन्तर हिन्दी में अनेक उच्चकोटि के लेखकों–जयशंकर प्रसाद, मुंशी प्रेमचन्द, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक, वृंदावन लाल वर्मा, आचार्य चतुरसेन शास्त्री आदि का आविर्भाव हुआ 1909 ई0 में वृंदावन लाल वर्मा ने 'राखीबन्द भाई' लिखकर ऐतिहासिक कहानियों की परम्परा को जन्म दिया । 1909 ई0 में ही काशी से 'इन्दु' पत्रिका का प्रकाशन हुआ, जिसमें प्रसाद की प्रथम कहानी 'ग्राम' प्रकाशित हुई और बाद में भावात्मक कहानियों का 'छाया' संग्रह प्रकाशित हुआ । इसके अतिरिक्त चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की कहानी 'उसने कहा था' 1915 ई0 में 'सरस्वती' में प्रकाशित हुई । प्रथम विश्वयुद्ध की पृष्ठभूमि को लेकर लिखी गई यह कहानी रचना शिल्प की दृष्टि से अपने समय की विशिष्ट रचना है। प्रतिष्ठित उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि ई0 1900 के लगभग आधुनिक हिन्दी कहानी का जन्म हुआ और 1912 से 1918 ई0 के बीच वह पूर्णतः प्रतिष्ठित हो गई और इसका मौलिक रूप निखरा ।

7.4 हिन्दी कहानी का विकास

वस्तुतः हिन्दी कहानी के विकास को निम्नलिखित रूप में देखा जा सकता है –

1. प्रारम्भिक काल अथवा पूर्व प्रेमचन्द काल – (सन् 1900–1915),
2. विकासकाल अथवा प्रेमचन्द काल – (सन् 1915–1936),
3. समृद्धिकाल अथवा प्रमचन्दोत्तर काल – (सन् 1936–1950),
4. स्वतन्त्रता परवर्त्ती काल की हिन्दी कहानी – (सन् 1950 से चली आ रही हिन्दी कहानी)

7.4.1 प्रारम्भिक काल अथवा पूर्व प्रेमचन्द काल (सन् 1900–1915)

भारतेन्दु काल से हिन्दी कहानी के इतिहास का प्रथम विकास काल आरम्भ होता है । प्राचीन नीति साहित्य, लोक साहित्य व जातक साहित्य आदि की पृष्ठभूमि पर हिन्दी कहानी साहित्य की रचना आरम्भ हुई । भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, राधाचरण गोस्वामी, किशोरी लाल गोस्वामी, रामचन्द्र शुक्ल, केशव प्रसाद सिंह, गिरिजा दत्त वाजपेयी, कार्तिक प्रसाद खत्री, पार्वती नन्दन, यशोदा नन्दन अखौरी, महेन्द्र लाल गर्ग, सूर्य नारायण दीक्षित, बंग महिला, उदय नारायण वाजपेयी, लक्ष्मीधर वाजपेयी, शिव नारायण शुक्ल, गंगा प्रसाद अग्निहोत्री जैसे कहानीकारों ने इस नवीन साहित्यिक विधा के क्षेत्र में अपनी रचनात्मक प्रतिभा का परिचय दिया । 'सरस्वती', 'इंदु व 'हिन्दी गल्प माला' जैसी पत्र–पत्रिकाओं में भी अनेक कहानिया छपीं और उनसे हिन्दी कहानी के विकास को दिशा मिली । इस युग में लिखी गई अधिकांश कहानियां कल्पनात्मक तत्त्व का आधार बनकर लिखी गई हैं, उनकी कथा प्रवृत्ति सामाजिक है । हिन्दु

समाज में व्याप्त वर्ण व्यवस्था का विरोध, आर्थिक अर्थ विभाजन की अव्यावहारिकता, प्राचीन परम्पराओं की अनुपयोगिता, धर्म भावना का खोखलापन, सामन्तवाद का तथा आधुनिक शिक्षा के प्रचार, प्रसार और गुण दोष से सम्बन्धित अनेक समस्याएँ इस युग की कहानियों में मिलती है । नारी समाज में होने वाली जागृति और सुधार की ओर भी इस युग की कहानी में संकेत मिलते हैं । सामाजिक प्रवृत्ति के अतिरिक्त जासूसी प्रवृत्ति से संबंधित कहानियाँ भी इस युग में लिखी गईं । हिन्दी कहानी के प्रथम युग में जो विषय विस्तार मिलता है, उसके प्रभाव स्वरूप आगामी युग में कहानी साहित्य का विस्तार हुआ तथा उसमें कलात्मक परिपूर्णता के साथ–साथ दृष्टिकोण की प्रोढ़ता भी आयी ।

7.4.2 विकासकाल अथवा प्रेमचन्द काल (सन् 1915–1936)

हिन्दी कहानी साहित्य के इतिहास में द्वितीय विकास काल प्रेमचन्द युग को कहा जा सकता है । हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ कहानीकार प्रेमचन्द का आविर्भाव इसी युग में हुआ, जिन्होंने अपनी कहानियों से एक नवीन क्रांति उत्पन्न कर दी। सन् 1916 में प्रेमचन्द की सुप्रसिद्ध कहानी 'पंच परमेश्वर' प्रकाशित हुई, इससे पूर्व उनकी ही 'सौत', 'शंखनाद' आदि कहानियां 1915 में प्रकाशित हो चुकी थीं । प्रेमचन्द ने हिन्दी कहानी को एक नया क्षेत्र, नयी जीवन सम्बन्धी शैली, शिल्प और भाषा प्रदान की । प्रेमचन्द ने लगभग 290 कहानियां लिखीं जिनमें भारतीय परम्परागत आदर्शों का समर्थन और परम्परागत कुरीतियों का त्याग करने की प्रेरणा दी है । पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति के अन्धानुकरण को प्रेमचन्द ने श्रेयस्कर नहीं बताया है । पूंजीपतियों के शोषण का विरोध करते हुए प्रेमचन्द ने समाज में सबसे पीड़ित वर्ग मध्यवर्ग को माना है जो मिथ्याडम्बर व अदूरदर्शिता के कारण संकट से घिरा रहता है । प्रेमचन्द ने निम्न वर्ग की मुख्य समस्या अशिक्षा को ही माना है । बीस वर्ष की लम्बी कथा यात्रा में प्रेमचन्द ने कई मोड़ ग्रहण किए, किन्तु 'पूस की रात', 'ठाकुर का कुंआ' व 'कफ़न' में उनकी कला उन्नति के चरम शिखर पर पहुंच गई । यहीं से हिन्दी की नई कहानी ने अपनी प्रेरणा खोजी । उपरलिखित तीनों कहानियों ने हिन्दी कहानी को यथार्थ की सुदृढ़ भूमि प्रदान की ।

इस काल के दूसरे प्रमुख कहानीकार हैं – जयशंकर प्रसाद । यद्यपि उनकी पहली कहानी 'ग्राम' सन् 1911 में ही 'इन्दु' में छप चुकी थी, तथापि उनके महत्त्वपूर्ण, कहानी संग्रह 'प्रतिध्वनि' 'आकाशदीप', 'आंधी', 'इन्द्रजाल' आदि इस काल में प्रकाशित हुए । प्रसाद रूमानी स्वभाव के व्यक्ति थे । उनकी कहानियों में प्रेम और करुणा का, त्याग और बलिदान का, दार्शनिकता और काव्यात्मकता का, भावुकता और चित्रात्मकता का प्राधान्य है । इस युग के अन्य कहानीकारों में विश्वंभर नाथ शर्मा 'कौशिक', चन्द्रधर शर्मा, 'गुलेरी', चतुरसेन शास्त्री, राजा कृष्णदास, विनोद शंकर व्यास का नाम लिया जा सकता है जिन्होंने 'ताई', 'पगली', 'हार की जीत', 'कवि की स्त्री', 'अंबपालिका', 'हल्दीघाटी में', 'अन्तःपुर का आरम्भ', 'विधाता' व 'अपराध' जैसे कहानियों का सृजन किया । इन कहानियों की विशेषता यह है कि इनका सृजन ऐतिहासिक, यथार्थ, मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण व आदर्शवादी दृष्टिकोण को आधार बनाकर किया गया है । ऐसी ही कहानियां आने वाले युग की कहानी रचना का आधार बन गई ।

7.4.3 समृद्धिकाल अथवा प्रेमचन्दोत्तर काल (सन् 1936 – 1950)

हिन्दी कहानी के इतिहास का तृतीय विकास काल प्रेमचन्दोत्तर काल को कहा जा सकता है । इस युग में

सामाजिक, राजनीतिक तथा मनोवैज्ञानिक विषयों के साथ–साथ ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक विषयों पर भी कहानी लिखी गई । इस काल के कहानीकारों में जैनेन्द्र, पांडेय, बेचन शर्मा 'उग्र', अज्ञेय, इलाचन्द्र जोशी, भगवतीचरण वर्मा, विष्णु प्रभाकर व यशपाल आदि का नाम प्रमुख है ।

प्रेमचन्द के बाद हिन्दी कहानी को नवीन आयाम देने वालों में जैनेन्द्र प्रमुख हैं । उन्होंने कहानी को घटना के स्तर से उठा कर चरित्र और मनोवैज्ञानिक सत्य पर लाने का प्रयास किया है । 'हत्या', 'पाँज़ेब', 'अपना–अपना भाग्य' जैसी कहानियों में जैनेन्द्र ने व्यक्तिमन की शंकाओं, प्रश्नों तथा गुत्थियों का अंकन किया । भारतीय समाज की रूढ़िप्रियता, शोषण तथा व्यक्तिमन की ग्रंथियों का सूक्ष्म विश्लेषण अज्ञेय की 'रोज' व 'कड़ियां' कहानियों में मिलताहै । मनोवैज्ञानिक कहानीकारों के संदर्भ में इलाचन्द्र जोशी का नाम लिया जा सकता है । जोशी जी ने कहानियों में मनोवैज्ञानिक केमहिस्ट्री पिरोयी है इसीलिए उनकी कहानियाँ नीरस व असंवेदनीय लगती हैं । उपेन्द्रनाथ 'अश्क' की कहानियों की विषय वस्तु और शिल्प में वैविध्य है पर मनोविश्लेषण व प्रतीक आदि के आधार पर लिखी गई कहानियों में फार्मूलाबद्धता है ।

इस काल की कहानी प्रगतिवादी व व्यक्तिवादी प्रवृत्तियों से प्रभावित थी। इस धारा के प्रतिनिधि कहानीकार यशपाल हैं। यशपाल ने मार्क्सवाद के अनुरूप धन की विषमता पर प्रहार करते हुए भौतिकवादी नैतिक मूल्यों का समर्थन किया। यशपाल पर फ्रायड का गहरा प्रभाव था अतएव यौन–चेतना के खुले चित्र उनकी कहानियों में मिलते हैं। 'भस्तावृत', 'पिंजरे की उड़ान', 'उत्तमी की मां' आदि यशपाल के उल्लेखनीय कहानी संग्रह हैं। यशपाल कहानी को दृष्टांत रूप में ग्रहण करते हैं। वर्ग संघर्ष, मनोविश्लेषण, पैना व्यंग्य उनकी कहानियों की अनन्य विशेषताएँ हैं। वे सामाजिक व नैतिक रूढ़ियों पर प्रहार करते हुए पाठकों के रूढ़ संस्कारों पर गहरा आघात करते हैं। इसी काल में सामाजिक शोषण, अनाचार व कुप्रथाओं के प्रति आक्रोश के तेवर लिए सामने आयी 'उग्र' की कहानियाँ। 'चिंगारियाँ' व 'चाकलेट' संग्रहों में प्रकाशित उग्र की कहानियाँ विशुद्ध समाजद्रोही हैं। इस काल की नारी लेखिकाओं में सुभद्रा कुमारी चौहान, शिवरानी प्रेमचन्द व उषा देवी मित्रा का नाम लिया जा सकता है। इन लेखिकाओं ने सामाजिक, पारिवारिक व व्यावहारिक जीवन से सम्बन्धित कहानियाँ लिखी हैं। इनकी कहानियें में भारतीय नारी की परिस्थितियों, समस्याओं तथा भावनाओं का सजग चित्रण मिलता है। सुभद्रा कुमारी चौहान की 'पापी पेट' शीर्षक से प्रकाशित प्रसिद्ध राष्ट्रीय कहानी इसी काल की रचना है।

7.4.4 स्वतन्त्रता परवर्त्ती काल की हिन्दी कहानी (सन् 1950 से चली आ रही हिन्दी कहानी)

हिन्दी कहानी का चतुर्थ विकास काल वह है जब 1950 के लगभग हिन्दी कहानी कथ्य व शिल्प दोनों दृष्टियों से अपने में अनेक नवीनताएँ लेकर एक बिल्कुल नए मोड़ पर आ खड़ी हुई। लम्बे संघर्ष के बाद 1947 में देश के स्वतन्त्र होने पर हिन्दी कहानी में नए उल्लास और नवीन आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति हुई और इस कहानी को 'नयी कहानी' की संज्ञा प्राप्त हुई। नयी कहानी को प्रस्थापित करने का श्रेय कमलेश्वर, राजेन्द्र यादव और मोहन राकेश की त्रयी को दिया जाता है। इनके अतिरिक्त मार्कण्डेय, उषा प्रियंवदा, निर्मल वर्मा, भीष्म साहनी, शिव प्रसाद सिंह, फणीश्वर नाथ रेणु, मन्नू भंडारी, कृष्णा सोबती आदि अनेक कहानीकार इस समय

तेजी से उभर कर सामने आए। किन्तु सन् 1961–65 की अवधि में और उसके बाद भी हिन्दी कहानी की जड़ता को तोड़ने के लिए नए–नए आंदोलन उठ खड़े हुए, जैसे–अ कहानी (गंगा प्रसाद विमल), सचेतन कहानी (महीप सिंह), समान्तर कहानी (कमलेश्वर), सक्रिय कहानी (राकेश श्रीवत्स)। वास्तविकता यह है कि आंदोलन व्यक्ति के बदले हुए यथार्थ को सशक्त रूप से वाणी देने के प्रयत्न थे। आंदोलन विशेष के नाम से समूची स्वातन्त्रयोत्तर युग के कहानी के भाव और शिल्प की किसी विशिष्टता का बोध नहीं होता अतः अलग–अलग नामों के बजाए इसे स्वातान्त्रयोत्तर काल की कहानी कहना अधिक समीचीन रहेगा। 'आंचलिक कहानी' का प्रचलन भी इसी काल में हुआ। ग्रामांचलों के कहानीकारों में शिव प्रसाद सिंह, मार्कण्डेय, फणीश्वरनाथ रेणु, शैलेश मटियानी का नाम लिया जा सकता है।

प्रेमचन्द के पूर्व कहानी में कल्पना, तिलिस्म और रोमानी प्रवृत्ति का आधिक्य था। वह 'एक था राजा' वाली कहानी थी। प्रेमचन्द ने इस परम्परा को तोड़ दिया और कहानी को 'एक आदमी है' ही बना दिया। प्रेमचन्द की यह क्रांतिकारी भूमिका है। इसी जीवन सूत्र को लेकर सन् 1950 के बाद विकसित होने वाली कहानी ने जीवन के अत्यन्त विस्तृत धरातल का अंकन किया। अब से पहले कहानी जीवन का प्रतिबिम्ब थी, किन्तु अब यह स्वयं जीवन का एक अनुभव खंड, जीवन का ही एक हिस्सा बन गई। इससे एक बड़ा लाभ यह हुआ कि अब कहानी मात्र मनोरंजन की विधा नहीं, अपितु मनुष्य के चिन्तन और सोच की वाहिका विधा बन गई है। कहानीकारों के अनुसार वह आज भ्रष्ट व्यवस्था से लड़ने का सशक्त हथियार बन गई है।

परिवेश के नवीनतम बोध के कारण इस काल की कहानी ने युग, धर्म, जीवन, समाज और संघर्षकालीन स्थितियों से अपना सीधा संबंध स्थापित किया है। इसमें खंडित व्यक्तित्व की तथा व्यक्तित्व की अलग–अलग खंडित अंशों की अभिव्यक्ति पर बल दिया है। परिवेश से टूटे असहाय व्यक्ति की छटपटाहट, निराशा, उपरामता वस्तुतः अस्तित्व के लिए संघर्षशील मानस की विविध प्रवृत्तियाँ हैं। इसीलिए मार्क्सिस्ट, मनोवैज्ञानिक, समाजशास्त्रीय तथा मूल्यपरक दृष्टियां अब आरोपित न रह कर कहानी की मानसिकता का अंग बन चुकी हैं। मनुष्य की रोजी रोटी की दिक्कत, नौकरी की समस्या, शासन तंत्र और राजनेताओं में व्याप्त भ्रष्टाचार, राशन की लम्बी–लम्बी कतारों में सिर खपाती जिन्दगी की विविधतापूर्ण तस्वीर बड़ी प्रामाणिकता से कहानी में प्राप्त होती हैं। दीप्ति खंडेलवाल की 'जमीन', मोहन–राकेश की 'सुहागिनें', मेहरून्निसा परवेज की 'त्यौहार', सुदर्शन चोपड़ा की 'कछुए का खोल', 'गिरिराज किशोर की 'मंत्रीपद', गोविन्द मिश्र की 'धांसू' आदि कहानियाँ इन्हीं संदर्भों को रेखांकित करती हैं। रोजी–रोटी की तलाश में गांवों की बहुत बड़ी जनसंख्या नगर में आ बसी, नगर में आ बसने पर भी ये लोग अपनी वास्तविक जिन्दगी को नहीं भूले। महानगर और नगर में आकर भी इनके दिलो–दिमाग पर जो गांव छाया रहा, उसके दर्द की मार्मिक अभिव्यक्ति कमलेश्वर की व रामदरश मिश्र की कहानियों में देखी जा सकती हैं ।

अर्थ प्रधान जीवन का महत्त्वपूर्ण व रोचक पक्ष कहानी में यह सामने आया है कि किसी प्रकार अर्थव्यवस्था ने मानवीय रिश्तों व संबंधों की मधुरिमा समाप्त कर दी है । संबंधों की बदली हुई भूमिका के संदर्भ में सुधा अरोड़ा, महेश्वर व ज्ञानरंजन की कहानियां उल्लेखनीय हैं । इनकी कहानियों में चित्रित प्रणय संबंध भौतिक एवं यांत्रिक सभ्यता से त्रस्त मानव के संबंध हैं जो क्षण–क्षण नए रूपों को प्राप्त करते हैं । आज की कहानी में सेक्स के बजाए सेक्स मनोविज्ञान प्रस्तुत हुआ है । घुटन, कुंठा, अनास्था, आक्रोश, बेबसी, अनर्गलता का स्वर आज की कहानी में विशेष रूप से उभरा है ।

भागते हुए क्षण का अर्थ ग्रहण करने वाली कहानी ने नारी मन की गाथा चाहे नौकरीपेशा है या गैर नौकरी पेशा, मध्यवर्ग की है या उच्च वर्ग की, उसकी समस्याओं का सफल निरूपण किया है । कहानी बालमन की सूक्ष्म सोच का चित्रण करती है और निम्न, मध्य व उच्च वर्ग की उन सभी समस्याओं का ब्यौरा देती है जो वैयक्तिक व सामाजिक रूप से आहत करती हैं, क्योंकि कहानीकार तीनों वर्गों से संबंधित हैं ।

7.5 सारांश

हिन्दी कहानी के समग्र विकास को ध्यान में रखते हुए कहा जा सकता है कि आधुनिक काल के साहित्य की केन्द्रीय विधा रही है । कहानीकार ने सजग व जागरूक रह कर समय और स्थितियों के अनुरूप कहानी के विकास की ओर पग बढ़ाए हैं । शायद ही जीवन का कोई पहलू है जिस पर कहानी नहीं लिखी गई ।

7.6 कठिन शब्द

1) मौलिक

2) आविर्भाव

3) रूमानी

4) मनोवैज्ञानिक

5) विशुद्ध

6) समाचीन

7) उपराम

8) मधुरिमा

9) निरूपण

10) अनर्गलता

7.7 अभ्यासार्थ प्रश्न

1. हिन्दी कहानी का उद्‌भव किस काल में हुआ ? अपने शब्दों में लिखें ?

.....

. .....

.....

2. हिन्दी कहानी के उद्‌भव पर एक संक्षिप्त लेख लिखें ?

.....

. .....

.....

3. हिन्दी कहानी के विकास–क्रम पर अपने विचार प्रकट करें ।

.....

. .....

.....

4. हिन्दी कहानी के उद्‌भव और विकास पर प्रकाश डालिए ।

.....

. .....

.....

7.8 सन्दर्भग्रन्थ / पुस्तकें

1) मन्नू भंडारी : आपका बंटी, राधाकृष्ण प्रकाशन।

2) दशरथ ओझा : कहानी एकादशी (कहानी संग्रह), शिक्षा भारती, कश्मीरी गेट, दिल्ली।

3) डॉ. वंशीधर, डॉ. राजेन्द्र मिश्र : मन्नू भंडारी का श्रेष्ठ सर्जनात्मक साहित्य, नटराज पब्लिशिंग हाउस, हरियाणा।

4) नन्दिनी मिश्रा : मन्नू भंडारी का उपन्यास साहित्य।

5) डॉ. शशि जेकब : महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में वैचारिकता।

6) डॉ. सुखबीर सिंह : हिन्दी कहानी : समकालीन परिदृश्य : अभिव्यंजना प्रकाशक, नई दिल्ली।

7) डॉ. रघुवरदयाल वार्ष्णेय : हिन्दी कहानी : बदलते प्रतिमान : पांडुलिपि प्रकाशन दिल्ली।

8) डॉ. कान्ता मेहदीरत्ता : हिन्दी कहानी का मूल्यांकन : राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।

'उसने कहा था' 'ईद का त्योहार' और 'छोटा जादूगर' कहानियों की तात्विक समीक्षा

8.0 रूपरेखा

8.1 उद्देश्य

8.2 प्रस्तावना

8.3 'उसने कहा था' कहानी की तात्विक समीक्षा

8.3.1 कथानक या कथावस्तु

8.3.2 चरित्र–चित्रण

8.3.3 संवाद

8.3.4 देशकाल और वातावरण

8.3.5 भाषा – शैली

8.3.6 उद्देश्य

8.4 'ईद का त्योहार' कहानी की तात्विक समीक्षा

8.4.1 कथानक या कथावस्तु

8.4.2 चरिण–चित्रण

8.4.3 संवाद

8.4.4 देशकाल और वातावरण

8.4.5 भाषा – शैली

8.4.6 उद्देश्य

8.5 'छोटा जादूगर' कहानी की तात्विक समीक्षा

8.5.1 कथानक या कथावस्तु

8.5.2 चरित्र – चित्रण

8.5.3 संवाद

8.5.4 देशकाल और वातावरण

8.5.5 भाषा शैली

8.5.6 उद्देश्य

8.1 उद्देश्य :– प्रस्तुत पाठ के अध्ययनोपरान्त आप 'उसने कहा था' 'ईद का त्यौहार' और 'छोटा जादूगर' कहानियों की तत्वों के आधार पर समीक्षा कर सकेंगे।

8.2 प्रस्तावना : कहानी साहित्य की सर्वाधिक लोकप्रिय विधा है। संसार के सभी प्राचीन साहित्यों में कहानियों की वृहत परम्परा मिलती है। कहानी में जीवन के किसी एक अंग को प्रस्तुत किया जाता है वहीं, उपन्यास में जीवन को समग्रता से प्रस्तुत किया जाता है। प्रेमचन्द के शब्दों में कहानी में बहुत विश्लेषण की आवश्यकता या गुंजाइश नहीं होती, यहाँ हमारा उद्देश्य मनुष्य को चित्रित करना नहीं वरन उसके चरित्र का एक अंश दिखाना है।

8.3 'उसने कहा था' कहानी की तात्विक समीक्षा

कहानी के छः तत्व माने गए हैं – 1. कथानक या कथावस्तु 2. चरित्र–चित्रण 3. संवाद 4. देशकाल और वातावरण 5. भाषा–शैली 6. उद्देश्य। इन तत्वों के आधार पर कहानी की समीक्षा निम्नलिखित हैं –

8.3.1. कथानक या कथावस्तु – कहानी की कथावस्तु संक्षिप्त होती है और तीव्र गति से अपने लक्ष्य की ओर बढ़ती है। कथानक के विकास की चार स्थितियाँ होती हैं – (क) प्रारम्भ (ख) विकास (ग) कौतूहल और (घ) चरम सीमा। चन्दधर शर्मा गुलेरी ने संयोगों और घटनाओं के सहारे 'उसने कहा था' कहानी के कथानक की सृष्टि की है। इसका कथानक तत्कालीन प्रथम महायुद्ध से सम्बन्धित है। बालक लहनासिंह अमृतसर के बाजार में अचानक एक बालिका को ताँगे के नीचे आ जाने से बचा लेता है। यहीं से दोनों का परिचय आरम्भ होता है। दोनों के मन में एक दूसरे के प्रति अनुराग उत्पन्न हो जाता है। कुछ समय बाद दोनों अलग हो जाते हैं और एक दूसरे को भूल जाते हैं। फिर दोनों का संयोगवश 25 वर्ष बाद अचानक मिलन होता है जब लहनासिंह नं. 77 राइफल होकर अंग्रेजों की ओर से फ्रांस के रणक्षेत्र में लड़नेके लिए जा रहा है और अपने सूबेदार को मिलने उसके घर आता है। सूबेदारनी को देखकर उसे पता चलता है वह कोई और नहीं बल्कि वही भोली–भाली लड़की है जो रेशम से कढ़ा सालू दिखाकर भाग गई थी। सूबेदारनी लहनासिंह को अपने पास बुलाकर कहती है कि जिस तरह बचपन में तुमने तांगे के नीचे आ जाने से मेरी जान बचाई थी, उसी तरह अबतुम

युद्धस्थल में मेरे पति और मेरे पुत्र दोनों की रक्षा करना। फ्रांस और बेल्जियम के मैदान में वह सूबेदार हजारासिंह और उनके रोगग्रस्त पुत्र बोधासिंह के प्राणों की रक्षा करता हुआ ही स्वयं घायल हो जाता है और अपने साथीवजीरासिंह की गोद में अपने प्राण त्याग देता है। उसे मरते हुए यह संतोष है कि उसने अपनी प्रतिज्ञा का पालन पूर्णरूप से कर लिया है। कथानक उस अडिग विश्वास पर आधारित है, जिसके बल पर सूबेदारनी निस्संकोच लहनासिंह से उसके जीवन को माँग लेती है।

इस कहानी के कथानक में आरम्भ, आरोही, चरमस्थिति, अवरोह और अन्तर नामक पाँचों स्थितियों का चित्रण भी बड़ी सजीवता के साथ हुआ है। इस कहानी का 'आरम्भ' भी भूमिका से हुआ है और उस भूमिका में अमृतसर के बाजार का यथार्थ चित्रण कथानक को सजीव बना देता है। 'तेरी कुड़माई हो गई' और 'धत्' जैसे शब्दों ने कथानक को आरम्भ से ही मार्मिक बना दिया है। तदुपरान्त फ्रांस–बेल्जियम के मैदान में खंदक के अंदर सिक्ख रेजीमेंट के पहुँचने एवं वहाँ गीत गाकर मनोविनोद करने तक इस कथानक का 'आरोह' है। तत्पश्चात् कपटी लपटन साहब के आने पर कथानक 'चरमस्थिति' पर पहुँच जाता है और लहनासिंह की कुशलता एवं सावधानी के कारण सूबेदार हजारासिंह तथा रोग से पीड़ित उनके पुत्र बोधासिंह की रक्षा का 'अवरोह' आरम्भ हो जाता है। इसके अनंतर लेखक ने लहनासिंह जमादार की स्मृति को जाग्रत करके पुरानी घटनाओं का उल्लेख करते हुए लहनासिंह की मृत्यु के साथ कथानक का करुणापूर्ण 'अन्त' किया है। कथानक के अन्त में लेखक ने यथार्थता का पुट देने के लिए लिखा है – "कुछ दिन पीछे लोगों नेअखबारों में पढ़ा – फ्रांस और बेल्जियम – 68 वीं सूची–मैदानों में घावों से मरा – नं. 77 सिख रायफल्स जमादार लहनासिंह।"

इतने विस्तृत एवं विशाल चित्रपृष्ठ पर सम्पूर्ण कथानक को सन्तुलित ढंग से प्रस्तुत करना और इधर–उधर बिखरी हुई कड़ियों को जोड़कर अन्त में उन्हें क्रमबद्ध कर देना गुलेरी जी के कलात्मक विधान की महत्ता को प्रदर्शित करता है। गुलेरी जी ने विधान की दृष्टि से कथानक के अन्तिम भाग को इतने कलात्मक ढंग से संजोया है कि कहानी की संवेदना चरमावस्था के उपरान्त भी स्थिर बनी रहती है। इस तरह 'उसने कहा था' कहानी का सुगठित कथानक अप्रत्याशित मोड़ों एवं कौतूहल प्रवृत्ति से परिपूर्ण होकर जीवन–तथ्यों के उद्‌घाटन में पूर्ण सशक्त एवं सक्षम है।

8.3.2 चरित्र–चित्रण – "उसने कहा था' एक चरित्र–प्रधान कहानी है। इसमें एक ओर लहनासिंह जमादार के अपूर्व त्याग, बलिदान और विशुद्ध प्रेम का निरूपण हुआ है, तो दूसरी ओर सूबेदारनी के उदात्त एवं गंभीर प्यार तथा अडिग विश्वास को भी चित्रित किया गया है। लेखक ने चरित्र–चित्रण के लिए संकेतात्मक एवं कथोपकथनात्मक पद्धतियों का ही प्रयोग किया है।

लहनासिंह के चरित्र का क्रमिक विकास दिखाते हुए लेखक ने सर्वप्रथम एक भोले–भाले किशोर बालक के रूप में चित्रित किया है, जो अमृतसर के बाजार में चौक की एक दुकान पर लड़की से मिलता है। उसके बाल–चरित्र की दूसरी विशेषता की ओर लेखक ने संकेत आगे चलकर सूबेदारनी के मुख से किया है कि उसने एक दिन जब किसी ताँगेवाले का घोड़ा दही वाले की दुकान पर बिगड़ गया था, तब उस लड़की की जान बचाई थी। लहना के बड़े होते ही फौज में जमादार हो जाने पर उसके चरित्र की कितनी ही असाधारण विशेषताओं का चित्रण इस कहानी में हुआ है। वह अत्यन्त

अनुशासनप्रिय एव बड़ों का सम्मान करने वाला सैनिक है। वह हँसमुख सैनिक है। रणक्षेत्र में खन्दक के अन्दर पड़े हुए सैनिकों के साथ हास्य–विनोद में भाग लेता है। वह एक ऐसा कर्त्तव्यनिष्ठ सैनिक है, जो आदर्श के लिए सर्वस्व अर्पण करने की क्षमता रखता है।

इस कहानी में दूसरा चरित्र सूबेदारनी का है जो अत्यन्त मार्मिक एवं महत्त्वपूर्ण है। लेखक ने उसे अल्हड़ बालिका पतिपरायणा पत्नी एवं वात्सल्यमयी जननी की उत्कृष्ट भूमिका में अंकित करके नारी के पावन एवं उज्ज्वल चरित्र की महिमा से मंडित किया है। बचपन का लहना सिंह के साथ उस बालिका का आकर्षण न तो काम–भावना से प्रेरित है औरन इसमें स्वार्थ एवं अनैतिकता की गंध आती है।

उस बालिका को सूबेदारनी के रूप में चित्रित कर लेखक ने नारी चरित्र को दिखाया है। वह अपने पति और पुत्र की मंगलकामना करती है क्योंकि दोनों युद्ध पर जा रहे हैं। वह अपने बचपन के पहचान वाले मित्र लहनासिंह से युद्ध में उनकी रक्षा करने के लिए कहती है, "अब दोनों जाते हैं। मेरे भाग! तुम्हें याद है, एक दिन ताँगेवाले का घोड़ा दही वाले की दुकान के पास बिगड़ गया था। तुमने उस दिन मेरे प्राण बचाये थे। ..... ऐसे ही इन दोनों को बचाना, यह मेरी भिक्षा है।"

गुलेरी जी ने सूबेदारनी को अन्त में एक उदात्त एवं पुनीत प्रेम की प्रतिमा के रूप में चित्रित करके उसे भारतीय मर्यादा का पालन करने वाली आदर्श पत्नी एवं आदर्श जननी की भूमिका में ही अंकित नहीं किया है, अपितु अडिग विश्वास एवं सुदृढ़ निष्ठा में सम्पन्न एक ऐसी आदर्श प्रेमिका के रूप में भी अंकित किया है, जो लहनासिंह के जीवन की धारा को ही मोड़ देती है। उसे त्याग एवं बलिदान की ओर उन्मुख कर देती है।

8.3.3 संवाद – कहानी में संवादों की योजना के दो प्रमुख उद्देश्य होते हैं – एक तो पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं का उद्‌घाटन करना और दूसरे कथानक को अग्रसर करने में सहायता लेना। लेखक ने इन दोनों उद्देश्यों की पूर्ति बड़ी कुशलता एवं तत्परता के साथ की है। साथ ही कहानी को रोचक, आकर्षक एवं मनोरंजक बनाने के लिए भी संवादों का सहारा लिया गया है। आपके इन संवादों में सबसे पहली विशेषता यह है कि वे पाठकों की आँखों के सामने एक सजीव चित्र–सा प्रस्तुत कर देते हैं; जैसे – बालक लहना और आठ वर्षीय बालिका का यह संवाद सुनिये, जो चित्रोपमता के सौंदर्य से ओतप्रोत है –

"तेरे घर कहाँ है?"

"मगरे में; – और तेरे?"

"माँझे में; – यहाँ कहाँ रहती है?"

"अंतर सिंह की बैठक में, वे मेरे मामा होते हैं।"

कुछ दूर जाकर लड़के ने मुस्कराकर पूछा –

"तेरी कुड़माई हो गई?"

इस पर लड़की कुछ आँखें चढ़ाकर 'धत्' कहकर दौड़ गई और लड़का मुँह देखता रह गया।

संवाद संक्षिप्त हैं क्योंकि गुलेरी जी ले मुख्यतः संक्षिप्त वाक्यों का प्रयोग किया है। जैसे लहनासिंह औरबोधासिंह का संवाद सुनिये :–

"अच्छा, मेरी जरसी पहन लो।"

"और तुम?"

"मेरे पास सिगड़ी है, मुझे गर्मी लगती है; पसीना आ रहा है।"

कहानी के संवाद अत्यन्त मार्मिक हैं। इनमें वाणी के कौशल के साथ–साथ अर्थ गाम्भीर्य एवं उक्तिवैचित्र्य विद्यमान है। जैसे, लहनासिंह का कपटी लपटन साहब के साथ होने वाला संवाद सुनिये :–

"क्यों साहब, हम लोग हिन्दुस्तान कब जायेंगे?

"लड़ाई खत्म होने पर। क्यों, क्या देश पसन्द नहीं है?"

स्थानीय वातावरण की पूर्ण झाँकी कहानी में अंकित है। लेखक ने अपने संवादों में प्रायः ऐसे शब्दों, वाक्यों एवं भावों का समावेश किया है, जो स्थानीय वातावरण की झाँकी प्रस्तुत करते हुए संवादों को यथार्थता एवंवास्तविकता प्रदान करते हैं। वजीरासिंह और लहनासिंह के मनोविनोदपूर्ण इस वार्तालाप में स्थानीय वातावरण की झाँकी देखिए। जब खन्दक में से गन्दा पानी फेंकता हुआ वजीरासिंह कहता है :–

"मैं पाधा बन गया हूँ। करो जर्मन के बादशाह का तर्पण।"

संवादों में व्यवहारिकता होनी चाहिए। उनमें मानव–सुलभ व्यावहारिकता है और एक पात्र दूसरे पात्र से वही कहता है जो उस परिस्थिति में संभव है। जैसे, लड़ाई खत्म होने पर जब लहना को छोड़कर सूबेदार खंदक से जाने को तैयार नहीं हुए, तब लहना कहता है –

"तुम्हें बोधा की कसम है और सूबेदारनी जी की सौगंध है जो इस गाड़ी में न चले जाओ।"

"और तुम?"

"मेरे लिए वहाँ पहुँचकर गाड़ी भेज देना। और जर्मन मुर्दों के लिए भी गाड़ियां आती होंगी। मेरा हालबुरा नहीं है। देखते नहीं मैं खड़ा हूँ।"

संवादों की विशेषता यह है कि इनमें भावुकता, सरसता, कोमलता, शिष्टता और सरलता के साथ–साथ मानवीय संवेदना की कारुणिक व्यंजना भी होनी चाहिए। लहना सिंह से सूबेदारनी ने जो कुछ कहा है, उसमें मार्मिक भावों की अभिव्यक्ति के साथ ही मानवीय संवेदना की गहरी करुण छाप विद्यमान है। सूबेदारनी लहनासिंह से कह रही है :–

"मैंने तेरे को आते ही पहचान लिया। एक काम कहती हूँ। मेरे तो भाग फूट गये। सरकार ने बहादुर का खिताब दिया है, लायलपुर में ज़मीन दी। आज नमकहलाली का मौका आया है। पर सरकार ने हम तीमियों की घघरिया पलटन क्यों न बना दी जो मैं भी सूबेदारजी के साथ चली जाती? एक बेटा है।"

इस प्रकार गुलेरीजी ने संक्षिप्त, स्वाभाविक, सरस, सजीव, मार्मिक, मनोरंजक, शिष्टता सम्पन्न, व्यावहारिक, वाक्चातुरी युक्त तथा अर्थ–गांभीर्य से भरे हुए संवादों की योजना करके कहानी को नाटकीयता के उत्तम गुणों में सुशोभित ही नहीं किया है, अपितु पात्रों की मानसिक ऊहापोह से परिपूर्ण चारित्रिक विशेषताओं का उद्घाटना करते हुए कहानी को रमणीयता, चारुता एवं सजीवता प्रदान की है तथा उसे जीवन्त रूप प्रदान करते हुए नितान्तर स्वाभाविक एवं वास्तविक बनाने का स्तुत्य प्रयास किया है।

8.3.4 देशकाल और वातावरण – कहानी को प्रभाव की दृष्टि से रोचक, आकर्षक एवं स्वाभाविक बनाने के लिए उसमें वातावरण की सृष्टि करना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण माना गया है। कहानी काल्पनिक होते हुए भी यथार्थ की पृष्ठभूमि पर तभी प्रतिष्ठित होती है, जब उसमें वातावरण की योजना अत्यन्त प्रभावशाली ढंग से की जाती है। वातावरण की सफल एवं सजीव योजना के लिए तीन तत्त्वों की आवश्यकता पड़ती है – (1) देश, (2) काल और युगानुकूल परिस्थिति। इसमें देश से तात्पर्य उस स्थान–विशेष, शहर, गाँव अथवा भूभाग से है, जहाँ कहानी की घटनायें घटित होती हैं। काल से तात्पर्य वर्ष, मास, दिन, प्रहर, घड़ी, ऋतु अथवा समय–विशेष से है, जिस समय घटनायें घटित होती हुई कहानी के कथानक को किसी काल–खंड से सम्बद्ध कर देती हैं। इसके साथ ही युगानुकूल परिस्थिति से तात्पर्य किसी युग–विशेष की उन परिस्थितियों से है, जिनमें घटनायें जन्म लेकर सम्पूर्ण कहानी को आच्छादित कर देती हैं।

गुलेरी जी की इस अमर कहानी 'उसने कहा था' में वातावरण सम्बन्धी पहली विशेषता यह है कि इसमें देशगत वातावरण का चित्र अत्यन्त सजीवता, मार्मिकता एवं यथार्थता के साथ अंकित हुआ है और इसने कहानी में जान डाल दी है, क्योंकि यहाँ लेखक ने अमृतसर के बाजार का जो यथार्थ वातावरण अंकित किया है, वह कहानी की पृष्ठभूमि ही नहीं वरन् मेरुदंड है और उसने कहानी को प्रभाव की गरिमा से ओतप्रोत कर दिया है। जैसे, 'बड़े–बड़े शहरों के इक्के–गाड़ी वालों की जबान के कोड़ों से जिनकी पीठ छिल गई है और कान पक गए हैं, उनसे हमारी प्रार्थना है कि अमृतसर के बम्बूकार्ट वालों की बोली का मरहम लगावें। जब बड़े–बड़े शहरों की चौड़ी सड़कों पर घोड़े की पीठ को चाबुक से धुनते हुए इक्के वाले कभी घोड़े की नानी से अपना निकट सम्बन्ध स्थिर करते हैं, कभी राह चलते पैदलों की आँखों के होने पर तरस खाते हैं, कभी उनके पैरों की अंगुलियों के पोरों को चीथकर अपने को सताया हुआ बताते हैं और संसार भर की ग्लानि, निराशा और क्षोभ के अवतार बने नाक की सीध चले जाते हैं, तब अमृतसर में उनके बिरादरी को, तंग चक्करदार गलियों में हर एक लड़ढी वाले के लिए ठहर कर सब्र का समुद्र उमड़ाकर, बचो खालसा जी', हटो भाई जी', ठहरना माई', 'आने दो लाला जी', 'हटो बाछा' कहते हुए सफेद फेटों, खच्चरों और बतखों, गन्ने और खोमचे और भारे वालों के जंगल में सह राह खेते हैं। क्या मजाल है कि 'जी' और 'साहब' बिना सुने किसी को हटना पड़े। यह बात नहीं कि उनकी जीभ चलती ही नहीं; चलती है, पर मीठी छुरी की तरह महीन मार करती है। यदि कोई बुढ़िया बार–बार चितौनी देने पर भी लीक से नहीं हटती तो उनकी वचनावली के ये नमूने हैं – 'हटजा जीणे जोगिए; हट जा करमावालिए' हट जा पुत्तां प्यारिए' बच जा लम्बीवालिए।"

इस कहानी का दूसरा स्थल है – फ्रांस–बेल्जियम के युद्ध की भूमि। लेखक ने उस रणक्षेत्र का सजीव चित्रण करते हुए पाठकों की आँखों के सम्मुख रणभूमि का जीता–जागता यथार्थ चित्र प्रस्तुत कर दिया है। जैसे, 'राम, राम,यह भी कोई लड़ाई है। दिन–रात खन्दकों में बैठे हड्डियाँ अकड़ गईं। लुधियाने से दस गुना जाड़ा और मेंह और बरफ ऊपर से। पिंडलियों तक कीच में, धँसे हुए हैं। गनीम कहीं दिखता नहीं; – घंटे–दो घंटे में परदे फाड़ने वाले धमाके के साथ सारी खन्दक हिल जाती है और सौ–सौ गज धरती उछल पड़ती है। इन बैरी गोले से बचे तो कोई लड़े। नगरकोट का ज़लज़ला सुना था, यहाँ दिन में पच्चीस ज़लज़ले होते हैं। जो कहीं खन्दक से बाहर साफा या कुहनी निकल गई तो चटाक् से गोली लगती है मालूम बेईमान मिट्टी में लेटे हुए हैं या घास की पत्तियों में छिपे रहते हैं।"

वातावरण सम्बन्धी दूसरी विशेषता यह है कि इस कहानी में काल की विशेष इकाई से इसका सम्बन्ध स्थापित करके घटनाओं को वास्तविकता एवं यथार्थता का पुट दिया गया है। जैसे फ्राँस–बेल्जियम के मैदान में लुधियना से दस गुना जूझना पड़ता और निरंतर बरफ पड़ना दिखाया गया है। वहाँ जाड़ा इतना पड़ रहा है कि हड्डियों में भी ठंड धँस गई है। सूर्य वहाँ निकलता नहीं और खाई में दोनों तरफ से चम्बे की बावलियों के–से सोते झरते रहते हैं। कम्बलों एवं सिगड़ी के सहारे जैसे–तैसे रात कटती है। जाड़ा क्या है, मौत है। भरतीय सैनिकों में से कई निमोनियाँके शिकार हो गये हैं। यहाँ तक कि बोधासिंह भी ठंड का शिकार हो गया है। उसकी कँपनी छूट रही है। रोम–रोम मे तार दौड़ रहे हैं और उसके दाँत बज रहे हैं। ऐसे में लहनासिंह उसे सूखी लकड़ी के तख्तों पर सुलाता है। अपने साथ कम्बल उसे उढ़ाता है। अपनी गरम जरसी भी उसे पहनाता है, स्वयं सिगड़ी के सहारे जाड़ों की रातें काटता है और अपने गरम वरान कोट तक से उसको ढँक देता है। इस प्रकार यूरोप के मैदानी भू–भाग में स्थित जाड़े की ऋतु के साथ-साथ वहाँ के काल विशेष सम्बन्धी वातावरण का यथार्थ चित्रण करके लेखक ने कहानी को प्रभावपूर्ण बनाने का सजीव प्रयास किया है। लेखक ने तत्कालीन ऋतु का चित्रण करते हुए लिखा भी है कि 'लड़ाई के समय चाँद निकल आया था। ऐसा चाँद जिसके प्रकाश से संस्कृत–कवियों का दिया हुआ 'क्षयी' नाम सार्थक होता है और हवा ऐसी चल रही थीं जैसी कि बाणभट्ट की भाषा में 'दन्तवीणोपदेशाचार्य' कहलाती।"

वातावरण सम्बन्धी तीसरी विशेषता यह है कि लेखक ने यहाँ युगानुकूल परिस्थितियों का चित्रण करके कहानी में चार चाँद लगा दिये हैं। युगानुकूल परिस्थितियों के अन्तर्गत तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आदि परिस्थितियां आती हैं, जो किसी देश, समाज या जाति के आचार–विचार, उसकी सभ्यता एवं संस्कृति, लौकिक मान्यताओं आदि की द्योतक होती हैं। गुलेरीजी ने इस अमर कहानी में तत्कालीन परिस्थितियों का चित्रण बड़ी तत्परता एवं सजगता के साथ किया है। इस कहानी की मूलाधार द्वितीय विश्वयुद्ध की परिस्थितियाँ हैं। उस समय भारत में अंग्रेजी शासन था और अंग्रेजों की ओर से भारत की सिख रेजीमेंट फ्रांस –बेल्जियम के मैदान में जर्मनी के विरुद्ध लड़ने के लिए गई थी। लड़ाई के मैदान का सजीव एवं स्वाभाविक चित्रण करने के लिए ही यहाँ लेखक न भारतीय सिख सैनिकों को खन्दक के अन्दर मोर्चा लगाये हुए दिखाया है, जिस पर जर्मनों के तीस–तीस मन के गोले गिरते हैं, जिनकी भयंकर आवाज से कानों के भी परदे फटने का डर रहता है और जो सारी खन्दक को हिला देते हैं। खन्दकों में प्रायः सात दिनों तक एक टुकड़ी रखी जाती है और सात दिन बाद 'रिलीफ' आ जाती है। भारतीय सैनिकों को खुश रखने के लिए अंग्रेजी महिलायें उन पर

फल और दूध की वर्षा करती हैं, उनके लिए ऊनी जरसियाँ बुन–बुनकर भेजती हैं और उन्हें सिगरेट पिलाती हैं। परन्तु सिख तो सिगरेट पीते नहीं। अतः सिखों के सिगरेट न पीने पर वे यह समझती हैं कि राजा बुरा मान गया है और हमारे मुल्क के लिए नहीं लड़ेगा। अतः वे सभी तरह से भारतीय सैनिकों का स्वागत–सत्कार करती है। यह भी कभी–कभी होता है कि खन्दकों में कोई जर्मन अफसर अंग्रेजी अफसर अंग्रेजी अफसर का कपट–वेश धारण करके उन्हें धोखा देने एवं उनकी टुकड़ियों का सफाया करने आ जाता है। यहाँ लपटन साहब की घटना इसी कारण सच्ची एवं स्वाभाविक–सी लगती है और उसने आकर खन्दक को तीन गोले लगाकर उड़ाने का जो प्रयास किया है, वह भी स्वाभाविक है। परन्तु वह जैसे ही लहनासिंह नामक सि–जमादार को सिगरेट पीने के लिए देता है वैसे ही उसकी पोल खुल जाती है और उसकी योजना असफल हो जाती है। खन्दकों पर जर्मन–सैनिकों के आक्रमण होना, सिखों का मुकाबला करना और उस मुठभेड़ में सैनिकों का मरना अथवा घायल होना भी तत्कालीन युद्ध की परिस्थिति का जीता–जागता चित्र प्रस्तुत करता है।

इस कहानी में सामाजिक एवं सांस्कृतिक वातावरण की भी सृष्टि हुई है। इसीलिए यहाँ अमतसर के बम्बूकार्ट वालों की मनोवृत्ति एवं उनकी वचनावली का जीता–जागता चित्रण किया गया है। यह भी स्वाभविक ही है कि सिखों के बालकों के केश होते हैं और वे ढीले सुथने पहनते हैं। अपने केश धोने के लिए वे दही का प्रयोग करते हैं और भोजन में बड़ियाँ अधिक पकाते हैं। सिखों में कुड़माई की रसम जल्दी ही हो जाती है। यह भी सत्य है कि सिख तम्बाकू नहीं पीते और न सिगरेट का उपयोग करते हैं। साथ ही यह भी स्वाभाविक एवं मनोवैज्ञानिक है कि जब सिख–सैनिकमनोरंजन करते हैं तो गन्दे–गन्दे गाने भी गाते हैं, क्योंकि उनसे उनमें फिर ताज़गी आ जाती है। यह भी सत्य ही है कि द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान, पंजाब में ऐसे कई तुरकी मौलवी गाँव–गाँव में जाकर जर्मनी वालों की प्रशंसा करते हुए उनके लिए भारत में पृष्ठभूमि तैयार करने के लिए उनका प्रचार करते थे। वे गण्डा–ताबीज देकर लोगो में विश्वास पैदा करते थे और बताया करते थे कि "जर्मनी वाले बड़े पंडित हैं। वेद पढ़–पढ़कर उसमें से विमान चलाने की विद्या जान गये हैं। गौ को नहीं मारते और हिन्दुस्तान में आ जायेंगे तो गौ–हत्या बन्द कर देंगे।" वे लोग मंडी के व्यापारियों कोभी बहकाते थे कि डाकखाने से रुपया निकाल लो, क्योंकि अंग्रेजी सरकार का तो अब राज जाने वाला है आदि–आदि। यह भी सिखों की सभ्यता एवं संस्कृति के अन्तर्गत आता है कि वे जब कभी अपने से बड़े अफसर या अन्य व्यक्तियों के घर जाते हैंऔर उनकी पत्नियों से भेंट करते हैं, जब पहले उन्हें 'मत्था टेकना' कहते हैं और वे स्त्रियाँ असीस देती हैं।यह भी स्वाभाविक है कि सूबेदारनी जैसी महिला का पति और पुत्र दोनों ही जब लाम पर जा रहे हैं, तो उसके हृदय में बेचैनीएवं व्यग्रता होती है और अपने एक सुपरिचित एवं बचपन के रक्षक के सामने आँचल फैलाकर अपने पति एवं पुत्र की रक्षा के लिए भीख माँगती है।

इसके साथ ही तत्कालीन परिस्थिति को स्वाभाविक एवं यथार्थ रूप के लिए लेखक ने जो अन्त में अखबारों का सहारा लिया है, वह अत्यन्त सजीव एवं सार्थक है और कहानी के वातावरण की सच्चाई में जान डाल देता है।लेखक ने लिखा है – "कुछ दिन पीछे लोगों ने अखबारों में पढ़ा – फ्रांस और बेल्जियम – 68 वीं सूची–मैदान मेघावों से मरा – नं. 77 सिख रायफल्स जमादार लहनासिंह।" इस प्रकार इस कहानी में स्वाभाविकता एवं यथार्थता लाने के लिए लेखक ने सभी प्रकार से सजीव वातावरण की सृष्टि की है। इसे पढ़कर कभी पाठक रहस्य के आनन्द विभोर कर देने वाले

वातावरण में पहुँच जाता है, कभी आश्चर्य एवं कौतूहल से चकित हो उठता है, कभी करुणा से द्रवित होने लाता है और कभी कल्पना के सतरंगी वातावरण में विस्मय–विमुग्ध होकर रस–दशा को प्राप्त हो जाता है।

8.3.5. भाषा–शैली – कहानी के रचना–शिल्प का सम्बन्ध कहानी की रचना–शैली और कहानी की भाषा–शैली से होता है। जहाँ तक कहानी की रचना–शैली का सम्बन्ध है, कहानियों के लिए विविध शैलियाँ प्रचलित हैं। जैसे, कुछ कहानियाँ कथात्मक शैली में लिखी जाती हैं, तो कुछ आत्मचरित शैली में; कुछ पत्रात्मक शैली में लिखी जाती हैं और कुछ डायरी शैली में; कुछ नाटकीय शैली में लिखी जाती हैं, तो कुछ आत्मकथात्मक शैली में। साथ ही कतिपय कहानियों की रचना मिश्रित शैली में भी होती है, जिनमें एक से अधिक शैलियों का सम्मिश्रण किया जाता है। शैली के विविध भेदों में से गुलेरी जी ने 'उसने कहा था' की रचना कथात्मक अथवा ऐतिहासिक शैली में की है। इसी कारण यहाँ लेखक एक इतिहासकार की भाँति वर्णनात्मक पद्धति के अन्तर्गत घटनाओं, परिस्थितियों, रहन–सहन, लोक–व्यवहार, रीति–रिवाज, आचार–विचार आदि का विवरण प्रस्तुत करता हुआ कहानी की रचना करता है। यद्यपि कहानी के अन्तिम भाग में आत्मकथा का पुट दिया गया है और लहनासिंह अपने जीवन की भूतपूर्व घटनाओं का स्मरण करता हुआ उन्हें वजीरासिंह के सामने प्रस्तुत करता है, तथापि सम्पूर्ण कहानी में मुख्यता वर्णनात्मक या कथात्मक पद्धति ही अपनाई गई है। इतना अवश्य है कि पूर्वस्मृति के चित्रण से अथवा पूर्वदीप्ति (फ्लैशबैक) की पद्धति के अपनाने से कहानी के रचना–शिल्प में चारुता एवं रमणीयता आ गई है और कहानी शिल्प की दृष्टि से भी उत्तम बन गई है। इसके साथ ही लेखक ने आरम्भ में भूमिका का प्रयोग करते हुए अमृतसर के बाजार का जो जीता–जागता चित्र प्रस्तुत किया है वह पूर्णतया कलात्मक है और कहानी की संवेदना से पूर्णतया बद्ध है। इससे कहानी के आरम्भ में ही देश, काल और परिस्थिति का आंशिक हो गया है और पाठकों के हृदय में जिज्ञासा एवं कौतूहल का श्रीगणेश हो गया है। इस कहानी के आरम्भ में लेखक ने जहाँ संयोग का सहारा लिया है, वहीं इसके विकास में भी संयोग और घटनाओं ने विशेष योग दिया है। विकास की दृष्टि से यह कहानी तत्कालीन सभी कहानियों में श्रेष्ठ है, क्योंकि यहाँ विविध वर्णनों और घटनाओं के माध्यम से कार्य–व्यापार की योजना की गई है और वृति–चित्रों के द्वारा कहानी का पूर्ण विकास दिखाया गया है। कहानी का उपसंहार अत्यधिक चित्ताकर्षक एवं प्रभावोत्पादक है। यहाँ कहानी की चरम सीमा के उपरान्त उपसंहार को जोड़ने का प्रयास नहीं हुआ है, फिर भी अखबारों की खबर का विवरण देकर इस कहानी का जो उपसंहार किया गया है वह कहानी के प्रभाव से वृद्धि में अत्यधिक सहायक सिद्ध हुआ है और लेखक की कलात्मक चातुरी का द्योतक है। इस प्रकार रचना–शैली की दृष्टि से यहाँ आदि, मध्य और अन्त तीनों की योजना अत्यन्त कलात्मक ढंग से हुई है और उपसंहार के किंचित् स्पर्श मात्र से ही कहानी की स्वाभाविकता एवं यथार्थता के साथ–साथ उसकी प्रभविष्णुता में भी वृद्धि की है।

गुलेरीजी की इस अमर कहानी की भाषा–शैली भी अत्यन्त स्वाभाविक, सजीव एवं पात्रानुकूल है। विविध भाषाओं के पंडित होने के कारण गुलेरीजी ने अपनी इस कहानी में शुद्ध खड़ीबोली हिन्दी के साथ–साथ प्रादेशिक भाषा – पंजाबी का पुट देकर उसमें रमणीयता एवं सजीवता की वृद्धि की है, क्योंकि 'बचो खालसाजी', 'हटो भाई जी', 'ठहरना माई', 'आने दो लालाजी', के साथ–साथ 'हट जा जीणे जोगिए : 'हट जा करमावालिए; हट जा पुत्तां प्यारिए; जा लम्बीवालिए' आदि वाक्यों के प्रयोग ने भाषा–शैली को सरस एवं सुष्ठु बना दिया है। इसके साथ ही बीच–बीच में 'नगरे 'मांझे', 'बूटे',

'सुथना', 'झटका', 'मंजा', 'बेड़े', 'ओबरी', 'हाड़', 'कुड़माई', 'सालू', 'पाधा', 'लाड़ी होरां', 'मुरब्बे', 'बुलेल की खड्ड', 'वाह् गुरूजी दी फतह', 'वाह् गुरूजी दा खालसा', 'सत्त श्रीअकाल पुरुख' आदि पंजाबी भाषा के शब्दों एवं प्रयोगोने इस कहानी की भाषा–शैली को और भी जीवन्त रूप दे दिया है।

गुलेरी जी ने अपनी भाषा को स्वाभाविक एवं बोलचाल के नजदीक बनाने के लिए अरबी–फारसी के लोक–प्रचलित शब्दों का प्रयोग भी खुलकर किया है। इसी कारण यहाँ ज़बान, मरह्म, बिरादरी, सब, मज़ाल, खेमचा, फिरंगी, खन्दक, मनीम, ग़ैबी, ज़लज़ला, बेईमान, मख़मल, मुल्क, नसीब, ज़मीन, शरम, मुल्क, गुज़र, तख़्ता, मुरबबे, मौज, ज़बरदस्ती, सलाम, ज़ियादह, जवान, हुक्म, इशारा, हुज्जत, क़ैदी, ख़त्म, शिकार, खोता, मिजाज, बेशक, पाजी, क़यामत, वर्दी, सौह्रा, निशान, वक्त, मुहाना, तलाशी, हवाले, ल़फ्ज, खानसामा, मौलवी, मुल्ला, ताबीज, मुर्दा, फतह, कमरबंद, चाँद, कागज़ात, नज़दीक, साफ, सब्जी, मुक़दमा, पैरवी, दरवाज़ा, नमकहलाली, ख़िताब, अखबार आदि अरबी–फारसी के शब्द पर्याप्त मात्रा में आये हैं, परन्तु इनके कारण न तो भाषा के प्रवाह में कहीं बाधा पड़ी और न भावोंकी अभिव्यक्ति में ही जटिलता दिखाई दी है, अपितु इनके प्रयोग भाषा को अत्यन्त सरस, सरल एवं सुबोध बना दिया है।

गुलेरीजी ने अंग्रेजी, जर्मनी आदि योरोपीय भाषाओं के भी शब्दों एवं वाक्यों का प्रयोग करके अपनी भाषा–शैली को लोक–प्रचलित एवं पात्रानुकूल बनाने का सुन्दर प्रयास किया है। भारत में आज तक प्रायः फौजी अफसर से लेकर सैनिक अपनी बोलचाल में अंग्रेजी के शब्दों का व्यवहार नित्यप्रति किया करते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर लेखक ने अंग्रेजी के कितने ही लोक–प्रचलित सेना में प्रचलित शब्दों का प्रयोग किया है। जैसे, बम्बूकार्ट, रिलीफ, मार्च, जनरल कमान, सिगरेट, निमोनियाँ, बिस्कुट, टीन, बरानकोट, रेजिमेंट, मैस, डायरी, पिस्तौल, हैनरी मार्टिन, फायर, टेलीफोन, बूट, डाक्टर, फील्ड अस्पताल, राइफल क्वार्टर, पलटन, टाँगा आदि यूरोपीय भाषा के शब्दों का प्रयोग किया गया है, एक हर्मन–अफसर के मुँह से 'आख! मीन गौट्ट' (हाय, मेरे राम) कहलवाया जर्मनी भाषा का भी प्रयोग किया गया है।

गुलेरीजी ने ग्लानि, निराशा, क्षोभ, अवतार, समष्टि, योग्य, भाग्य, उत्तम सम्भावना, विरुद्ध, वैष्णवी, उपाधि, सूर्य, तर्पण, राजा, रोम–रोम, गुरू, मन्दिर, निश्चय, सन्देह, प्रकाश, संस्कृत–कवि, क्षयी, 'दन्तवीणोपदेशाचार्य', प्राण, स्मृति, मृत्यु, घटना, क्रोध, भिक्षा, जन्म, विद्या, विमान आदि कतिपय शुद्ध तत्सम शब्दों का प्रयोग किया है, तो इनसे कहीं अधिक ऐसे तद्भव शब्दों को अपनाया है, जो रात–दिन बोलचाल की भाषा में प्रयुक्त होते हैं और जो हिन्दी की अपनी धरोहर होने के कारण भाषा–शैली के सौंदर्य एवं माधुर्य की अभिवृद्धि में सहायक होते हैं। जैसे को ,पीठ,कान, आँख, चितौनी, नाक, जंगल, राह, बुढ़िया, पहिया, दही, घर, दूध, मोरी, पत्थर, गोभी, हड्डी, कींच, मत्था, चक्कर, बाड़ी, खाद, गबुना, ओठ, सिगड़ी, मंदिर, मौत, हाथ, आम, अँधेरा, पसीना, खेत, मुँह, माथा, पत्ता, चित्त, गाँव, सन्नाटा, पुट्ठे, बच्चे, जाँघ, कुत्ता, मांस, लहू, आग, धुंध, आठ, असीस, भाग, आँचल, आँसू आदि कितने ही ऐसे तद्भव एवं बोलचाल के शब्दों का प्रयोग हुआ है, जिनके कारण भाषा–शैली रोचक एवं मार्मिक बन गई है।

गुलेरीजी ने अपनी भाषा–शैली को अत्यधिक मार्मिक, लाक्षणिक एवं व्यंजनात्मक बनाने के लिए उसे मुहावरों से भली–भाँति सजाया है। जैसे, "जबान के कोड़ों से पीठ छिलना', 'बोली का मरहम लगाना', 'नानी से निकट सम्बन्ध स्थिर करना', 'तरस खाना', 'नाक की सीध चले जाना', 'सब्र का समुद्र उमड़ना', 'जंगल में से राह खेना', 'जबान का

मीठी छुरी की तरह महीनमार करना', 'अंधे की उपाध्गि देना', 'फल और दूध की वर्षा करना', 'चार दिन तक पलक न झेंपना', 'बिना फेरे का बिगड़ना', 'संगीन देखत ही मुँह फाड़ देना', 'दूर की सोचना', 'हड्डियों में जड़े का धँस जाना', 'उदासी के बादल फट जाना', 'सिपाहियों का ताजा हो जाना', 'सन्नाटा छा जाना', 'रोम–रोम में तार दौड़ना', 'माथा ठनकना', 'कयामत होना', 'आँखें लगने देना', 'पत्ता तक न खड़कना', 'एक–एक अकालिया सिख सवा लक्ख के बराबर होना', 'चकमा देने के लिए चार आँखें होना', 'गाँव में पैर रखना'; लड़का हआ कुत्ता आना', 'दो चक्की के पाटों के बीच में आ जाना', 'स्मृति का साफ होना' 'जन्म भर की घटनाओं का एक–एक करके सामने आना', 'सारे दृश्यों का साफ हो जाना', 'समय की धुंध का हट जाना', 'भाग फूट जाना', 'आगे आँचल पसारना' आदि मुहावरों ने इस कहानी की भाषा–शैली को सुन्दर, सरस, जीव एवं सौष्ठव–सम्पन्न बना दिया है।

गुलेरी जी ने अपनी भाषा–शैली को सरल, स्वाभाविक एवं लोकप्रचलित बोलचाल की भाषा से सुसज्जित करने के अतिरिक्त हास्य–व्यंग्य का भी पुट दिया है, जिससे उसमें मनोरंजकता एवं सजीवता के साथ–साथ मनोवैज्ञानिकता का भी संचार हुआ है; उदाहरण के लिए; आरम्भ में बम्बूकार्ट वाले की वचनावली – "हटा जा जीणे जोगिए; हट जा करमावालिए' – आदि में हास्य–व्यंग्य भरा हुआ है। साथ ही तेरी कुड़माई हो गई' तथा 'धत्' जैसे वचनों में भी सजीव हास्य के दर्शन होते हैं। पल्टन के विदूषक वजीरासिंह के वाक्यों में भी सुन्दर हास्य–व्यंग्य विद्यमान है। जैसे, वह खाई का गँदला पानी बाहर फेंकता हुआ कहता है – "मैं पाधा बन गया हूँ। करो जर्मन के बादशाह का तर्पण।' साथ ही लहनासिंह की वाक्यावली भी उज्ज्वल हास्य से परिपूर्ण है, जब वह वजीरासिंह से कहता है – 'लाड़ी होरां को भी यहाँ बुला लोगे या वही दूध पिलाने वाली फिरंगी मेम।" इतना ही नहीं, सिख सैनिक का गाना भी हास्य–रस के संचार में अत्यधिक सहायक सिद्ध हुआ है; साथ ही लहनासिंह जब नकली लपटन साहब का रहस्य जानने के लिए उससे बातें करता है, उनमें कितना सुन्दर, सजीव एवं शिष्ट हास्य–व्यंग्य के दर्शन होते हैं। लहनासिंह उसकी असलियत का पता लगाने के लिए इस तरह उल्टी–सीधी बातें करता है कि जगाधरी के जंगल में नीलगायें थीं। नीलगायों के बड़े–बड़े दो–फुट चार इंच के सींग थे। साहब खोते पर सवार थे। खानसामा अब्दुल्ला रास्ते में एक मंदिर में जल चढ़ाने रह गया था। तभी तो लहनासिंह हँसकर उस कपटी पलटन साहब से कहता है– "क्यों लपटन साहब, मिजाज कैसा है? आज मैंने बहुत बातें सीखीं। यह सीखा कि सिख सिगरेट पीते हैं। यह सीखा कि जगाधरी के जिले में नीलगायें होती हैं और उनके दो फुट चार इंच के सींग होते हैं। यह सीखा कि मुसलमान खानसामा मूर्तियों पर जल चढ़ाते हैं और लपटन साहब खोते पर चढ़ते हैं।" ये सभी बातें शिष्ट हास्य–व्यंग्य के साथ–साथ भाषा–शैली की सजीवता एवं मार्मिकता की द्योतक हैं, जिनसे कहानी ने जीवन्त रूप धारण कर लिया है।

इसके साथ ही गुलेरी जी ने अन्त में 'उसने कहा था' वाक्य का बार–बार प्रयोग करके पूर्वदीप्ति के माध्यम से लहनासिंह के स्मृति–चित्रों का निरूपण किया है, वह भाषा–शैली का बेजोड़ उदाहरण है। इससे भाषा–शैली में रोचकता, सजीवता, मधुरता एवं सरसता का संचार हुआ है और पाठकों के हृदय पर उसका जो स्थायी प्रभाव पड़ता है ऐसा तत्कालीन कहानियों की किसी भी भाषा शैली में दृष्टिगोचर नहीं होता।

इस प्रकार गुलेरीजी ने पात्र, परिस्थिति एवं कार्य–व्यापार के सर्वथा अनुसार भाषा–शैली का प्रयोग करके अपने रचना–शिल्प को मार्मिक एवं मनोरंजक बनाया। छोटे–छोटे वाक्यों में सरस एवं स्वाभाविक शब्दावली का

प्रयोग करके कथा–प्रवाह को विलक्षण गति प्रदान की है, चमत्कारपूर्ण रचना–शैली द्वारा कहानी की संवेदना को आदि से अन्त तक बराबर बनाये रखने का सजीव प्रयास किया है, बीच–बीच में हास्य–व्यंग्य की व्यंजना द्वारा शैली को रोचक एवं प्रभवोत्पादक बनाया है और भाषा में सरलता, स्वाभाविकता, सुष्ठुता एवं मधुरता का संचार करके उसे जन–साधारण के अनुकूल बनाने का सजीव प्रयत्न किया है। यहाँ जीवन्त भाषा–शैली के द्वारा पूरी कहानी में भाषा, परिवेश एवं चेतना को एकरूपता प्रदान करने की योजना सफल दिखाई देती है और कथा की समूची बनावट को भी सजीव भाषा–शैली को द्विगुणित सौंदर्य प्रदान किया है। निस्संदेह, इस कहानी की रचना–शैली एवं भाषा शैली प्रौढ़ एवं प्रांजल है, क्योंकि भाषा की लाक्षणिकता एवं व्यंजनात्मकता ने उस काल के सभी लेखकों को मात कर दिया है तथा जीवन की विविध परिस्थितियों, पात्रों की विभिन्न मनोदशाओं एवं घटनाओं के नाना घात–प्रतिघातों के चित्रण में गुलेरीजी की भाषा पूर्णतया सशक्त एवं सक्षम दिखाई देती है की भाषा सर्वत्र भावानुकूल प्रवाहमान होती हुई एक स्रोतस्विनी की भाँति अपने गन्तव्य–स्थल तक पहुँच गई है और अपने मधुर, शीतल एवं सरस स्पर्श से साधारण से साधारण पाठक को भी आनन्द–विभोर करती हुई कहानी की मार्मिकता एवं प्रेषणीयता की वृद्धि में सहायक सिद्ध हुई है।

8.3.6. उद्देश्य – साहित्य की अन्य विधाओं की भाँति कहानी का उद्देश्य भी जीवन की व्याख्या करना माना गया है। परन्तु कहानीकार अपनी कहानी में सम्पूर्ण जीवन की व्याख्या नहीं करता, अपितु वह परोक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में जीवन के किसी एक अंश की ओर ही संकेत करता है। कहानी के लघु परिवेश एवं लघु चित्र पृष्ठ पर समग्र जीवन का चित्रण सम्भव भी नहीं है। साथ ही कहानीकार एक उपदेशक या दार्शनिक मीमांसक की भाँति कुछ नहीं कहता, वरन् परोक्ष रूप में वह जीवन के लिए एक ऐसा आदर्श छोड़ जाता है, जो युगयुगान्तर तक मानव मात्र के लिए पथ–प्रदर्शक बना रहता है। उद्देश्य की दृष्टि से प्रायः तीन प्रकार की कहानियाँ मिलती हैं – एक तो आदर्श से पूर्णतया अनुप्रेरित होने के कारण आदर्शवादी कहलाती हैं, दूसरी यथार्थ से परिपूर्ण होने के कारण यथार्थवादी होती है और तीसरी यथार्थ और आदर्श से समन्वित होकर यथार्थ की पृष्ठभूमि पर किसी आदर्श की स्थापना करने के कारण आदर्शोन्मुख यथार्थवादी मानी जाती है। कहने की आवश्यकता नहीं कि 'उसने कहा था' कहानी में निःस्वार्थ एवं विशुद्ध प्रेम तथा अटूट विश्वास कोआधार बनाकर त्याग, बलिदान एवं कर्त्तव्यनिष्ठा का जो आदर्श उपस्थित किया गया है, वह यथार्थ जीवन की ठोस पृष्ठभूमि पर स्थित है और लेखक ने भी यथार्थता की नींव पर आदर्श के भवन का ही निर्माण किया है। अतंएव इस कहनी को भी आदर्शोन्मुख यथार्थवाद से प्रेरित कहा जाय तो अनुचित नहीं है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि 'उसने कहा था' कहानी में व्यक्ति, समाज और वर्ग तीनों के उच्चतम आदर्श की स्थपना हुई है; नीति, सदाचार और जीवन के उन्नत मान को स्थिर किया गया है, कर्त्तव्य की बेदी पर 'पर' के लिए 'स्व' का उत्सर्ग दिखाया गया है, आदर्श चरित्र की आकर्षक झाँकी द्वारा मानवीय अनुभूतियों को जाग्रत करने का सफल प्रयास किया गया है, त्याग और बलिदान की भारतीय परम्परा का निर्वाह किया गया है, नारी के उदात्त एवं गहन प्रेम और अटूट विश्वास की नींव पर स्थित निःस्वार्थ प्रेम, कर्त्तव्य और आत्मोसर्ग की पुरुषोचित उदात्त भावना का चित्रण किया गया है, बचपन में अंकुरित आकर्षण एवं प्रेम की भावना के द्वारा प्रेरित एवं जाग्रत अपराजेय वीरता एवं कर्त्तव्यनिष्ठा का मार्मिक निरूपण भी हुआ है और शैशव की मीठी घटना के माधुर्य से अनुप्रेरित पुरुषार्थी व्यक्तित्व के बलिदान की गम्भीर करुणा का चित्रण भी अत्यन्त सजीवता के साथ हुआ है। परन्तु यहाँ यथार्थवाद की पृष्ठभूमि पर सुरुचि की चरम मर्यादा के

अन्तर्गत भावुकता का जो चरमोत्कर्ष अंकित किया गया है वह इस कहानी की अभूतपूर्व देन है। साथ ही आदर्शके एक बिन्दु में परिचालित होकर भी यह कहानी यथार्थ के एक व्यापक विस्तार में फैली हुई है, इसमें आदर्श और यथार्थ का मणिकांचन योग हुआ है और इसमें उदात्त चरित्र एवं मानवीय संवेदना की गहनता के साथ–साथ यथार्थ और आदर्श का जो सजीव सम्मिश्रण हुआ है, वैसा तत्कालीन कहानियों में अन्यत्र मिलना सर्वथा दुर्लभ है। इसी कारण उद्देश्य की दृष्टि से 'उसने कहा था' कहानी को आदर्शोन्मुख यथार्थवादी रचना कहना अधिक समीचीन है और गुलेरीजी का दृष्टिकोण भी यही रहा है, तभी उन्होंने द्वितीय विश्वयुद्ध की ठोस एवं यथार्थ पृष्ठभूमि पर इस आदर्शमयी कहानी की रचना की है और सभी प्रकार के मानवीय चरित्रों के मध्य दो उदात्त चरित्रों की सृष्टि करके यथार्थ और आदर्श का सफल समन्वय स्थापित किया है।

8.4 'ईद का त्योहार' कहानी की तत्वों के आधार पर समीक्षा

8.4.1 कथावस्तु : मुंशी प्रेमचन्द ने 'ईद का त्योहार' कहानी में आर्थिक दृष्टि से विपन्न एक बच्चे हामिद के माध्यम से समाज के निम्न वर्ग के बच्चों की स्थिति का चित्रण किया है। प्रस्तुत कहानी की कथा हामिद और उसके परिवार के इर्द–गिर्द बुनी गई है। शिशु मनोविज्ञान को भी कथा का आधार बनाया गया है। हामिद अपनी बूढ़ी दादी अमीना के साथ रहता है जिसने उसकी माँ के देहान्त के बाद उसका पालन–पोषण किया है। ईद का दिन आने पर किस तरह उसका मन भी खुशी में झूम उठता है और मेले में जाने की उत्सुकता उसके मन में उड़ान भरने लगती है परन्तु दादी चिन्तित है कि एक अकेला बालक मेले में कैसे जाएगा। उसकी स्थिति कहानी में देखिए – ''अभागिन अमीना अपनी कोठरी में बैठी रो रही है। आज ईद का दिन और उसके घर में दाना नहीं। आज आबिद होता तो क्या इसी तरह ईद आती और चली जाती।'' दादी इसीलिए पीड़ा का अनुभव कर रही है कि हामिद किस तरह ईद मनाएगा। इस तरह लेखक ने पूरी कथा ईद के त्योहार के इर्द–गिर्द बुनकर पाठकों के सामने रखी है। कथा पाठकों के मन पर गहरा प्रभाव छोड़ती है।

8.4.2 पात्र–योजनाः– 'ईद का त्योहार' कहानी में हामिद प्रमुख पात्र है जबकि अन्य पात्र दादी और हामिद के मित्र कथा को गति देने में सहायक हैं। कथा को आगे बढ़ाने में पात्र प्रमुख भूमिका निभाते हैं। घर की दयनीय आर्थिक स्थिति से दादी चिन्तित है कि हामिद ईद के मेले का आनंद कैसे उठाएगा। दादी अमीना उसे अन्य बच्चों के साथ मेला देखने भेजती है और मेले में चलते समय स्थान –स्थान पर उसके चरित्र की विशेषताएँ उद्घाटित होती हैं। हामिद अन्य बालकों के साथ मेले में जाता अवश्य है परन्तु वहाँ भी उसे अपने से ज्यादा अपनी दादी का ध्यान रहता है। जहाँ अन्य बच्चे मिठाइयाँ खाते हैं, खिलौने लेकर मेले का मज़ा लेते हैं, वहीं उसे ये सब चीज़ें व्यर्थ लगती हैं और वह दादी के लिए रोटियां सेंकने के लिए चिमटा ले लेता है। मेले में उसके मित्र और कहानी के अन्य पात्र– मोहसिन, महमूद, नूर, सम्मी कहानी की कथा को गति देने में सहायक हैं।

दादी अमीना का चरित्र स्वाभाविक और पूर्णतः कथानुरूप है। वह अपने पोते हामिद के प्रति चिन्तित है जो कि स्वाभाविक स्थिति को उजागर करती है। हामिद के हाथ में तीन पैसे का लोहे का चिमटा देखकर वह क्रोधित हो जाती है परन्तु हामिद के जवाब से द्रवित भी हो जाती है– ''तुम्हारी उँगलियाँ तवे से जल जाती थीं, इसलिए मैंने इसे ले लिया।'' यह सुन दादी का हृदय पसीज जाता है और तुरन्त हामिद के लिए स्नेह उमड़ आता है। दादी की मनः

स्थिति का चित्रण कहानीकार ने इस तरह किया है– ''बच्चे में कितना त्याग, कितना सद्भाव और कितना विवेक है। दूसरों को खिलौने लेते और मिठाई खाते देखकर इसका मन कितना ललचाया होगा।'' इस तरह कहानी के प्रमुख पात्र और गौण–पात्र कथा वृद्धि में सहायक हैं।

8.4.3 कथोपकथन : कहानी के संवाद सरल, सटीक पात्रानुकूल और संक्षिप्त होने चाहिए। इस कहानी के विषय में बात करें तो संवादों का चयन प्रेमचन्द ने पात्रों और स्थितियों के अनुकूल किया है। हामिद, दादी और उसके मित्रों के संवाद कहानी के उद्देश्य तक पहुँचाने में सफल हैं। हामिद का दादी को चिन्तित देखकर छोटा सा संवाद पाठक पर भी प्रभाव छोड़ता है। हामिद भीतर जाकर दादी से कहता है – तुम डरना नहीं अम्मा, मैं सबसे पहले जाऊँगा। बिल्कुल न डरना''।

मेले में इन मित्रों के छोटे–छोटे संवाद कथा को रूचिकर बनाते हैं। मोहसिन, महमूद, नूर और सम्मी का संवाद देखिए –

मोहसिन – मेरा भिश्ती रोज पानी दे जाएगा;

साँझ – सवेरे।

महमूद – और मेरा सिपाही घर का पहरा देगा।

कोई चोर आवेगा, तो फौरन बन्दूक से फैर कर देगा।

नूर– और मेरा वकील खूब मुकदमा लड़ेगा।

सम्मी – और मेरी धोबिन रोज कपड़े धोएगी।

ये छोटे और प्रभावशाली संवाद पाठक को भी प्रभावित करते हैं।

हामिद का अपने मित्रों के साथ किया गया संवाद कथा को गति देता है। अपने–अपने खिलौनों की प्रशंसा करते ये बालक स्वाभाविक लगते हैं तो हामिद भी दादी के लिए खरीदे गए चिमटे की खूबियाँ बताता है–

सम्मी ने खंजरी ली थी। प्रभावित होकर बोला – मेरी खंजरी से बदलोगे? दो आने की है। हामिद ने खंजरी की ओर उपेक्षा का पेट फाड़ डाले। बस, एक चमड़े की झिल्लीं लगा दी, ढब, ढब बोलने लगी। ज़रा सा पानी लग जाए तो खत्म हो जाए। मेरा बहादुर चिमटा आग में, पानी में, तूफान में, बराबर डटा खड़ा रहेगा।'' यथास्थिति को उजागर करने के लिए थोड़ा लम्बा संवाद भी कथा पर भारी नहीं पड़ता अपितु कथा को अभिव्यक्त करने में सहायक है। अतः कहानी के संवाद लेखक की सफलता के परिचायक हैं।

8.4.4. देशकाल और वातावरण – यह कहानी पारिवारिक वातावरण का चित्रण तो करती ही है परन्तु साथ ही समाज के अन्दर उच्च वर्ग और निम्न वर्ग का चित्रण इस परिवार की आर्थिक मंदहाली के द्वारा करती है। ईद के त्यौहार के दिन जहाँ उच्च वर्ग के अंदर खुशहाली दिखती है वहीं गरीब परिवार किस तरह त्यौहार के दिन भी चिन्तित है। हामिद की दादी अमीना की यही चिन्ता है कि ईद का त्यौहार इस तंगहाली में कैसे मनाया जाए।

'उस दिन फहीमन के कपड़े सिए थे। आठ आने पैसे मिले थे । उस अठन्नी को ईमान की तरह बचाती चली आती थी इसी ईद के लिए, लेकिन कल ग्वालिन सिर पर सवार हो गई तो क्या करती।''

8.4.5. भाषा –शैली –ईद का त्योहार कहानी की भाषा सरल, सहज, स्वाभाविक एवं पात्रानुकूल है। हामिद की भाषा बाल–सुलभ भावों से ओत–प्रोत है तो दादी की भाषा भी उसकी स्थिति को अभिव्यक्त करने में सशक्त माध्यम बनती है। कहानी के आरंभ में ही भाषा अपना प्रभाव जमा लेती है जब लेखक ईद के त्योहार के दिन का वर्णन करता है – ''रमज़ान के तीस रोज़ों के बाद आज ईद आई है। कितना मनोहर कितना सुहावना प्रभात है। वृक्षों पर अजीब हरियाली है, खेतों में कुछ अजीब रौनक है, आसमान पर कुछ अजीब लालिमा है।'' भाषा के इस प्रभाव से पाठक कथा से जुड़ता जाता है।

कहानी के पात्र हामिद की स्थिति को उजागर करती लेखक की भाषा देखिए – ''वह चार–पाँच साल का गरीब –सूरत, दुबला–पतला लड़का, जिसका बाप गत–वर्ष हैजे की भेंट हो गया और माँ न जाने क्यों पीली होती–होती एक दिन मर गई।'' भाषा की इसी प्रभावोत्पादकता के कारण पाठक अंत तक पात्रों और कथा से जुड़ा रहता है।

मेले के वातावरण को भी भाषा के माध्यम से लेखक ने सशक्त अभिव्यक्ति दी है – ''इधर दुकानों की कतार लगी हुई है। तरह–तरह के खिलौने हैं – सिपाही और गुजरिया, राजा और वकील, भिरती और धोबिन और साधू। वाह! कितने सुन्दर खिलौने हैं।'' इस तरह कहानी की भाषा प्रभावशाली है।

8.4.6. उद्देश्य : 'ईद का त्योहार' कहानी पारिवारिक कहानी होने के साथ–साथ सामाजिक कहानी है। लेखक ने बड़ी कुशलता से हामिद के परिवार और समाज में उच्च वर्ग और निम्न वर्ग की स्थिति का चित्रण किया है। ईद के त्योहार के जश्न के दिन गरीब अमीना और हामिद की मनः स्थिति के चित्रण के साथ लेखक ने समाज में उपस्थित कई ऐसे पीड़ितों का चित्रण किया है। हामिद मेले में जाता है परन्तु कम पैसों के कारण उसका अन्तर्मन दुविधा में रहता है कि वह खिलौने ले, मिठाइयाँ खाए या दादी के लिए चिमटा ले क्योंकि दादी की उँगलियाँ रोटियाँ सेंकते समय जल जाती हैं। अन्ततः वह चिमटा ही लेता है और दादी को ले जाकर देता है। दादी उसे देखकर क्रोधित होती है परन्तु जब वास्तविकता पता चलती है तो उसका क्रोध स्नेह में बदल जाता है। इस तरह लेखक ने एक विशेष दिन अर्थात् ईद के त्योहार को कथा का केन्द्र बनाकर समाज में निम्न वर्ग की स्थिति को उजागर किया है और अपने उद्देश्य में लेखक सफल भी रहा है।

8.5 'छोटा जादूगर' कहानी की तत्वों के आधार पर समीक्षा

उत्तर 'छोटा जादूगर' बाल्य जीवन की एक ऐसी कहानी है जिसमें आर्थिक विपन्नता से ग्रसित एक 'स्ट्रीट बॉय' के चरित्र को आदर्शात्मक रूप से उभारा गया है। बालक की चतुराई, मधुर व्यवहार, क्रिया कौशल और मातृभक्ति देखकर सहृदय मन द्रवित हुए बिना नहीं रहता।

8.5.1. कथानक – प्रसाद ने 'छोटा जादूगर' कहानी का कथानक एक आर्थिक अभाव से ग्रसित परिवार के ईद–गिर्द बुना है। कहानी में उस परिवार का वह लड़का कथानक का केन्द्र बिन्दु है जो

अपने आर्थिक अभाव के कारण दु:खी है परन्तु माँ के इलाज और पेट पालने के लिए वह गलियों और मेलों में करतब दिखाकर पैसा कमाने की कोशिश करता है। छोटा जादूगर कथाकार को पहली बार एक मेले में मिलता है जहाँ वह उसे बताता है कि बीमार माँ के इलाज के लिए वह पैसे कमाता है। कथाकार उसकी स्थिति देख द्रवित हो जाता है। कथाकार उसे बार–बार मिलता है और उसके घर की हालत जानना चाहता है। कथानक के आरम्भ, अरोह, चरमस्थिति, अवरोह और अन्त नामक पाँचों स्थितियों का चित्रण भी कहानीकार ने बड़ी सजीवता के साथ किया है। आरम्भ से अन्त तक कथानक पाठकों को बांधे रखता है। अन्त और भी द्रवित करने वाला है जब उदास छोटा जादूगर सड़क के किनारे करतब दिखा रहा है तो कथाकार के पूछने पर वह बताता है कि उसकी माँ ने कहा था कि अब उसकी घड़ी समीप आ गई इसलिए जल्दी आ जाना। कथाकार उसे लेकर झोंपड़े के पास पहुँचता है तो उसकी माँ आखरी साँसे ले रही होती है। इस तरह कथानक का पूरा प्रभाव पाठक वर्ग पर पड़ता है।

8.5.2. चरित्र –चित्रण – 'छोटा जादूगर' कहानी का प्रमुख पात्र 'छोटा जादूगर' ही है क्योंकि शुरू से अन्त तक कहानी में वह छाया रहता है। चरित्र प्रधान कहानी होने के कारण प्रमुख रूप से उसके चरित्र के माध्यम से ही कथा को गति मिलती है। पाठक भी उससे प्रभावित हुए बिना नहीं रहता।

यह छोटा लड़का कहानी में आर्थिक विपन्नता की समस्या को लेकर सामने आता है। उसके चरित्र को सर्वप्रथम उसकी चतुराई के माध्यम से उद्घाटित किया गया है। जब कथाकार द्वारा उसे शरबत पिला देने पर वह कहता है – ''मुझे शरबत न पिलाकर आपने मेरा खेल देखकर मुझे कुछ दे दिया होता, तो मुझे अधिक प्रसन्नता होती।''

उसके मधुर व्यवहार मोहने वाला है। वह कथाकार को आग्रह करता है कि वह अपना खेल दिखाना चाहता है। उसके मधुर व्यवहार को देखकर कथाकार की पत्नी भी द्रवित हो जाती है और उसे खेल दिखाने के लिए कहती है।

अपने काम में वह कुशल है और करतब दिखाकर लोगों का दिल जीतना उसे अच्छी तरह आता है। खेल –तमाशा दिखाते समय उसकी कुशलता का चित्रण कहानीकार ने किया है "ताश के सब पत्ते लाल हो गए। फिर सब काले हो गए। गले की सूत की डोरी टुकड़े–टुकड़े होकर जुड़ गई। लट्टू अपने–आप नाच रहे थे।"

उसके चरित्र की सबसे बड़ी विशेषता है मातृभक्ति। माँ से उसका प्रेम बालक होते हुए भी प्रौढ़ता से भरा है। सुबह से रात तक उसे माँ की बीमारी की चिन्ता है। खेल दिखाकर घर लौटकर माँ की देखभाल करना ही उसका काम है। उसका यह कथन उसकी इस विशेषता को स्पष्ट करता है– ''जब कुछ लोग खेल–तमाशा देखते ही हैं, तो मैं क्यों न दिखाकर माँ की दवा–दारू करूँ और अपना पेट भरूँ।''

कहानी में कथाकार स्वयं भी कथा को गति देने में सहायक हुआ है। छोटा जादूगर की माँ गौण पात्र है परन्तु कथा में उसके विषय में की जाने वाली बात भी कथा में सहायक है।

इस प्रकार प्रसाद के चरित्र–चित्रण में पूर्ण स्वाभाविकता है। कहानी में अपेक्षित कथा के आधार पर ही पात्रों

की योजना हुई है।

8.5.3. संवाद– कहानी में संवादों का प्रमुख उद्देश्य रहता है चारित्रिक विशेषताओं का उद्‌घाटन करना और कथानक को अग्रसर करने में सहायता लेना। लेखक ने इस उद्देश्य की पूर्ति बड़ी कुशलता एवं तत्परता से की है। कहानी को रोचक और प्रभावशाली बनाने के लिए संवादों का सहारा लिया जाता है।

'छोटा जादूगर' कहानी के संवादों में भी ये विशेषताएँ प्रमुख रूप से देखने को मिलती हैं। संक्षिप्त संवाद कथा को गति देने में सहायक होते हैं। इस कहानी में संक्षिप्त संवादों से रोचकता बढ़ी है। जैसे–

''तुम्हारे और कौन है?''

''माँ और बाबूजी।''

''उन्होंने तुमको यहाँ आने के लिए मना नहीं किया?''

''बाबूजी जेल में है।''

''क्यों?''

''देश के लिए।''

स्थानीय वातावरण की पूरी झाँकी प्रस्तुत करते हुए संवाद प्रभावशाली हैं। व्यावहारिकता से परिपूर्ण संवाद कहानी की कथा को अभिव्यक्त करते हैं। जब कथाकार की पत्नी छोटा जादूगर को 'लड़के' कहकर बुलाती है तो वह कहता है–

''छोटा जादूगर कहिए। यही मेरा नाम है। इसी से मेरी जीविका है।''

''अच्छा तुम इस रूपए से क्या करोगे?''

''पहले भर पेट पकौड़ी खाऊँगा। फिर एक सूती कम्बल लूँगा।''

संवादों में भावुकता, सरसता, कोमलता, शिष्टता और सरलता के साथ–साथ मानवीय संवदेना की कारूणिक व्यंजना भी है। 'छोटा जादूगर' के अपनी बीमार माँ के लिए कहे गए शब्द करूणा को अभिव्यक्त करते हैं– ''माँ ने कहा है, कि आज तुरन्त चले आना। मेरी घड़ी समीप है।''

इस प्रकार प्रसाद ने संक्षिप्त, स्वाभाविक, सरस, सजीव, मार्मिक, मनोरंजक और व्यावहारिकता से भरे हुए संवादों से कहानी में रोचकता भर दी है।

8.5.4 वातावरण – कहानी में वातावरण से अभिप्राय देश, काल और समाज सम्बन्धी विशेषताओं से होता है।

'छोटा जादूगर' कहानी में वातावरण का पूरा ध्यान रखा गया है। कार्निवल का चित्रण करते हुए लेखक ने पूरा ध्यान रखा है कि वातावरण की सृष्टि में वह सहायक हो – ''कार्निवल के मैदान में बिजली जगमगा रही थी। हँसी और विनोद का कलनाद गूँज रहा था।''

कलकत्ता के उद्यान का चित्रण करते समय भी कहानीकार ने उस वातावरण की सफल सृष्टि की है – कलकत्ता के सुरम्य बोटानिकल–उद्यान में लाल कमलिनी से भरी हुई एक छोटी–सी झील के किनारे घने वृक्षों की छाया में अपनी मण्डली के साथ बैठा हुआ मैं जलपान कर रहा था।''

इस तरह वातावरण की सृष्टि करने में कहानीकार पूर्ण रूप से सफल रहा है।

8.5.5 भाषा शैली – कहानी में भाषा–शैली का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस कहानी में लेखक ने भाषा शैली का पूरा ध्यान रखा है। भाषा भावों को अभिव्यक्त करने में पूर्ण रूप से सफल रही है।

प्रसाद की इस कहानी की भाषा स्वाभाविक, सजीव और पात्रानुकूल है। शुद्ध खड़ीबोली का प्रयोग करते हुए कहानी की रोचकता का पूरा ध्यान रखा गया है। भाषा की सरलता का विशेष ध्यान रखा गया है फिर भी कही–कहीं तत्सम शब्दों का प्रयोग और तद्भव शब्दों का प्रयोग भी किया है। मिश्रित शब्दावली का प्रयोग करके प्रसाद ने कहानी की भाषा को प्रभावशाली बना दिया है। जहाँ बोलचाल की भाषा के शब्द भी कहानी में स्थान–स्थान पर आए हैं जैसे– कार्निवल, टिकट, आफिस कलनाद, आकर्षित, प्रगल्भता, पथ्य, लट्टू, उद्यान, जाँघिया, जीविका, अस्ताचलगामी, ऊब, स्फूर्तिमान, तिरस्कार, नृत्य आदि।

इस तरह प्रसाद ने अपनी भाषा शैली को सरल, स्वाभाविक एवं लोकप्रचलित बोलचाल की भाषा से सुसज्जित किया है।

8.5.6 उद्देश्य –साहित्य निरूद्देश्य नहीं होता। रचनाकार की रचना के पीछे उद्देश्य अवश्य रहता है। प्रस्तुत कहानी में लेखक ने समाज के आर्थिक स्थिति से विपन्न उन परिवारों का चित्रण किया है जो इस स्थिति में ही जीवन बिता देते हैं और उसी में उनका जीवन समाप्त भी हो जाता है। 'छोटा जादूगर' का पात्र वह लड़का जो अपनी बीमार माँ की दवा–दारू के प्रबन्ध के लिए 'स्ट्रीट बॉय' बनकर तमाशे दिखाकर चार पैसे कमाकर कमाना चाहता है। वह लड़का समाज के उन लोगों का चित्रण करता है जो इस स्थिति से गुजर रहे हैं।

समाज के इन्हीं त्रस्त लोगों के जीवन को उद्घटित करना कहानीकार का प्रमुख उद्देश्य है। 'छोटा जादूगर' कहानी उद्देश्यपूर्ण और सफल कहानी है।

8.6 कठिन शब्द

1)	अनुराग	2) अवरोह	3) पुनीत	4) अग्रसर
5)	चित्रोपमता	6) उक्तिवैचित्र्य	7) व्यग्रता	8) समष्टि
9)	सौष्ठव	10) सुष्ठुता	11) विलक्षण	12) द्रवित
13)	विपन्नता	14) संवेदना	15) प्रगल्भता	16) कलनाद

8.7 अभ्यासार्थ – प्रश्न

प्र॰1. कहानी का अर्थ एवं परिभाषाएं देते हुए इसके तत्वों पर प्रकाश डालिए?

.....

.....

.....

प्र॰2. 'उसने कहा था' कहानी की तत्वों के आधार पर समीक्षा कीजिए?

.....

.....

.....

प्र॰3. 'ईद का त्यौहार' कहानी की तात्विक समीक्षा कीजिए?

.....

.....

.....

प्र॰4. 'छोटा जादूगर' कहानी की तत्वों के आधार पर समीक्षा कीजिए?

.....

.....

.....

8.8 सन्दर्भग्रन्थ / पुस्तकें

1) मन्नू भंडारी : आपका बंटी, राधाकृष्ण प्रकाशन।

2) दशरथ ओझा : कहानी एकादशी (कहानी संग्रह), शिक्षा भारती, कश्मीरी गेट, दिल्ली।

3) डॉ. वंशीधर, डॉ. राजेन्द्र मिश्र : मन्नू भंडारी का श्रेष्ठ सर्जनात्मक साहित्य, नटराज पब्लिशिंग हाउस, हरियाणा।

4) नन्दिनी मिश्रा : मन्नू भंडारी का उपन्यास साहित्य।

5) डॉ. शशि जेकब : महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में वैचारिकता।

6) डॉ. सुखबीर सिंह : हिन्दी कहानी : समकालीन परिदृश्य : अभिव्यंजना प्रकाशक, नई दिल्ली।

7) डॉ. रघुवरदयाल वार्ष्णेय : हिन्दी कहानी : बदलते प्रतिमान : पांडुलिपि प्रकाशन दिल्ली।

8) डॉ. कान्ता मेहदीरत्ता : हिन्दी कहानी का मूल्यांकन : राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।

'पढ़ाई', 'प्रायश्चित', 'आदमी का बच्चा' तथा 'दारोगा अमीरचन्द' नामक कहानियों की तात्विक समीक्षा

9.0 रूपरेखा

9.1 उद्देश्य

9.2 प्रस्तावना

9.3 'पढ़ाई' कहानी की तत्वों के आधार पर समीक्षा

9.3.1 कथावस्तु

9.3.2 पात्रों का चरित्र चित्रण

9.3.3 कथोपकथन

9.3.4 देशकाल और वातावरण

9.3.5 भाषा शैली

9.3.6 उद्देश्य

9.4 'प्रायश्चित' कहानी की तत्वों के आधार पर समीक्षा

9.4.1 कथावस्तु

9.4.2 पात्रों का चरित्र चित्रण

9.4.3 कथोपकथन

9.4.4 देशकाल और वातावरण

9.4.5 भाषा शैली

9.4.6 उद्देश्य

9.5 'आदमी का बच्चा' कहानी की तत्वों के आधार पर समीक्षा

9.5.1 कथावस्तु

9.5.2 पात्रों का चरित्र–चित्रण

9.5.3 कथोपकथन

9.5.4 देशकाल और वातावरण

9.5.5 भाषा शैली

9.5.6 उद्देश्य

9.6 'दारोगा अमीरचन्द' कहानी की तत्वों के आधार पर समीक्षा

9.6.1 कथावस्तु

9.6.2 पात्रों का चरित्र – चित्रण

9.6.3 कथोपकथन

9.6.4 देशकाल और वातावरण

9.6.5 भाषा शैली

9.5.6 उद्देश्य

9.7 कठिन शब्द

9.8 अभ्यासार्थ प्रश्न

9.9 सन्दर्भग्रन्थ / पुस्तकें

9.1 उद्देश्य :– प्रस्तुत पाठ के अध्ययनोपरान्त आप 'पढ़ाई', 'प्रायश्चित', 'आदमी का बच्चा' तथा 'दारोगा अमीरचन्द नामक कहानियों की तत्वों के आधार पर समीक्षा कर सकेंगे।

9.2 प्रस्तावना :– कहानी साहित्य की सबसे लोकप्रिय विद्या है। मनुष्य जब से इस धरती पर आया, तब से कहानी कहने तथा सुनने की प्रवृत्ति पाई जाती है। जैनेन्द्र कुमार द्वारा रचित कहानी 'पढ़ाई' बाल मनोविज्ञान को आधार बनाकर लिखी गई है। कहानी में लड़की की पढ़ाई–लिखाई की समस्या पर एक मध्यवर्गीय परिवार के अंतरंग भावों का चित्रण किया गया है। भगवतीचरण वर्मा की कहानी 'प्रायश्चित'एक सामाजिक कहानी है जिसमें समाज में व्याप्त अंधविश्वास एवं मिथ्या आडंबर का पर्दाफाश व्यंग्य के माध्यम से किया गया है। यशपाल की कहानी आदमी का बच्चा वर्ग भेद का

चित्रण कराने वाली सशक्त कहानी है। वहीं 'दारोगा अमीरचन्द' स्वतन्त्रता के पूर्व जब द्वितीय विश्वयुद्ध की भूमिका तैयार हो गई थी उस समय भारतीय नागरिकों की वृत्ति का चित्रण करना है जो छोटे–छोटे स्वार्थों की पूर्ति के लिए अंग्रेजों के पिट्ठू बने हुए थे यही लेखक का उद्देश्य है।

9.3 'पढ़ाई' कहानी की तत्त्वों के आधार पर समीक्षा

9.3.1. कथावस्तु – जैनेन्द्र कुमार ने कहानी 'पढ़ाई' की रचना बाल मनोविज्ञान को आधार बना कर की है । सामाजिक परम्परा अनुरूप बेटी के जन्म के साथ ही सोच लिया जाता है कि बेटी पराया धन है अतः माँ–बाप भरसक प्रयत्न करते हैं कि उनकी बेटी अच्छी शिक्षा व संस्कारों को ग्रहण करे और ससुराल में उसे सुख व यश की प्राप्ति हो । प्रस्तुत कहानी की कथावस्तु कुछ ऐसी ही भावनाओं का चित्रण माँ–बाप व बच्ची के चरित्र द्वारा करती है । छ' साल की सुनयना को प्यार से नूनो पुकारा जाता है । माँ उसे अन्य बच्चों के साथ स्कूल नहीं भेजती क्योंकि अध्यापिका बच्चे का ख्याल नहीं रखती और घर में पढ़ाने के लिए टीचर का प्रबन्ध करती है । स्त्री माता हृदय सुनन्दा बच्ची को ब्याह देने की व्यथा के कारण बच्ची के बाल–मन की खुशियों को नहीं परखती बल्कि अपने चिंतातुर मन से परखती है और बच्ची ज़िद्दी हो जाती है । खाने व पढ़ने के समय जिद्द करती और बुआ के कहने से खाना खाती है व दूध पीती है । सुनन्दा और उसके पति की बातचीत आपस में बच्ची को लेकर ही होती है । सुनन्दा बच्ची को खेलने बाहर नहीं जाने देती, निरन्तर पढ़ने के लिए मजबूर करती है। कहानी आकार में संक्षिप्त और मानवमन की अनुभूतियों को स्वाभाविक रूप से चित्रित करती है । कहानी पाठकों पर प्रभाव छोड़ती है कि बच्चे सामान्य परिस्थितियों में पलें, बढ़े तो उनका व्यक्तित्व निखरता है और घर की स्थितियाँ भी सामान्य रहती है ।

9.3.2 पात्रों का चरित्र चित्रण : जैनेन्द्र की कहानी 'पढ़ाई' की पात्र योजना में माँ की भूमिका में सुनन्दा प्रमुख पात्र है। बच्ची सुनयना कहानी का केन्द्रीय पात्र है । बुआ व पिता जी का चरित्र घर के वातावरण को सामान्य बनाता है। भविष्य अनिश्यित है और सुनन्दा बेटी के भविष्य की आशंकाओं से प्रायः घिरी रहती है, उसे लगता है बुआ लाड–प्यार से बच्ची को बिगाड़ रही है, पति को बच्ची की व घर की चिन्ता ही नहीं है । सुनन्दा प्रत्येक स्थिति में बौखलायी नज़र आती है, चाहे वह स्थिति बच्ची के खाने–पीने की है अथवा खेलने व पढ़ने की । उसका उद्देश्य मात्र बच्ची को पढ़ाना व उच्च शिक्षा दिलाना है, इसके लिए पति के प्रति भी बेरूखी व असन्तुष्टि प्रकट करती है । नौकर को डांटती रहती है । पति मूकदर्शक की भूमिका निभा पाता है, वह व्यर्थ में पत्नी से तर्क–वितर्क नहीं करता । पति छज्जे से अन्य बच्चों के साथ सुनयना को खेलते देखकर खुश होता है क्योंकि वह समझता है कि स्वाभाविक विकास के लिए बच्चे का अपने हम उम्र बच्चों के साथ खेलना अनिवार्य है । पति की समझदारी व समझौतावादी नीति का परिचय वहां मिलता है जब पत्नी को समझाते हुए कहता है – "तुम उसे नूनो फिर क्यों कहती हो। नाम तो उसका सुनयना है । नूना बनकर वह खिलवाड़ नहीं छोड़ सकती और तुम कहना चाहती उसे नूनो हो, फिर चाहती हो खेलना छोड़ दे अर्थात् नूनो कहना छोड़ दे। तुम उसे नूनो कहना छोड़ दो, वह भी आप छोड़ देगी।" पति एक घण्टा बच्ची को स्वयं पढ़ाने की जिम्मेदारी लेता है परन्तु सुनन्दा संतुष्ट नहीं हो पाती उसे

लगता है मात्र वही बच्ची के हित में सोच सकती है।

9.3.3 कथोपकथन : कथोपकथन अथवा संवाद कथावस्तु के विकास व पात्रों के चरित्र–चित्रण में सहायक होते हैं । संवाद संक्षिप्त, स्थिति अनुकूल, पात्रों के चरित्र का उद्‌घाटन करने वाले तथा रोचक होने चाहिए, इसी से छोटे आकार वाली कहानी पाठकों के जिज्ञासु मन को शान्त कर सकती है । 'पढ़ाई' कहानी के चुस्त संवाद पात्रों की मनःस्थितियों का उद्‌घाटन करते हैं तथा कथ्य संप्रेषण में सहायक होते हैं । संवादों में बेटी सुनयना के स्वभाव की जिद्‌द को रेखांकित किया गया है । गली में हम उम्र बच्चों के साथ खेलती हुई, सुनयना खुश और जब नौकर बुलाने आता है तो न जाने की जिद्‌द करती है और कहीं–कहीं पर दूध न पीने की जिद्‌द करती है । संवादों द्वारा पति सुनन्दा को उसकी गलती का अहसास करवाता है कि नाम से नूनो बुलाती हो और व्यवहार से सुनयना बनती हो । इस प्रकार संवादों के माध्यम से ही कहानी विकास करती है ।

9.3.4. देशकाल और वातावरण : 'पढ़ाई' कहानी एक व्यक्ति मन के वैचारिक संघर्ष को प्रस्तुत करने वाली कहानी है । अतः कहानी में वातावरण को प्रधानता दी गई है । कहानी का वातावरण मध्यवर्गीय परिवार का वातावरण है जिसमें पलने–बढ़ने वाले माता–पिता, बच्चों व मनःस्थितियों और अनुभूतियों का वर्णन मिलता है । परिवार की रौनक बच्चों से होती है । यहाँ तक कि पति–पत्नी में बातचीत का माध्यम भी बच्चे ही बनते हैं । 'सवेरे ही सवेरे कोलाहल सुन पड़ा । जान पड़ता है, यह हो–हल्ला फिर नूनो को लेकर ही है। नूनो नही होती घर में, तब सब चुपचाप अपने–अपने में ही रहते हैं, मानो उन्हें अपने काम से और अपने निज से ही मतलब है एक–दूसरे से कुछ मतलब शेष नहीं रह गया । नूनो न हो बीच में, तो हम दोनों तक को आपस में बात करने के लिए विषय का अभाव सा लगता है । नूनो को लेकर आपस में बोल लेते हैं, झगड़ लेते हैं, मिल लेते हैं।" परिवार के वातावरण द्वारा लेखक ने पारिवारिक संबंधों का चित्रण बड़ी सफलता से किया है। गली के वातावरण को चित्रित करके लेखक ने किसी भी कस्बे–व–मुहल्ले का चित्रण किया है, जहाँ बच्चे मनपसन्द खेल खेलकर मन को बहला लेते हैं। गली के खेल में गली को समन्दर और नूनो को मछली बनाकर आनन्द लेना कितना स्वाभाविक लगता है।

9.3.5. भाषा शैली : कहानी की अभिव्यक्ति उसकी भाषा शैली पर ही निर्भर करती है । कहानी की भाषा पात्रानुकूल, कथ्य को संप्रेषित करने वाली तथा वातावरण से संबंधित होनी चाहिए । प्रस्तुत कहानी में लेखक ने विवरणात्मक व वर्णनात्मक शैली का प्रयोग करते हुए संवादों के माध्यम से कहानी को गति दी है । कहानी के विवरणों को स्पष्ट करने के लिए उर्दू व लोकभाषा के शब्दों का प्रयोग हुआ है यथा–खचेड़ती, अदब, शऊर, मुताबिक, सबक, मच्छी–मच्छी इंत्ता, किताब के माने इत्यादि । लेखक ने मुहावरों के प्रयोग द्वारा वक्तव्यों को सार्थकता दी है जैसे–अंगूठा दिखाकर, आँख ओझल इत्यादि । संक्षेप में कहा जा सकता है कि कहानी की भाषा सरल, सहज एवं बोधगम्य है ।

9.3.6 उद्‌देश्य : जैनेन्द्र कुमार की कहानी 'पढ़ाई' बाल मनोविज्ञान को आधार बना कर लिखी गई एक सफल अभिव्यक्ति है । कहानी में लड़की की पढ़ाई–लिखाई की समस्या पर एक मध्यवर्गीय परिवार के अंतरंग भावों का चित्रण किया गया है । अक्सर लोग अपने बच्चों के मनोभावों का अध्ययन नहीं करते और उन पर अपने विचारों को थोपना चाहते हैं । अपने जीवन की अधूरी इच्छाओं को बच्चों के माध्यम से पूरा करने का सपना देख लेते हैं और कहा न मानने वाले नासमझ बच्चों को माँ–बाप की प्रताड़ना सहनी पड़ती है और उनके बालमन में अवरोध उत्पन्न हो जाता है ।

मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यह उचित नहीं, न परिवार के लिए न बच्चे के लिए । सुनयना और सुनन्दा के चरित्र के संघर्ष द्वारा लेखक ने यह स्पष्ट किया है कि उचित यही है कि माता–पिता बच्चों ही इच्छाओं व जिज्ञासाओं को समझें और समय व स्थिति अनुरूप उनका मार्ग निर्देशन करें ।

9.4 'प्रायश्चित' कहानी की तत्त्वों के आधार पर समीक्षा

9.4.1 कथावस्तु – प्रेमचन्द युग के कहानीकार भगवतीचरण वर्मा की कहानी 'प्रायश्चित' एक समाजिक कहानी है जिसमें समाज में व्याप्त अंधविश्वास व मिथ्याडंबर का पर्दाफाश व्यंग्य के माध्यम से किया गया है । कहानी की कथावस्तु संक्षिप्त व मौलिक है । कहानी का अन्त प्रभावोत्पादक है और महरी का एक कथन– 'माँ जी, बिल्ली तो उठ कर भाग गई' कथावस्तु की सार्थकता स्पष्ट कर देता है । कहानी की शुरूआत में ही लेखक ने रामू की बहू के चरित्र से परिचय करवा कर यह स्पष्ट करना चाहा है कि छोटी व नादान उम्र की बच्ची की शादी उचित नहीं । चौदह वर्ष की रामू की बहू जिसके खेलने–खाने, मौज–मस्ती करने के दिन हैं, उसे भण्डार घर की चाबी थमा दी जाती है और वह अक्सर हांडी में घी रखते–रखते ऊंघ जाती है । रामू की बहू की छोटी–छोटी गलतियों का फायदा कबरी बिल्ली लेती है और बहू का जीना दूभर कर देती है जैसे दूध पी लेना, हांड़ी उलट देना इत्यादि । लेखक ने स्थिति स्पष्ट करते हुए लिखा है "कबरी के हौसले बढ़ जाने से रामू की बहू का घर में रहना मुश्किल हो गया । उसे मिलती थी सास की मीठी झिड़कियाँ और पतिदेव का रूखा–सूखा भोजन ।" एक दिन रामू की बहू ने ब्राह्ममुहूर्त्त में मौका पाकर 'पाटा' बिल्ली के ऊपर दे मारा और बिल्ली सहम गई । सहमी हुई बिल्ली को मरा हुआ जानकर बहू पर बिल्ली की हत्या संबंधी अंध–विश्वास का आरोप हुआ और तर्क दिया गया कि– "बिल्ली की हत्या और आदमी की हत्या बराबर है ।" कथावस्तु की विकास–स्थिति में पंडित परमसुख को प्रायश्चित के लिए बुलाया जाता है । पंडित जी घर की मान–मर्यादा अनुरूप प्रायश्चित का विधान बताते हैं और मन ही मन मुस्कराते हैं । कुम्भीपाक नरक का विधान बताते हुए पंडित जी बिल्ली के वज़न की बिल्ली, इक्कीस दिन का पाठ और पांच–पांच ब्राह्मणों को दो समय खाना खिलाने को कहते हैं। लेखक ने कथावस्तु में सुघड़ व कलात्मक ढंग से अंधविश्वासों का भ्रमजाल फैलाने वाले तथा लालची वृत्ति के ब्राह्मणों की पोल खोली है । स्वर्ग–नरक का विकृत रूप दिखा कर अशिक्षित समाज में भ्रम फैलाना तथा अंधविश्वासों से जनता को उभरने न देना ही पंडितों का कर्मकांड है । निःसंदेह कहानी का अन्त प्रभावोत्पादक हो उठता है जब बिल्ली भाग जाती है । कहानी की कथावस्तु रोचक है और पाठकों को अपने इर्द–गिर्द फैली हुई सामाजिक कुरीतियों का परिचय करवाती है ।

9.4.2 पात्रों का चरित्र–चित्रण : सामाजिक संदर्भों को छूने वाली कहानी 'प्रायश्चित' में रामू की बहू का, रामू की मां का, पंडित परमसुख का चित्रण प्रमुख है और मिसरानी, किसनू की माँ, छन्नू की दादी का चित्रण एक पंचायत के रूप में हुआ । रामू की बहू के चित्रण द्वारा लेखक स्पष्ट करने में सफल रहा है कि बाल–विवाह सामाजिक, पारिवारिक व वैयक्तिक विकास में अवरोध उत्पन करता है । कहानी के अन्य सभी स्त्री व पुरुष पात्रों को अन्धविश्वासी व प्रायश्चित में विश्वास रखने वाले रूप में प्रस्तुत किया है । पंडित द्वारा अन्धविश्वास व प्रायश्चित की विधि को शास्त्र सम्मत बताया जाना व पंडितद्वारा घर की मानमर्यादा अनुरूप प्रायश्चित के लिए एक सोने की बिल्ली–दस मन गेहूँ, एक मन चावल, एक मन दाल, मन भर तिल, पांच मन जौ और पांच मन चना, चार पंसेरी घी और मन भर नमक..... इक्कीस दिन के पाठ के इक्कीस रुपए और इक्कीस दिनों तक दोनों वक्त पांच–पांच ब्राह्मणों को भोजन करवाना इत्यादि तरीके को बड़े नाटकीय ढंग से प्रस्तुत किया है । इसमें

पंडित का स्वार्थ अधिक प्रायश्चित कम दिखता है । लेखक ने कथावस्तु अनुसार पात्रों का चयन किया है और का-पात्रों की अन्धविश्वासों के प्रति आस्था प्रकट करती है तो पंडित का निम्नांकित कथन स्पष्ट करता है कि भोली–भाली जाता को लूटने वाला स्वार्थी पंडित घर की मान–मर्यादा अनुरूप प्रायश्चित है, कोई हंसी खेल थोड़े ही है– और जैसी जिसकी मरजादा, प्रायश्चित में उसे पैसा खर्च करना पड़ता है । आप ऐसे–वैसे थोड़े हैं । अरे सौ ड़ेढ सौ रुपया आप लोगों के हाथ का मैल है ।"

9.4.3 कथोपकथन : कहानी के संवाद संक्षिप्त, सरल, सटीक व पात्रों की मनः स्थितियों के अनुकूल होना चाहिए। प्रस्तुत कहानी की कथावस्तु का विकास संवादों के माध्यम से हुआ है। कहानी सामाजिक व्यवस्था में प्रचलित मिथ्याडाम्बरों व अंधविश्वासों को व प्रायश्चित की विधि जैसे कर्मकांडों को पात्रों के पारस्परिक संवादों द्वारा प्रस्तुत करती है। सटीक संवादों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि व्यक्ति मज़बूर है अंधविश्वासों को मानने के लिए अन्यथा समाज में उसका रहना मुश्किल है और पंडित परमसुख जैसे पात्रों को प्रायश्चित करवाने में कम पैसा बटोरने और अन्धविश्वासों को बढ़ावा देने में अधिक आनन्द मिलता है। निम्नांकित संवाद पंडित की स्वार्थी मनःवृत्ति, रामू की माँ की मज़बूरी तथा बिरादरी का अंधविश्वास के प्रति आग्रह व्यक्त हुआ है – "पंडित परमसुख जी मुस्करा रहे थे। उन्होंने कहा – "रामू की माँ, एक तरफ तो बहू के लिए कुम्भीपाक नरक है और दूसरी तरफ तुम्हारे ज़िम्मे थोड़ा सा खर्च है। सो इससे मुंह न मोड़ो।"

एक ठंडी सांस लेते हुए रामू की माँ ने कहा – "अब तो नाच नचाओगे, नाचना ही पड़ेगा ।"

पंड़ित परमसुख ज़रा कुछ बिगड़कर बोले – "रामू की माँ! यह तो खुशी की बात है, अगर तुम्हें अखरता है तो न करो – मैं चला।" इतना कह कर पंडित जी ने पोथी–पत्रा बटोरा 'अरे पण्डित जी, रामू की माँ को कुछ नहीं अखरता–बेचारी का कितना दुःख है – बिगड़ो न ।" मिसरानी, धन्नू की दादी और किसनू की माँ ने एक स्वर में कहा। संवादों को स्थितिनुरूप व नाटकीय ढंग से प्रस्तुत करके लेखक ने कहानी के व्यंग्य को पैना बनाया है।

9.4.4 देशकाल और वातावरण : कहानी एक पारिवारिक एवं सामाजिक वातावरण का चित्रण करती है और पाठकों को अहसास करवाती है कि हम अंधविश्वासी व भ्रमपूर्ण वातावरण में सांस ले रहे हैं । रामू के पारिवारिक जीवन से लेखक ने घटना का संयोजन किया और स्पष्ट किया कि समाज में प्रचलित भ्रमों व आडम्बरों के कारण एक अच्छा कर्म भी बुरे कर्म में परिवर्तित हो जाता है । रामू की बहू का उस बिल्ली को मारना बुरा नहीं जो घर में तहस–नहस मचाए रहती है लेकिन भ्रमवश इस बात को प्रायश्चित का रूप दे दिया जाता है । वस्तुतः बिल्ली डर के कारण सहम गई और अंततः भाग निकली जो घर के लिए अच्छा था लेकिन निरक्षरता ने अच्छाई को बुराई में परिवर्तित कर दिया क्योंकि लोग सूझ–बूझ से नहीं, देखा–देखी बुराई का प्रचार करते हैं ।

9.4.5 भाषा शैली : 'प्रायश्चित' कहानी की भाषा सरल, सहज, स्वाभाविक व पात्रानुकूल है । पंडित परमसुख व गांव की वृद्ध महिलाओं की भाषा स्वाभाविक व रोचक है । पंडित की भाषा स्वार्थजन्य है । जब बिल्ली के मरने कीखबर मिलती

है तो वह पत्नी से कहता है "भोजन न बनाना । लाला घासीराम की पतोहू ने बिल्ली मार डाली, प्रायश्चित होगा । पकवानों पर हाथ लगेगा ।" और रामू की माँ से कहता है "हम पुरोहित फिर कौन दिन के लिए हैं ? शास्त्र में प्रायश्चित का विधान है सो प्रायश्चित से सब ठीक हो जाएगा ।" लेखक ने कहानी के भाव को व्यंजित करने के लिए व्यंग्यात्मक भाषा का प्रयोग किया है । उदाहरण के तौर पर पंडित जी और मिसरानी का यह संवाद देखिए –

पंडित परमसुख ने कहा, "मेरे अकेले भोजन करने से पांच ब्राह्मण के भोजन का फल मिलेगा ।"

"यह तो पंडित जी ठीक कहते हैं, पंडित जी की तोंद तो देखो ।"

मिसरानी ने मुसकराते हुए पंडित जी पर व्यंग्य किया ।

कहानी के पात्रों की भाषा में ग्रामीण शब्दावली का उचित प्रयोग हुआ है, उनसे अंधविश्वासों के प्रति जनता की आसक्ति तथा विवशता का परिचय मिलता है ..... दान–पुन्न से ही पाप कटते हैं। दान–पुन्न में किफायत ठीक नहीं। लोक भाषा व उर्दू भाषा कुछ उदाहरण यूं मिलते हैं छक्के–पंजे, परच गई, चम्पत, पंसेरी, ऊंचाई–अंदाजी, औटाए गए, किफायत इत्यादि। समय और स्थिति अनुरूप मुहावरों का प्रयोग कहानी के पात्रों की मनःस्थिति का निरूपण करता है तथा कहानी में रोचकता लाता है – "रामू की बहू पर खून सवार हो गया, 'न रहे बांस न बजे बांसुरी', 'रामू की बहू ने कबरी की हत्या करने के लिए कमर कस ली।"

वस्तुतः कहानी की भाषा कहानी के भाव को अर्थवत्ता प्रदान करती है।

9.4.6 उद्देश्य : 'प्रायश्चित' कहानी एक शिक्षाप्रद सामाजिक कहानी है । लेखक ने बड़ी कुशलता से एक रूढ़िग्रस्त परिवार की आस्थाओं का चित्रण किया है । बिल्ली की हत्या जैसी साधारण घटना से जुड़े सामाजिक आडम्बरों को अभिव्यक्ति दी गई है । अंधविश्वासों से जकड़े हुए इस समाज में पंड़ित परमसुख जैसे स्वार्थी व लोलुप वृत्ति के व्यक्ति जनता को लूटते हैं, जनता में भ्रम उत्पन्न करते हैं तथा अपनी रोजी–रोटी के साधनों को बनाए रखते हैं । लेखक ने पात्रों की मनःस्थितियों द्वारा स्पष्ट किया है कि जनता स्थिति के सत्य को जानते हुए भी अंधविश्वासों से मुक्त नहीं हो पाती और चाहे–अनचाहे पंडितों द्वारा सुझाए गए विधि–विधानों का निर्वाह करती है ।पंडित कुम्भीपाक नरक विधान जब रामू की माँ को बताता है तो ठंडी सांस लेते हुए रामू की माँ कहती है "अब तो जो नाच नचाओगे, नाचना ही पड़ेगा ।" लेखक ने सारगर्भित व्यंग्य प्रयोग द्वारा जनता को अंधविश्वास फैलाने वाले पंडित से सजग होने का संकेत दिया है । कहानी का उद्देश्य सार्थक है ।

9.5 'आदमी का बच्चा' कहानी की तत्त्वों के आधार पर समीक्षा

9.5.1 कथावस्तु : साम्यवाद से प्रभावित कहानीकार यशपाल की कहानी 'आदमी का बच्चा' वर्ग भेद का चित्रण कराने वाली सशक्त कहानी है । कहानी की कथावस्तु संक्षिप्त, रोचक व प्रभावोत्पादक है । लेखक ने एक रोचक प्रसंग द्वारा दो वर्गों (उच्च व निम्न) की विचारधारा और जीवन जीने की परम्परा का चित्रण सफलतापूर्वक किया है । कहानी में आभिजात्य वातावरण में पल रहे बच्चे के बाल–सुलभ हृदय का चित्रण किया गया है । चीफ इंजीनियर बग्गा साहब की एक ही सन्तान है डौली, जो दिन भर स्कूल में रहती है और शाम को आया बन्दी

के साथ समय व्यतीत करती है । माँ–बाप दिन भर व्यस्त रहते हैं और शाम की चाय के समय डौली सजी संवरी पाँच–सात मिनट के लिए माँ–बाप से बतियाती है । पाँच साल की डौली के लिए बग्गा साहब कोई भाई–बहन नहीं चाहते और शिक्षाक्रम पूरा करवा कर उसे विलायत भेजना चाहते हैं। माली की कोठरी से छोटे–बच्चे के रोने की आवाज़ सुन कर डौली जाना चाहती है लेकिन माँ की डाँट–फटकार से अटक जाती है पर माँ से जिज्ञासा प्रकट करती है । "मामा, हमको माली का बच्चा ले दो, हम उसे प्यार करेंगे।" इधर बग्गा साहब के घर में विचित्र नस्ल की कुतिया थी, उसने पिल्ले दिए और डौली पिल्लों से खेलने लगी । साहब ने पिल्लों को मेहतर से कह गरम पानी में गोता देकर मरवा दिया। डौली को स्कूल से वापिस आने पर पता चला कि भूखा चेऊँ–चेऊँ करते पिल्ले को मरवा दिया गया तो दुःखी हुई । इस घटना के दो दिन बाद माली के छोटे बच्चे के रोने की आवाज आई तो बन्दी ने डौली की उपस्थिति में मेमसाहब से कहा वह भूख के कारण रो रहा है तो प्रतिक्रिया में डौली बोल उठी– "मामा, माली के बच्चे को मेहतर से गरम पानी में डुबवा दो तो फिर नहीं रोयेगा।" डौली को समझाया जाता है कि आदमी के बच्चे को ऐसे नहीं मारा जाता। डौली का बालसुलभ मन इस तर्क को समझ ही नहीं पाता कि कुतिया के पिल्ले और आदमी के बच्चे में क्या अन्तर है। लेखक ने भारतीय सामज में व्याप्त वर्ग भेद और अभिजात्य संस्कृति, सोच और व्यवहार पर व्यंग्य किया है। कहानी की कथावस्तु डौली की सोच द्वारा एक प्रश्नचिन्ह् अंकित कर जाती है। कथावस्तु मौलिक है और व्यावहारिक सोच देती है।

9.5.2 पात्रों का चरित्र–चित्रण : कहानी की पात्र योजना में उच्चवर्ग और निम्नवर्ग के पात्र मिलते हैं । बग्गा साहब, उनकी पत्नी व डौली उच्च वर्ग के पात्र हैं तो आया, बन्दी व माली जैसे पात्र निम्नवर्ग के । बग्गा साहब बच्ची को ऐसे संस्कारों से सम्पन्न करते हैं जिनसे वह माली के बच्चों व घर से दूर रह सके और उसमें भी उच्चवर्ग वाला रोब आ जाए । बालसुलभ चंचलता के कारण डौली बच्चों से व कुत्ते के पिल्ले से प्रेम करती है और उन दोनों में भेद कर पाना उसकी समझ से परे है इसलिए कहती है माली के बच्चे को भी पिल्ले की तरह गरम पानी से मरवा दो क्योंकि वह भूख के कारण रो रहा है । बन्दी को पता है डौली की मामा डौली का माली की काटेज में जाना पसन्द नहीं करती अतः अपने को बेगुनाह सिद्ध करने की इच्छा से उसे बांह से थामें ऐसे खींच कर लाती है जैसे स्वच्छन्दता से पत्ती चरने के लिए आतुर बकरी को कान पकड़ कर घर की ओर लाया जाता है । बग्गा साहब की पत्नी अभिजात्य वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाली नारी है अतः बच्ची को बड़े प्रेम से अपने और माली के बीच के अन्तर को समझाती है "डाली तो प्यारी बेटी है, बड़ी ही सुन्दर, बड़ी ही लाडली बेटी। हम इसको सुन्दर–सुन्दर कपड़े पहनाते हैं। डौली तू तो अंग्रेज़ी के बच्चों के साथ स्कूल जाती है न बस में बैठकर। ऐसे गन्दे बच्चों के साथ नहीं खेलते न।" कहानीकार ने दोनों वर्ग के सजीव पात्रों तथा उनकी जीवन संबंधी सोच को प्रस्तुत करके कथावस्तु में मौलिकता लाई है।

9.5.3 संवाद योजना : संवाद कहानी को गति देते हैं । संवाद संक्षिप्त, रोचक, कहानी की घटना के अनुकूल होने चाहिए तभी कथा का क्रम बना रहता है। प्रस्तुत कहानी के संवाद संक्षिप्त हैं तथा घटना व पात्रानुकूल है। कहानी के संवाद वर्ग संस्कृति का सफलतापूर्वक चित्रण करते हैं । अधिक बच्चे उत्पन्न करने की स्थिति पर बग्गा दम्पत्ति का संवाद द्रष्टव्य– "साहब कहते हैं – यों कीड़े–मकोड़े की तरह पैदा करके क्या फायदा ?" मामा मिसेज बग्गा भी हामी भरती

है– और क्या ? कहानी के संवाद स्थिति सापेक्ष है और बच्चे की डांवाडोल मन स्थिति का चित्रण करते हैं। डौली का छोटा सा मस्तिष्क दुनियावी व्यवहार को नहीं जानता अतः आदमी के बच्चे और कुतिया के पिल्ले की मौत में अन्तर को भी नहीं समझ पाता ।

9.5.4 देशकाल और वातावरण : कहानी में पारिवारिक वातावरण की प्रधानता है । बग्गा साहब की पारिवारिक स्थिति व रहन–सहन की पद्धति द्वारा लेखक ने अभिजात्य संस्कृति के एकाकीपन को चित्रित किया है । बग्गा साहब ने स्तरीयता बनाए रखने के लिए इकलौती डौली बेटी और बेटा दोनों समझ कर संतोष किया है जबकि डौली अपनी हम उम्र रौनक के लिए तरसती है और कभी माली की काटेज में उसके नवजात शिशु से खेलने जाती है तो कभी कुतिया के पिल्लों के साथ खेल कर मन बहलाती है । पति–पत्नी बच्ची की इस इच्छा को कभी समझ ही नहीं पाए । व्यस्त पति पत्नी के पास डौली के लिए समय नहीं है । जबकि निम्नवर्ग के लोग बच्चों के लिए समय निकाल लेते हैं पर साधन नहीं जुटा पाते । डौली आया बन्दी का दो साल का बेटा साधन रहित होने के कारण चल बसा था । सजीव वातावरण की प्रस्तुति के कारण कहानी अभिव्यक्ति में सफल रही है ।

9.5.5 भाषा शैली : प्रस्तुत कहानी की भाषा निम्न एवं उच्च वर्ग के लोगों की भाषा के अनुरूप है अतः रोचक व प्रभावशाली है । जब बग्गा साहब व मिसेज बग्गा बतियाते हैं तो उनकी भाषा में अंग्रेजी भाषा का प्रयोग तुलनात्मक प्रयोग मिलता है और उनके अहंकारी व्यक्तित्व का परिचय मिलता है । डौली की गर्दन पर जूं देखकर मिसेज बग्गा की प्रतिक्रिया का उदाहरण है – "निश्चय ही जूं माली और धोबी के बच्चों की संगत का परिणाम है ।"

डौली की भाषा में बाल सुलभ चंचलता व स्वभाविकता है – "मचल कर फर्श पर पाँव पटक कर डौली ने कहा "मामा हमको माली का बच्चा ले दो, हम उसे प्यार करेंगे ।"

डौली की आया बन्दी की भाषा में ग्रामीण व लोक भाषा का प्रयोग मिलता है – "हम जरा सैंडिल पर पालिस करैं के तईं भीतर गयेन ।" और "बैरी की आँख में राई–नौन ।" इत्यादि ।

9.5.6 उद्देश्य : 'आदमी का बच्चा' यशपाल की उद्देश्यपरक रचना है । कहानी में लेखक के उच्चवर्ग और निम्नवर्ग की सोच और रहन–सहन का चित्रण किया है और बालमन पर सामाजिक विंसगतियों का प्रभाव चित्रित किया है। भोले और नादान बच्चे का मन इस अर्थ को ग्रहण ही नहीं कर पाता कि कुतिया के पिल्ले के लिए और आदमी के बच्चे के लिए नियम अलग क्यों हैं । और जब उसे समझाने का प्रयत्न किया जाता है तो उसके मस्तिष्क में फिर यह प्रश्न उठता है "आया, हम भी भूख से मर जाएँगे ?"

9.6 "दारोगा अमीरचन्द" कहानी की तत्त्वों के आधार पर समीक्षा

9.6.1 कथानक – कहानी साहित्य की ऐसी विधा है जो जीवन के साथ चलती है । कहानी घटना के क्रम को उसकी यथार्थ स्थिति में प्रस्तुत करती हुई पाठकों को कुछ सोचने–विचारने पर मज़बूर करती है। कथावस्तु कहानी की आलोचना का पहला व महत्त्वपूर्ण तत्त्व है । कथावस्तु में तीन स्थितियां अपेक्षित हैं – आरम्भ, विकास और चरम सीमा । आरम्भ में कहानीकार घटना व पात्रों का परिचय देता है और विकासावस्था कहानी के कथ्य से जुड़ी घटनाओं और पात्रों के संघर्ष का परिचय देती है और चरम सीमा पर कहानीकार अपने उद्देश्य को स्पष्ट

करता है । प्रस्तुत कहानी "दारोगा अमीरचन्द" की आरम्भिक अवस्था परिचयात्मक रूप में आयी है । बात सन् 1934 की है जब देश भर की जेलें ए, बी, सी क्लास के असन्तुष्ट आन्दोलन कर्ताओं से भरी थीं जो 'सियासी' नाम की बिरादरी में शामिल होकर दिन काट रहे थे। लेखक ने एक जेल और एक दारोगा अमीरचन्द को घटना के केन्द्र में रख कर चित्रण किया है । दारोगा अमीरचन्द एक जालिम प्रवृत्ति के व्यक्ति थे जो स्वार्थी वृत्ति के कारण अंग्रेज़ सरकार के पिट्ठू बने हुए थे, सियासी कैदियों पर अत्याचार करते थे और दारोगा से डिप्टी साहब और राय साहब की पदोन्नति पा चुके थे और अब ब्रिटिश एम्पायर का आर्डर उन्हें शीघ्र मिलने वाला था । खत्री बिरादरी के अमीरचन्द मूंछें ऐसी उमेठ कर रखते थे मानो ठाकुर हों । कहानी के विकास में जेल में अकाली कैदियों और अमीरचन्द के बीच व्याप्त तनाव को चित्रित किया गया है । लेखक ने इस प्रसंग में अकाली दल की सामूहिक एकता के समक्ष जल्लाद व निडर अमीरचन्द की मानसिक कायरता का वर्णन किया है । अकाली दल परेड वाले दिन अमीरचन्द को आई.जी. के दौरे में असमर्थ दारोगा प्रमाणित कर सकते थे लेकिन एक बुजुर्ग के परामर्श से सहमत होकर मात्र यही निर्णय लिया कि सुलह करने आए दारोगा से मोल–तोल नहीं करेंगे वरन् एक बार "हमारे सामने अपनी मूंछे नीची कर ले, फिर हम सब उसके कायदे–कानून मान लेंगे ।" कथानक की चरम सीमा में हम पाते हैं कि जल्लाद प्रवृत्ति के अमीरचन्द ने अकाली दल के समक्ष अपनी मूंछें नीची कीं और उसकी जेल में आई. जी. नियन्त्रण की व्यवस्था उचित न पाकर उसे पुनः दारोगा बना दिया और अपने प्रति सरकार के इस रवैया को सहन न कर पाने के कारण अमीरचन्द को मुंह छिपाने के लिए नौकरी से त्यागपत्र देना पड़ा ।

कहानी का कथानक मौलिकता लिए है तो सजीव व यथार्थ रूप से राजनीतिक व सामाजिक व्यवस्था का परिचय देता है और स्पष्ट करता है कि आज़ादी पाना व अमीरचन्द जैसे पिट्ठलग्गू व्यक्ति का अंह टूटना उस समय की अनिवार्यताएं थीं ।

9.6.2 पात्रों का चरित्र–चित्रण : कहानी की पात्र योजना में दो तरह के पात्र मिलते हैं । दारोगा अमीरचन्द जिसके नाम पर कहानी की रचना हुई है । आई. जी. जिन्होनें दारोगा की नाकामयाबी को लक्षित कर पुनः दारोगा बनाया को वैयक्तिक रूप में चित्रित किया गया है जबकि अकाली दल का चित्रण वर्गगत रूप में हुआ है ।

दारोगा अमीरचन्द अंग्रेज़ सरकार की दुनीतियों को महत्त्व देने वाला पिट्ठलग्गू चरित्र है जो स्वार्थ की ताक पर देश को न्योछावर कर सकता है । अंततः वह अमीरचन्द जो ब्रिटिश एम्पायर बनने की इच्छा से सियासी कैदियों के लिए जालिम बन चुका था आई. जी. द्वारा पुनः दारोगा बनाकर छोटी जेल में इन्चार्ज बना कर भेजा गया और मुंह छिपाने के लिए उसने नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। लेखक यह स्पष्ट करने में सफल रहा है कि बुरे काम का नतीजा बुरा ही होता है ।

अकाली दल की सामूहिक एकता का परिचय देकर लेखक ने स्वदेशी कैदियों की हिम्मत, देशप्रेम व दूरदर्शिता का परिचय दिया है और संकेत दिया है कि ऐसे भारतीय सपूतों ने ही गठबन्धन व त्याग द्वारा भारत को स्वतन्त्र कराया

तथा अंग्रेज़ों के पिट्ठलग्गू चरित्रों को सबक सिखाया ।

कहानी के चरित्र काल्पनिक नहीं बल्कि यथार्थ जगत् के प्राणी हैं जिन्होंने स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लिया है।

9.6.3 संवाद : कहानी को अज्ञेय ने आत्मकथ्य रूप में प्रस्तुत किया है अतएव स्वाभाविक है लेखक ने घटना के वर्णन में संवादों को स्थिति सापेक्ष व पात्रों की मनोवृत्तियों के अनुकूल गढ़ा है। कहानी के संवाद रोचक हैं क्योंकि यह संवाद मात्र कहानी के पात्रों के जीवन से ही नहीं बल्कि हम भारतीयों के इतिहास व हमारे पूर्वजों से जुड़े हैं जिन्होंने स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लिया है। कहानी के संवाद एक वर्ग विशेष व व्यक्ति विशेष–दोनों की मनोवृत्तियों को स्वाभाविक रूप से प्रस्तुत करते हैं। जैसे अकाली दल को पंच समिति के सामने दारोगा अमीचन्द की मूंछें नीची करने वाला संवाद. ... "कभी हमने तुम्हारी गर्दन नाप ली, कभी तुम्हारे सामने हमने मूंछें नीची कर लीं।" द्वारा व्यक्ति की स्वार्थ वृत्ति व होशियारी का परिचय मिलता है और अकाली दल के वे संवाद जहाँ मांगे रखी जाती हैं व दारोगा अमीरचन्द की मूंछें नीची करवाई जाती हैं द्वारा क्रांतिकारियों की सामूहिक एकता दृष्टिगत होती है।

"बूढ़े ने अविचलित भाव से कहा, सिर्फ एक बात हम अपनी तरफ से रखे।"

"वह क्या ?"

"वह यह कि हमारा दारोगा से कोई झगड़ा नहीं हैं, मगर वह भी हम पर हेकड़ी जताना छोड़ दे । बस, एक बार वह हमारे सामने अपनी मूंछें नीची कर ले, फिर हम उसके सब कायदे–कानून मान लेंगे ।"

संक्षेप में छोटे व लम्बे संवाद कथा के तारतम्य को बनाए रखते हैं और पात्रों की सोच–समझ का परिचय देते हैं।

9.6.4 देशकाल और वातावरण : दारोगा अमीरचन्द कहानी में उस भारत का चित्रण है जो अंग्रेज़ों का गुलाम था। सन् 1934 में द्वितीय विश्वयुद्ध हेतु हो रहे सामाजिक व राजनीतिक आंदोलन व क्रांतिकारियों की भूमिका का चित्रण लेखक ने कहानी के वातावरण के निर्माण में बखूबी किया है। आन्दोलकर्ताओं को ब्रिटिश सरकार ए, बी, सी क्लास के 'सियासी' कैदी बना कर जेलों में भर देते थे। पंजाब की हजारा जेल के वातावरण को लेखक ने भोगे हुए यथार्थ की तरह चित्रित किया है। एक अन्य संदर्भ में लेखक ने अटक की जेल के वातावरण और कथानायक अमीचन्द के आंतक का चित्रण वर्णनात्मक रूप में किया है – "इन्हीं दारोगा साहब की वजह से अटक जेल का भी आतंक सूबे भर में फैल गया था, जिसको अटक भेजा जाता था वह समझ लेता था कि उसे द्वीपान्तरित किए बगैर काले पानी भेजा जा रहा है, और जो सुनता था, जान लेता था जिसे भेजा गया है वह या तो कोई बड़ा दबंग और खतरनाक सियासी कैदी है जिसके आत्मभिमान को सरकार जैसे भी हो तोड़ना चाहती है।" कहानी का वातावरण आज़ादी से पूर्व की जनमानस की अच्छी बुरी व दृढ़ संकल्पनात्मक अनुभूतियों का चित्रण करने में सफल रहा है।

9.6.5 भाषा शैली : प्रभावान्विति कहानी का विशेष गुण है और भाषा शैली के बिना प्रभावान्विति संभव नहीं अर्थात् भाषा शैली कहानी का विशेष तत्त्व है । अज्ञेय एक कवि भी हैं अतएव उनकी भाषा परिमार्जित, विशुद्ध, सरल व सांकेतिक होती है । प्रस्तुत कहानी में लेखक ने घटनानुरूप शब्दों व मुहावरों का प्रयोग किया है, उर्दू, पंजाबी व अंग्रेजी शब्दों

के प्रयोग से अभिव्यक्ति में सार्थकता आयी है तथा कहानी में घटना का दृश्य प्रस्तुत हो जाता है । कहानी में मुहावरों का प्रयोग भी मिलता है – मसलन मश्हूर है, "एक खालसा सवा लाख ।" निम्नांकित तुलनात्मक अभिव्यक्ति क्रांतिकारियों की दृढ़ मन'स्थिति का परिचय देती है – "जुल्म तो उन्होंने बहुत कर लिए, अकालियों पर कोई असर नहीं हुआ । मानो गैंडे की पीड़ पर कोड़े पड़ रहे हों: सौ पड़ें तो क्या हज़ार पड़े तो क्या ।" आत्मकथात्मक शैली में लिखी गई इस कहानी में लेखक ने तर्कों व निष्कर्षों द्वारा व्यंग्य को सफलतापूर्वक संप्रेषित किया है – "सुलह करने आए बनिये से मोल–तोल नहीं करना चाहिए ।"

"मामला संगीन हैं, हड़ताल का नहीं बलवे का है ।" इत्यादि ।

9.6.6 उद्देश्य : कहानी की रचना करते समय लेखक का ध्यान उद्देश्य पर केन्द्रित रहना चाहिए, क्योंकि कहानी मात्र घटना व दो–एक पात्रों द्वारा अपना प्रभाव डालती है । प्रस्तुत कहानी का उद्देश्य स्वतन्त्रता के पूर्व जब द्वितीय विश्वयुद्ध की भूमिका तैयार हो गई थी उस समय भारतीय नागरिकों की वृत्ति का चित्रण करना जो छोटे–छोटे स्वार्थों की पूर्ति के लिए अंग्रेजों के पिट्ठू बने हुए थे । आज़ादी प्राप्त करने के इच्छुक भारतीय जिनका मुंह बंद करने व क्रांति को रोकने के लिए जेल भेज दिया जाता था उन पर यह पिट्ठू ही जुल्म ढ़ाते थे । अंग्रेज़ों के इन पिट्ठुओं के संदर्भ में दारोगा अमीचन्द का उदाहरण दिया जा सकता है जो दारोगा से डिप्टी व डिप्टी से राय सहब बन चुका था और ब्रिटिश एम्पायर का खिताब पाने की इच्छा से क्रांतिकारियों पर जुल्म ढ़ाता था तथा काले पानी की सजा दिलाता था। लेखक ने आपबीती के रूप में एक यथार्थ को निरूपित किया है ।

9.7 कठिन शब्द

1. संप्रेषण	2. अवरोध	3. अभिजात्य	4. विसंगति	5. सापेक्ष
6. प्रभावान्विति	7. परिमार्जित	8. निरूपित	9. बोधगम्य	10. संयोजन

9.8 अभ्यासार्थ प्रश्न :–

प्र॰1. जैनेन्द्र कुमार की कहानी 'पढ़ाई' की तत्वों के आधार पर समीक्षा कीजिए?

.....

.....

.....

प्र॰2. 'प्रायश्चित' कहानी की तत्वों के आधार पर आलोचना कीजिए?

.....

.....

.....

प्र.3. यशपाल की कहानी 'आदमी का बच्चा' की कहानी के तत्वों के आधार पर आलोचना कीजिए?

.....

.....

.....

प्र.4. अज्ञेय की कहानी 'दारोगा अमीचन्द' की तत्वों के आधार पर समीक्षा कीजिए?

.....

.....

.....

9.9 सन्दर्भ ग्रन्थ / पुस्तकें

1) मन्नू भंडारी : आपका बंटी, राधाकृष्ण प्रकाशन।

2) दशरथ ओझा : कहानी एकादशी (कहानी संग्रह), शिक्षा भारती, कश्मीरी गेट, दिल्ली।

3) डॉ. वंशीधर, डॉ. राजेन्द्र मिश्र : मन्नू भंडारी का श्रेष्ठ सर्जनात्मक साहित्य, नटराज पब्लिशिंग हाउस, हरियाणा।

4) नन्दिनी मिश्रा : मन्नू भंडारी का उपन्यास साहित्य।

5) डॉ. शशि जेकब : महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में वैचारिकता।

6) डॉ. सुखबीर सिंह : हिन्दी कहानी : समकालीन परिदृश्य : अभिव्यंजना प्रकाशक, नई दिल्ली।

7) डॉ. रघुवरदयाल वार्ष्णेय : हिन्दी कहानी : बदलते प्रतिमान : पांडुलिपि प्रकाशन दिल्ली।

8) डॉ. कान्ता मेहदीरत्ता : हिन्दी कहानी का मूल्यांकन : राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।

'उसने कहा था', 'ईद का त्योहार', 'छोटा जादूगर' कहानियों के प्रमुख पात्रों का चरित्र –चित्रण

10.0 रूपरेखा

10.1 उद्देश्य

10.2 प्रस्तावना

10.3 'उसने कहा था' के प्रमुख पात्र लहनासिंह का चरित्र चित्रण

10.4 'उसने कहा था' कहानी के आधार पर सूबेदारनी का चरित्र चित्रण

10.5 'ईद का त्यौहार' कहानी के आधार पर हामिद का चरित्र–चित्रण

10.6 'छोटा जादूगर' कहानी के आधार पर छोटा जादूगर का चरित्र चित्रण

10.7 कठिन शब्द

10.8 अभ्यासार्थ प्रश्न

10.9 सन्दर्भग्रन्थ / पुस्तकें

10.1 **उद्देश्य :–** प्रस्तुत पाठ के अध्ययनोपरान्त आप 'उसने कहा था', 'ईद का त्यौहार' 'छोटा जादूगर' कहानियों के प्रमुख पात्रों का चरित्र चित्रण कर सकेंगे।

10.2 **प्रस्तावना :** कहानी हिन्दी साहित्य की सबसे लोकप्रिय एवं सशक्त विधा है। सामान्यतः कहानी के छः तत्व स्वीकार किए जाते हैं जैसे कथानक, पात्र और चरित्र–चित्रण, संवाद या कथोपकथन, देशकाल वातावरण, भाषा शैली, उद्देश्य। चरित्र चित्रण कहानी का एक महत्वपूर्ण अंग होता है। कहानी चरित्रों के माध्यम से ही आगे बढ़ती है। चरित्र चित्रण से विभिन्न चरित्रों में स्वाभाविकता उत्पन्न की जाती है।

10.3 'उसने कहा था' के प्रमुख पात्र लहनासिंह का चरित्र–चित्रण

चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की कहानी 'उसने कहा था' का मुख्य पात्र लहनासिंह है। उसके माध्यम से लेखक ने अपूर्व त्याग, बलिदान एवं विशुद्ध प्रेम का निरूपण किया है। लहनासिंह के चरित्र का क्रमिक विकास दिखाते हुए लेखक ने उसे सर्वप्रथम एक भोले भाले किशोर बालक के रूप में चित्रित किया है। वह अमृतसर के बाजार में चौक की एक दुकान पर एक लड़की से मिलता है। दोनों में परिचय होता है और दोनों के हृदय में आकर्षण के साथ–साथ प्रेम का अंकुर फूटने लगता है। एक महीने तक बराबर दोनों मिलते रहते हैं परन्तु एक दिन अचानक लड़की अपनी सगाई हो जाने की बात कहकर भाग खड़ी होती है। उसके बाद वह नहीं मिल पाते।

लहनासिंह के बड़े हो जाने पर फौज में जमादार हो जाने पर उसके चरित्र की कितनी ही असाधारण विशेषताओं का चित्रण इस कहानी में हुआ है। वह अनुशासन में रहने वाला और बड़ों को आदर देने वाला सैनिक है। सूबेदार के घर जाकर वह सूबेदारनी को 'मत्था टेकना' कहकर पूरा आदर देता है। यह वही लड़की थी जिसे वह 25 वर्ष पहले अमृतसर में मिला था।

लहनासिंह अत्यन्त विनोदी स्वभाव का हँसमुख सैनिक है। फ्रांस–बेल्जियम के रणक्षेत्र में खन्दक के अन्दर पड़े हुए सैनिकों के साथ हास्य–विनोद में भाग लेता है, वजीरासिंह के साथ हँसी–मज़ाक करता है, फिरंगी मेम के बारे में भी चुटकी लेता है और अपने कर्त्तव्य का भी पूरा ध्यान रखता है। वह बीमार बोधासिंह को रात–भर अपने दोनों कम्बलों से ढके रहता है और स्वयं सिगड़ी के सहारे रात काट देता है।

वह अत्यन्त सचेत, जागरूक, कुशाग्र बुद्धि–सम्पन्न और धीरपुरूष है। वह कपट–व्यवहार एवं धूर्तता को समझने की सूझबूझ रखता है। आकस्मिक दुर्घटना के समय उसमें अपूर्व धैर्य एवं साहस के साथ अपने कर्त्तव्य को निश्चय ही पूरा करने की शक्ति है और दुश्मन के चंगुल में फँसने पर भी अधीर व्यग्र एवं अस्त व्यस्त नहीं होता। मुठभेड़ में उसके दो गहरे घाव लगते हैं परन्तु अपनी जान पर खेलकर एक ओर तो सूबेदार को वापिस बुलाकर उनकी प्राण रक्षा करता है।

लहनासिंह एक ऐसा कर्त्तव्यनिष्ठ सैनिक है, जो आदर्श के लिए सर्वस्व अर्पण करने की क्षमता रखता है। सूबेदारनी ने उसे जो कुछ कहा था उसको वह पूरा करने में ही सुख का अनुभव करता है। सूबेदार के बार–बार कहने पर भी वह घायल सैनिकों के साथ गाड़ी में बैठकर स्वयं अस्पताल नहीं जाता, वरन् पहले बीमार बोधासिंह को गाड़ी में भेजने का आग्रह करता है और फिर बोधा और सूबेदारनी की सौगन्ध दिलाकर सूबेदार को उसी गाड़ी में चले जाने के लिए यह कहकर विवश कर देता है कि वहाँ पहुँचकर मेरे लिए फिर गाड़ी भेज देना। वह सूबेदार से कहता है, ''और जब घर जाओ तो कह देना कि मुझसे जो उन्होंने कहा था वह मैंने कर दिया''। इस तरह अपनी भूतपूर्व प्रेमिका के प्रति विशुद्ध प्रेम एवं श्रद्धा प्रकट करता हुआ यह वीर सैनिक अपने कर्त्तव्य को पूरा करके ही वीरगति को प्राप्त होता है।

संक्षेप में कह सकते हैं कि लहनसिंह का चरित्र त्याग, बलिदान और पवित्र प्रेम का आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करता है।

10.4 'उसने कहा था' कहानी के आधार पर सूबेदारनी का चरित्र–चित्रण

गुलेरी जी की अमर कहानी 'उसने कहा था' में सूबेदारनी का अत्यन्त मार्मिक एवं महत्त्वपूर्ण चरित्र है। लेखक ने उसे अल्हड़ बालिका, पतिपरायणा पत्नी एवं वात्सल्यमयी जननी की उत्कृष्ट भूमिका में अंकित करके नारी के पावन एवं उज्जवल चरित्र की महिमा से मंडित किया है। कहानी में वह सर्वप्रथम एक चपल, चुलबुली, अल्हड़ सीधी–सादी आठ वर्षीय बालिका के रूप में पाठकों के सम्मुख आती है, जिसे बारह वर्षीय लहना एक दिन हठात् तांगे के नीचे आने से बचा लेता है और जो लहना के इस जीवन–दान सम्बन्धी लोकोपकारी कार्य से सहसा उसकी ओर आकृष्ट हो जाती है। बचपन का यह आकर्षण न तो काम–भावना से प्रेरित है और न इसमें अनैतिकता की ही कहीं गंध आती है, अपितु यह एक नैसर्गिक, उज्ज्वल एवं पवित्र आकर्षण है, जो उस बालिका के हृदय में धीरे–धीरे बढ़ता चला जाता है और जो एक महीने में अधिक गहनता एवं व्यापकता का रूप भी धारण कर लेता है परन्तु यह आकर्षण उस बालिका में एक विलक्षण चपलता, अद्‌भुत विनोदप्रियता एवं असाधारण वाग्वैदग्ध्य को जन्म दे देता है। तभी तो वह बालक लहना के नित्य प्रति 'तेरी कुड़माई हो गई' कहकर चिढ़ाने पर अत्यन्त विनोदी ढंग से 'धत्' कहकर चली जाती है और बालक लहना नित्य उसके इस शब्द –माधुर्य के रस में आनन्द विभोर हो जाता है। परन्तु एक दिन उसका यह चिढ़ाना बड़ा महँगा पड़ता है क्योंकि वह अल्हड़ बालिका उस बालक लहना की संभावना के विरुद्ध 'हां',हो गई उत्तर देती है और जब वह बालक यह पूछता है कि 'कब'? तो वह 'कल,–देखते नहीं, यह रेशम से कढ़ा हुआ सालू' कहकर न केवल बालक लहना की आशाओं पर पानी फेर देती है, वरन् उसके उपचेतन में विद्यमान बालिका की प्रेममयी मूर्ति के भी टुकड़े–टुकड़े कर देती है और उसके एक महीने से सँजोये हुए सपनों की सतरंगी दुनियाँ को भी नष्ट–भ्रष्ट कर देती है।

लेखक ने इसके अनंतर उस बालिका को सबूदारनी के रूप में चित्रित किया है, जो सूबेदार हजारासिंह की पत्नी है और जिसका इकलौता पुत्र बोधासिंह भी फोज में भर्ती हो गया है। यद्यपि वह चार पुत्रों को और भी जन्म दे चुकी है, तथापि उनमें से कोई नहीं बचा है और वह इस बात से अत्यन्त दुःखी है कि उसका पति और पुत्र दोनों ही लाम पर जा रहे हैं। इस सूचना से उसका हृदय अत्यन्त व्याकुल एवं व्यग्र रहता है कि उसके पति और पुत्र दोनों को एक साथ ही रणक्षेत्र में जाना पड़ेगा। वह रोक भी नहीं सकती, क्योंकि वह एक विवेक–सम्पन्न नारी है और जानती है कि सरकार ने उसके पति को 'बहादुर' का खिताब दिया है, लायलपुर में जमीन दी है और आज उसी सरकार की नमकहलाली का अवसर आया है, तो वह कैसे उन्हें रोक सकती है?

लेखक ने सूबेदारनी को एक पति और पुत्र की सदैव मंगलकामना करने वाली एक आदर्श पत्नी और महान् जननी के रूप में भी चित्रित किया है, तभी तो वह लहनासिंह को पहचानते ही उसके सामने अपनी राम–कहानी सुनाती हुई रोने लगती है और कहती है – ''अब दोनों जाते हैं। मेरे भाग! तुम्हें याद है, एक दिन ताँगे वाले का घोड़ा दही वाले की दुकान के पास बिगड़ गया था। तुमने उस दिन मेरे प्राण बचाये थे। आप घोड़े की लातों में चले गये थे और मुझे उठाकर दुकान के तख्ते पर खड़ा कर दिया था। ऐसे ही इन दोनों को बचाना, यह मेरी भिक्षा है। तुम्हारे आगे मैं आँचल पसारती हूँ।'' सूबेदारनी के इन वाक्यों में कितना सुदृढ़ विश्वास, आत्मीयता एवं प्रगाढ़ श्रद्धा की भावना भरी हुई है। उसके ये शब्द कितने प्ररेणादायक एवं उत्साहवर्धक भी हैं। इनमें कहीं भी न तो अवैध संबंध की हीन ग्रंथि है और न कहीं नारी की मार्यादा का उल्लंघन हुआ है, अपितु एक भारतीय पत्नी एवं जननी के गौरव की मर्यादा में

पैठकर उसने जिस संकोचहीन भावना के साथ लहनासिंह से अपने पति एवं पुत्र की रक्षा के लिए उसके जीवन की भीख माँगी है, यह उसके अडिग विश्वास, अटूट श्रद्धा एवं गहन आत्मीयता की प्रतीक है। इतना ही नहीं, उसके इन विचारों में उसके उदात्त एवं गंभीर प्रेम की झलक भी मिल जाती है, जो एक महीने के सतत आकर्षण के कारण उसके बचपन में अंकुरित हो गया था और काल के दीर्घ अन्तराल में भी जो पूर्णतया शुष्क नहीं हुआ था, अपितु जिसकी जड़ें उसके पुनीत हृदय में विद्यमान थीं।

अतः गुलेरीजी ने सूबेदारनी को अन्त में एक उदात्त एवं पुनीत प्रेम की प्रतिमा के रूप में चित्रित करके उसे भारतीय मर्यादा का पालन करने वाली आदर्श पत्नी एवं आदर्श जननी की भूमिका में ही अंकित नही किया है, अपितु अडिग विशवास एवं सुदृढ़ निष्ठा से सम्पन्न एक ऐसी आदर्श प्रेमिका के रूप में भी अंकित किया है, जो लहनासिंह के जीवन की धारा को ही मोड़ देती है, उसे त्याग एवं बलिदान की ओर उन्मुख कर देती है और उसे अजेय योद्धा की गरिमा से मण्डित करती हुई अमर बना देती है।

इस प्रकार गुलेरीजी के चरित्र–चित्रण में मानवीय गुणों की गरिमा के साथ–साथ स्वाभाविकता है, वास्तविकता है, आंशिकता है और संक्षिप्तता भी है, क्योंकि किसी भी पात्र के चरित्र को पूर्णतया अंकित न करके उसकी केवल उन चारित्रिक विशेषताओं का ही उद्‌घाटन किया है, जो कहानी के लिए अपेक्षित हैं और जिनके द्वारा जीवन के महत्त्वपूर्ण पहलू पर प्रकाश डाला जा सकता है। इस तरह पात्र–योजना में गुलेरी जी को पूर्ण सफलता मिली है।

10.5 'ईद का त्योहार' कहानी के आधार पर हामिद का चरित्र–चित्रण

'ईद का त्योहार' कहानी समाज में उच्च वर्ग और निम्न वर्ग के बच्चों के द्वारा समाज के गठन का वर्णन एक गरीब बच्चे के द्वारा उसका मातृत्व प्रेम दिखाकर उसकी बुद्धि की प्रखरता को दिखाया है। हामिद इस कहानी का प्रमुख पात्र है। हामिद की अम्मी का देहान्त हो चुका है और दादी अमीना ही उसका पालन पोषण कर रही है। हामिद में बाल–सुलभ भोलापन तो है ही परन्तु साथ ही भावनाओं को समझने की कला भी है।

गाँव में ईद के त्योहार की हलचल है और वह भी यह उम्मीद लगाए है कि उसके अब्बाजान रूपये लेकर आएंगे। बाल सुलभ उत्सुकता और अपने मित्रों के साथ उसकी होड़ भी है। वह सोचता है, ''जब उसके अब्बाजान थैलियाँ और अम्मीजान नियामतें लेकर आएँगी, तो वह दिल के अरमान निकाल लेगा।''

ईद के मेले के प्रति हामिद के मन में भी आकर्षण है। गाँव के बच्चों के साथ हामिद भी मेले में जाता है। मेला देखते समय उसके मन का यह आकर्षण पाठकों को देखने को मिलता है। उसकी इस स्थिति का चित्रण देखिए – ''हामिद के पैरों में तो जैसे पर लग गए हैं। वह कभी थक सकता है।''

हामिद अपने घर की आर्थिक स्थिति से पूर्ण रूप से परिचित है इसलिए खिलौनों के प्रति उसका मन ललचाता अवश्य है परन्तु मन में दुविधा है क्योंकि उसकी स्थिति दूसरों से अलग है जिसे वह भली–भाँति जानता है – ''हामिद उनकी बिरादरी से पृथक् है। अभागे के पास तीन पैसे हैं।'' हामिद की हाजिर जवाबी भी कहानी में देखने को मिलती है। जब सभी बच्चे मिठाईयाँ खाते हैं तो मित्र चिढ़ाते है तो उसका जवाब देखिए, ''मिठाई कौन बड़ी नेमत

है, किताब में इसकी कितनी बुराइयाँ लिखी हैं।''

वह अपनी दादी अमीना की भावनाओं को भी समझता है। जब मेले में वह लोहे की चीजों की दुकानें देखता है तो सबसे पहले उसे अपनी दादी का ध्यान आता है जो बूढ़ी होने के कारण खाना बनाते समय कई बार अपनी उँगलियाँ जला लेती है – ''उसे ख्याल आया, दादी के पास चिमटा नहीं है। तवे से रोटियाँ उतारती हैं, तो हाथ जल जाता है, अगर वह चिमटा ले जाकर दादी को दे दें, तो वह कितनी प्रसन्न होंगी? चिमटा खरीदकर वह प्रसन्न हो जाता हैं और घर जाकर दादी को चिमटा देता है तो दादी भी गदगद हो जाती है कि मेले में बिना कुछ खाए–पिए रहा परन्तु फिर भी दादी का ध्यान इसे नहीं भूला।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि लेखक ने शिशु मनोविज्ञान का पूर्ण चित्रण हामिद के माध्यम से किया है। हामिद में बाल –सुलभ सभी गुण विद्यमान हैं जैसे –आकर्षित होना, भावनाओं को समझना और समय आने पर एक। प्रौढ की भाँति व्यवहार करना आदि। इस तरह वह कहानी का सशक्त पात्र है।

10.6 'छोटा जादूगर' कहानी के आधार पर छोटा जादूगर का चरित्र–चित्रण

'छोटा जादूगर ' कहानी का पात्र छोटा जादूगर आर्थिक विपन्नता से ग्रसित एक 'स्ट्रीट बॉय' है जो गलियों और मेलों में अपना जादू दिखाकर पेट पालने के लिए पैसे कमाता है। माँ के प्रति अपना कर्त्तव्य निभाता यह बालक चतुर, चालाक, मधुर व्यवहार और मातृ–प्रेम की झलक कहानी में बार–बार दिखाता है।

छोटा जादूगर चतुराई से मेले में पैसा कमाता है और बीमार माँ के इलाज की चिन्ता उसे सताती है। कथाकार जब उस बालक से मिलता है तो वह उसे शरबत पिलाने ले जाता है तब उसकी वास्तविक स्थिति पाठक के सामने आती है– ''तमाशा देखने नहीं; दिखाने निकला हूँ। कुछ पैसे ले जाऊँगा, तो माँ को पथ्य दूँगा। मुझे शरबत न पिलाकर अपने मेरा खेल देखकर मुझे कुछ दे दिया होता, तो मुझे अधिक प्रसन्नता होती।''

उस छोटे बालक को घर की दयनीय स्थिति के कारण अपना बचपन तो याद ही नहीं अपितु माँ की दवा–दारू की चिंता है ताकि वह स्वस्थ हो जाए। उसकी चतुराई भी कहानी को रूचिकर बनाती है वह कथाकार से आग्रह करता है कि आइए मैं आपको तमाशा दिखाता हूँ ताकि उसे भी कुछ पैसे मिल जाएं। कथाकार के परिवार को वह अपना तमाशा दिखाता है और उसकी श्रीमती जी के द्वारा एक रूपया देने पर खुश हो जाता है। जब वह उसे 'लड़के' कहकर बुलाती है तो वह बड़ी चतुराई से उत्तर देता है – ''छोटा जादूगर कहिए। यही मेरा नाम है। इसीसे मेरी जीविका है।''

छोटा जादूगर व्यवहार कुशल जिससे वह दूसरों के हृदय में अपनी जगह भी बना लेता है। कथाकार भी उसे भूल नहीं पाता और जब–तब उसे मिलता है ताकि उसकी बीमार माँ की स्थिति को जान सके। छोटा जादूगर को वह जब भी मिलता उसे माँ की चिन्ता होती कि बीमार माँ किसी तरह ठीक हो जाए। एक बार उदास मन स्थिति से सड़क के किनारे जादू दिखाता हुआ वह कथाकार से मिलता है तब वह बताता है कि माँ ने कहा है कि आज जल्दी

आ जाना मेरी घड़ी समीप है और अन्ततः उसकी माँ की मृत्यु हो जाती है। वह माँ से लिपटकर रोता है।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि छोटा जादूगर कहानी का पात्र छोटा जादूगर अपनी आर्थिक स्थिति के कारण समय से पहले जिम्मेवारियों के बोझ तले दबा हुआ है और अपनी चतुराई, मधुरता और मातृ–प्रेम के फलस्वरूप माँ का और अपना पेट पालता है। वह कहानी का सशक्त और प्रभावशाली पात्र है।

10.7 कठिन शब्द

1) नैसर्गिक 2) विलक्षण 3) वाग्वैदग्ध्य 4) मनोविज्ञान

5) सशक्त 6) सुदृढ़

10.8 अभ्यासार्थ प्रश्न :

प्र॰1. गुलेरी जी की कहानी 'उसने कहा था' के प्रमुख पात्र लहना सिंह का चरित्र–चित्रण कीजिए।

.....

.....

.....

प्र॰2. 'उसने कहा था' कहानी के आधार पर सूबेदारनी का चरित्र–चित्रण कीजिए?

.....

.....

.....

प्र॰3. 'ईद का त्यौहार' कहानी के आधार पर हामिद का चरित्र–चित्रण कीजिए।

.....

.....

.....

प्र॰4. 'छोटा जादूगर' कहानी के आधार पर छोटा जादूगर का चरित्र–चित्रण कीजिए?

.....

.....

.....

10.9 सन्दर्भग्रन्थ/पुस्तकें :

1. मन्नू भंडारी आपका बंटी, राधाकृष्ण प्रकाशन
2. दशरथ ओझा, कहानी एकादशी, शिक्षा भारती, कश्मीरी गेट, दिल्ली।
3. डॉ. वंशीधर, डॉ. राजेन्द्र मिश्र : मन्नू भंडारी का श्रेष्ठ सर्जनात्मक साहित्य, नटराज पब्लिशिंग हाउस, हरियाणा।
4. नन्दिनी मिश्रा : मन्नू भंडारी का उपन्यास साहित्य।
5. डॉ. शशि जेकब : महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में वैचारिकता।
6. डॉ. सुखबीर सिंह : हिन्दी कहानी : समकालीन परिदृश्य, अभिव्यंजना प्रकाशक, नई दिल्ली।
7. डॉ. रघुवरदयाल वार्ष्णेय : हिन्दी कहानी : बदलते प्रतिमान, पांडुलिपि प्रकाशन, दिल्ली।
8. डॉ. कान्ता मेहदीरता : हिन्दी कहानी का मूल्यांकन, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।

'पढ़ाई', 'प्रायश्चित', 'आदमी का बच्चा' तथा 'दारोगा अमीरचन्द' कहानियों के प्रमुख पात्रों का चरित्र–चित्रण

11.0 रूपरेखा

11.1 उद्देश्य

11.2 प्रस्तावना

11.3 'पढ़ाई' की मुख्य पात्र सुनन्दा का चरित्र चित्रण

11.4 'प्रायश्चित' कहानी के मुख्य पात्र पंडित परमसुख का चरित्र चित्रण

11.5 'आदमी का बच्चा' कहानी के मुख्य पात्र बग्गा साहब की पत्नी का चरित्र चित्रण

11.6 'आदमी का बच्चा' कहानी के आधार पर बाल चरित्र डौली का चरित्र चित्रण

11.7 'दारोगा अमीरचन्द' कहानी के प्रमुख पात्र अमीचन्द का चरित्र चित्रण

11.8 कठिन शब्द

11.9 अभ्यासार्थ प्रश्न

11.10 सन्दर्भग्रन्थ / पुस्तकें

11.1 **उद्देश्य :** प्रस्तुत पाठ के अध्ययनोपरान्त आप 'पढ़ाई', 'प्रायश्चित, 'आदमी का बच्चा' तथा 'दारोगा अमीरचन्द कहानियों के प्रमुख पात्रों का चरित्र–चित्रण कर सकेंगे।

11.2 **प्रस्तावना :** कहानी हिन्दी साहित्य की सबसे लोकप्रिय एवं सशक्त विद्या है। सामान्यतः कहानी के छः तत्व स्वीकार किए जाते हैं जैसे कथानक, पात्र और चरित्र–चित्रण, संवाद या कथोपकथन, देशकाल वातावरण, भाषा शैली, उद्देश्य। चरित्र चित्रण कहानी का एक महत्वपूर्ण अंग होता है। कहानी चरित्रों के माध्यम से ही आगे बढ़ती है। चरित्र चित्रण से विभिन्न चरित्रों में स्वाभाविकता उत्पन्न की जाती है।

11.3 'पढ़ाई' की मुख्य पात्र सुनन्दा का चरित्र–चित्रण

जैनेन्द्र कुमार की कहानी 'पढ़ाई' की मुख्य पात्र सुनन्दा है । सुनन्दा एक ममतामयी माँ है । उसे अपनी बेटी

के भविष्य की चिन्ता है । सुनन्दा की बेटी सुनयना अभी छः वर्ष की है । सुनन्दा को लगता है कि लाड–प्यार में पल कर यह बच्ची बिगड़ जाएगी और अच्छी तरह पढ़–लिख नहीं पाएगी अतः उसे कठोर अनुशासन में रखना चाहती है । अनुशासनप्रिय सुनन्दा को सुनयना का खेलना–कूदना, शोरगुल करना बिल्कुल पसन्द नहीं । उसे प्रतिपल महसूस होता है कि घर के अन्य सदस्य पति व ननद को सुनयना की चिन्ता नहीं और खीझ को यूं प्रकट करती है "छः बरस की लडकियाँ दूसरी जमात में पहुंच जाती हैं और एक यह है कि माँ का दूध नहीं छोड़ना चाहती, यों काम में माँ को अंगूठा दिखाकर भाग जाती है ।" वस्तुतः सुनन्दा असंतुष्ट वृत्ति की नारी है इसीलिए उसका हृदय चिन्तित रहता है । वह हमेशा सोचती है "एक तो लड़की है, वह यों बिगड़ी जा रही है । बिगड़ जाएगी तो फिर कौन संभालेगा, उन्हीं के सिर तो सब पड़ेगा । सो, वह भी औरों की तरह फिकर करना छोड़ बैठे, तो कैसे चलेगा ।"

सुनन्दा पढ़ाई को महत्त्व देती है । वह चाहती है उसकी बेटी पढ़–लिख कर सुशिक्षित हो जाए तथा अच्छे घर–परिवार में अपने अच्छे संस्कार लेकर जाए । वह बच्ची को स्कूल में नहीं घर में ही पढ़ाना चाहती है, उसे आँख से ओझल नहीं करना चाहती । उसे स्कूल की अध्यापिका पर यकीन ही नहीं हो पाता "मैं पाठशाला भेजना नहीं चाहती । अध्यापिका सब ऐसी ही होती हैं, बच्चे का नेक ख्याल नहीं रखतीं और धमकाएँ, मारे भी, उसको क्या ठीक है । नहीं, बच्चे को मैं आंख ओझल नहीं करूगीं ।"

सुनन्दा अविश्वासी प्रवृत्ति की नारी है । उसे किसी पर भी यकीन नहीं । न तो वह ननद पर विश्वास करती है न पति पर । जब ननद बच्ची को लाड़ से दूध पिलाती है और समझाती है तो भी वह खिन्न होती है और जब पति बच्ची की तरफदारी करता है तब भी वह झुंझलाती है । मनोवैज्ञानिक आधार पर सुनन्दा का अपना व्यक्तित्व बेटी को लेकर कुंठित है । वह उसके वर्तमान की अपेक्षा भविष्य को , व्यक्तित्व की अपेक्षा समाज को अधिक महत्त्व देती है । वह ऐसी दुश्चिंताओं से घिरी रहती है जिनकी अभी के हालात के साथ संगति नहीं बैठती । लेखक ने उसकी सोच को यूं अभिव्यक्त किया है "उनके पेट की कन्या है, पर दुनिया बुरी है । उसने पढ़ना–लिखना जैसी भी चीज़ अपने बीच में पैदा कर रखी है । और उसी दुनिया में मास्टर लोग भी हैं, जो डंडा दिखाकर बच्चों को पढ़ा देंगे और आप से रुपया लेकर पेट पाल लेंगे । और दुनिया में एक चीज है प्रतिष्ठा और भी इसी तरह की बहुत सी चीजें है और फिर ब्याह, जिसमें एक सास मिलती है और एक ससुर मिलता है.....इस दुनिया को लेकर वह झंझट में पढ़ जाती है जबकि पति सोचता है कि आने वाले कल की चिन्ताओं को आहवान् करना मूर्खता है । सुनयना अभी छोटी है, उसका मन खेल में ज्यादा पढ़ने में कम लगता है । सुनन्दा उसे पढाना चाहती है इसी कारण सुनयना की पिटाई भी करती है और तर्क देती है कि "पिटकर दुबली होगी, तो डाक्टर है, डाक्टर के लिए पैसा है– पर लड़की को पढ़ाना है ।"

अनुशासनप्रिय सुनन्दा मन की दुश्चिंताओं के कारण कठोर स्वभाव की हो गई है । जब बेटी को पढ़ाने के लिए डांटते है तो वह रोती है और जिद्दी व्यवहार से पेश आती है तो सुनन्दा का वात्सल्य व ममता उमड़ पड़ती है और वह मास्टर जी से कहती है – "मास्टर जी, इसे तस्वीर वाला सबक पढ़ाना । और मास्टर जी इसके मन के मुताबिक पढ़ाना....अच्छा मास्टर जी आज छुटटी सही । जरा कल जल्दी आ जाना ।"

बेटी को पढ़ाने की सुनन्दा की इच्छा इतनी बलवती है कि वह परिवार के सभी सदस्यों से उलझी रहती है और उसी की खातिर समझौता करने को भी तत्पर दिखती है । जब सुनन्दा पति से कहती है कि तुम उसकी पढ़ाई का थोड़ा ध्यान कर लिया करो तो पति कहता है कि जब तक तुम उसे सुनयना की जगह 'नूनो' कहती रहोगी वह बड़ी नहीं होगी, नूनो ही बनी रहेगी तो अपनी सहमति प्रकट करती है और यह एहसास करती है कि उसे बेटी को सही नाम से ही पुकारना चाहिए ।

संक्षेप में कहानी में वर्णित सुनन्दा के चरित्र के माध्यम से लेखक ने स्पष्ट किया है कि बेटी को शिक्षित करना अनिवार्य है । इस अनिवार्यता को मां ही सबसे ज्यादा समझती है और इस ज्यादा समझ के कारण ही मां स्वयं मानसिक दुश्चिंताओं की शिकार हो जाती है ।

11.4 'प्रायश्चित्त' कहानी के मुख्य पात्र पंडित परमसुख का चरित्र–चित्रण

भवगतीचरण वर्मा की कहानी 'प्रायश्चित' से पंडित परमसुख का चरित्र उस पंडित वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है जो कम पढ़ा–लिखा है, जनता में धर्म के नाम पर मिथ्याडम्बर रच कर भ्रम उत्पन्न करता है तथा अपनी रोजी–रोटी का साधन बनाने में सफल रहता है । पंडित परमसुख लालची वृत्ति का व्यक्ति है । पंडित को सदैव किसी ऐसे न्योते का इन्तज़ार रहता है जहां जाकर वह किसी पूजा का विधान बताए और खूब पैसा व दान–दक्षिण पा सके । जब पंडित को लाला घासीराम के घर से बुलावा आया तो पूजा अधूरी छोड़ कर उठ खड़ा हुआ और पंडिताइन से मुस्कराते हुए कहा– "भोजन न बनाना । लाला घासीराम की पतोहू ने बिल्ली मार डाली, प्रायश्चित होगा । पकवानों पर हाथ लगेगा।"

भगवतीचरण वर्मा ने पंडित के व्यक्तित्व का परिचय इन शब्दों में दिया है "पंडित परमसुख चौबे छोटे से, मोटे से आदमी थे । लम्बाई चार फुट दस इंच और तोंद का घेरा अट्ठाववन इंच । चेहरा गोल मटोल, मूंछे बड़ी–बड़ी, रंग गोरा, चोटी कमर तक पहुँचती हुई । कहा जाता है कि मथुरा में पंसेरी खुराक वाले पंडितों को ढूंढा जाता था तो पंडित परमसुख को इस लिस्ट में प्रथम स्थान दिया जाता था ।"

पंडित परमसुख स्वार्थी व्यक्ति है । वह स्वयं आडम्बरों में विश्वास करता है तथा भोली–भाली ग्रामीण जनता में मिथ्याडम्बरों का प्रचलन बड़ी कार्यकुशलता से करता है । बिल्ली की हत्या हुई है, यह जान कर पंडित को अत्यन्त प्रसन्नता हुई । पंडित को लाला घासीराम के खाते–पीते घर में प्रायश्चित करवाने से रुपया–पैसा, अनाज जैसी वस्तुएं व सोने की बिल्ली प्राप्त होने की संभावना थी। पंडित अनपढ़ व अज्ञानी है, इस पर लेखक का व्यंग्य सटीक है – "पंडित परमसुख ने पन्ने के उल्टे पन्ने, अक्षरों पर उंगलियां चलाई ।" पडित ने बड़ी चतुराई से उपस्थित लोगों से बिल्ली की हत्या के समय की जानकारी लेकर कुम्भीपाक नरक को विधान बताया तथा रामू की माँ को आश्वासन दिलाया कि वे स्वयं शास्त्रानुसार प्रायश्चित करवाँएगें और उनके घर को शुद्ध कर देंगे – "रामू की माँ, चिंता की कौन सी बात है, हम पुरोहित फिर कौन दिन के लिए हैं, शास्त्रों में प्रायश्चित्त का विधान है, सो प्रायश्चित से सब ठीक हो जाएगा ।'

लालची व ढोंगी स्वभाव वाले पंडित सुखराम पहले समय और स्थिति को परखते हैं और बाद में ग्रामीण जनता को भ्रम में डाल देते हैं और भोली–भाली जनता इनके रचाए गए भ्रमजाल से उभर नहीं पाती । पंडित परमसुख ने पहले

तो बिल्ली के वजन की बिल्ली बनवाने के लिए रामू की माँ को परामर्श दिया और जब रामू की माँ की ओर से सहमति न मिली तो तोल–मोल करने लगे । अंततः ग्यारह तोले की बिल्ली पर सहमति हो गई । पंडित ने पूजा के समान की एक लम्बी सी लिस्ट दी कि यह समान उसके घर भिजवा दो जिसे देखकर रामू की माँ सकते में आ गई । पंडित रामू की माँ को तर्क देते हैं – "खर्च को देखते वक्त पहले बहू के पाप को तो देख लो । यह तो प्रायश्चित्त है, कोई हंसी खेल थोड़े ही है – और जैसी जिसकी मरजादा, प्रायश्चित्त में उसे वैसा खर्च करना पडता है । आप लोग कोई ऐसे वैसे थोड़े ही हैं । और सौ–डेढ़ सौ रुपया आप लोगों के हाथ की मैल है ।"

अंधविश्वासी जनता का प्रतिनिधित्व करने वाली रामू की माँ पंडित के बनाए भ्रमजाल में उलझ ही जाती है और अवसरवादी पंडित उसे सुझाव देता है कि बिल्ली की प्रायश्चित्त संबंधी पूजा वह स्वयं करेगा, दान–दक्षिणा लेगा तथा पांच ब्राह्मणों का भोजन भी स्वयं ही करेगा । इक्कीस दिन के पाठ के इक्कीस रुपए और इक्कीस दिन तक दोनों वक्त पाँच–पाँच ब्राह्मणों को भोजन करवाना पड़ेगा ।" कुछ रुक कर पंडित परमसुख ने कहा – "सो इसकी चिन्ता न करो, मैं अकेले दोनों समय भोजन कर लूंगा और मेरे अकेले भोजन करने से पाँच ब्राह्मण के भोजन का फल मिल जाएगा ।" पंडित के निर्देशानुसार प्रायश्चित्त का प्रबन्ध होने लगा और पंडित जी खुश हो गए तभी महरी ने आकर सूचना दी "मां जी, बिल्ली तो उठ कर भाग गई ।" इससे पंडित परमसुख की सारी योजनाएं बेकार हो गई ।

लेखक भगवतीचरण वर्मा ने पंडित जैसे ढोंगी, अन्धविश्वासी रूढ़िवादी, लालची, स्वार्थी व अवसरवादी व्यक्तित्व द्वारा स्पष्ट किया है कि जब तक समाज में ऐसे लोग रहेंगे अपनी अज्ञानता व मतान्धता से जनता को भ्रम में उलझाए रखेंगे । जनता को पंडितों के शोषण से बचने के लिए स्वयं ही व्यावहारिक प्रक्रिया ढूंढनी होगी ।

11.5 'आदमी का बच्चा' कहानी के मुख्य पात्र बग्गा साहब की पत्नी का चरित्र–चित्रण

यशपाल की कहानी 'आदमी का बच्चा' में बग्गा साहब की पत्नी आभिजात्य वर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाली नारी है। वह चीफ इंनीजियर की पत्नी है और अपनी बेटी डौली को भी आभिजात्य संस्कारों से सम्पन्न करना चाहती है। वस्तुतः बग्गा साहब का घर में पूरा नियन्त्रण है अतः बेटी डौली को माँ द्वारा नियन्त्रण के तौर–तरीकों से परिचित करवाया जाता है। माँ ने आया बन्दी को हिदायत दी है कि डौली माली की कोठरी में नहीं आएगी क्योंकि "उन्हें भय था, उन बच्चों के साथ डौली की आदतें बिगड़ जाएंगी।" डौली का बालसुलभ मन माली के नवजात शिशु का रूदन सुनकर रूक नहीं पाया और वह माली की कोठरी में चली गई। इसकी प्रतिक्रिया में श्रीमती बग्गा ने आया को नोटिस देते हुए कहा कि "यदि फिर डौली आवारा गन्दे बच्चों के साथ खेलती पायी गई तो बस बरखास्त कर दी जाएगी।" श्रीमती बग्गा डौली के मन में अपने और माली के निम्न वर्ग का भेद निरंतर रेखांकित करती हैं। जब भी डौली माली के बच्चे के साथ खेलना चाहती है तो तर्क देते हुए कहती है – "छी–छी। मामा ने समझाया वह तो कितना गंदा बच्चा है। ऐसे गन्दे बच्चों के साथ खेलने से छी–छी वाले हो जाते हैं। इनके साथ खेलने से जुएं पड़ जाती हैं। वे कितने गन्दे हें, काले काले। हमारी डौली कहीं काली है ? एक अन्य उदाहरण में जब माली का बच्चा भूख के कारण रोता है तो आभिजात्य तेवर वाली मिसेज बग्गा कह उठती है "जाने इस

बच्चे के गले का छेद कितना बड़ा है।"

बग्गा साहब की पत्नी अपनी बेटी के प्रति ममतामयी है। वह बेटी डौली से अत्यधिक स्नेह करती है और हर संभव कोशिश करती है कि बेटी नियन्त्रण में रहे तथा अपने जैसे उच्च वर्ग के लोगों के सम्पर्क में रहे। उसने बेटी की आया को हिदायत दे रखी है कि डौली को माली क्वार्टर में नहीं मैंनेजर साहब के बच्चों से खेलने ले जाया करो। वहां रमन और ज्योति से खेल आया करेगी और शाम को कम्पनी बाग में ले जाना।

बग्गा साहब की पत्नी एक पढ़ी–लिखी शिक्षित नारी है। आधुनिक सभ्यता के सांचे में ढली होने के कारण वह बेटी व बेटे में भेद नहीं करती। डौली उनके लिए बेटी भी है और बेटा भी। उन्होंने डौली के जीवन की सुख–सुविधाओं को ध्यान में रख कर अन्य सन्तान पैदा न करने का निश्चय किया है। पति–पत्नी एकमत होकर निर्णय लेते हैं कि डौली यूनिवर्सिटी की शिक्षा पाएगी, शिक्षाक्रम पूरा करने के बाद विलायत जाएगी। अपने इस निर्णय के लिए उनके पास तर्क है "सन्तान के प्रति उत्तरदायित्व का यह आदर्श एक ही सन्तान के प्रति पूरा किया जा सकता है अतः कीड़े–मकोड़े की तरह बच्चे पैदा करने का फायदा नहीं।"

निःसंदेह बग्गा साहब की पत्नी पढ़ी–लिखी, समझदार, ममतामयी व उच्च वर्ग से संबंध रखने वाली नारी है। बेटी डौली के लिए हर सुख–सुविधा का प्रबन्ध करती है लेकिन डोली के बालमन की इच्छाओं व अभिलाषाओं को समझने की उन्होंने कभी कोशिश नहीं की। डौली को सदैव उच्च वर्ग के तौर–तरीके सिखाए जाते हैं जबकि उसकी संवेदनाओं और जिज्ञासाओं को नजरंदाज़ कर देती है। उनके स्वभाव का यही कमजोर पक्ष डौली के बालमन पर प्रश्न छोड़ जाता है "आया, हम भी भूख से मर जाएंगे ?"

11.6 'आदमी का बच्चा' कहानी के आधार पर बाल चरित्र डौली का चरित्र–चित्रण

'आदमी का बच्चा' कहानी का सृजन प्रगतिवादी कथाकार यशपाल ने बालमन की जिज्ञासाओं को केन्द्र में रख कर किया है । डौली एक चीफ इंजीनियर की बेटी है। अपने माँ–बाप की इकलौती सन्तान है। चूंकि वह उच्च वर्ग से संबंधित है अतः उसकी देख–रेख के लिए एक आया रखी गई है। डौली का अधिकांश समय अपनी आया के साथ व्यतीत होता है। शाम के समय जब बग्गा साहब के पास पांच–सात मिन्ट का समय होता है तो सजी–संवरी लाडली डौली माँ–बाप के सम्पर्क में आती हैं, उनसे बतियाती है। डौली की आया को निर्देश दिया गया है कि वह माली या धोबी की कोठरी में नहीं जाएगी, उनके बच्चों से नहीं खेलेगी और उनसे दूरी बनाए रखेगी ।

डौली का बालमन संवेदनशील है । यद्यपि माँ–बाप ने उसकी सुख–सुविधाओं व भविष्य को ध्यान में रखकर अन्य सन्तान की इच्छा नहीं की लेकिन उसके बालमन के हमउम्र बच्चों के साथ खेलने की जिज्ञासा प्रबल करती है । डौली आया की नज़र से बच कर कभी माली के नवजात शिशु से खेलने चली जाती है फिर कुत्तिया डैनी के पिल्लों से खेलना पसन्द करती है । उसके बालमन के आहत का परिचय तब मिलता है जब वह बिन्दी से बार–बार प्रश्न दोहराती है "आया, पिल्लों को गरम पानी में डुबो कर क्यों मार दिया ?"

डौली का बालमन सांसारिक व्यवहार, ज्ञान की बात नहीं जानता। उसके लिए संसार में हर एक चीज़ के लिए एक ही नियम है। जब माली का बच्चा रोता है तो माँ से कहती है – "मामा, माली का बच्चे को मेहतर से गरम पानी

में डुबवा दो तो फिर नहीं रोएगा।" जब माँ और आया उसे समझाते हैं कि आदमी के बच्चे के लिए ऐसे नहीं कहते तो बार–बार वह एक ही प्रश्न दोहराती है "तो आदमी का बच्चा कैसे मरता है ?" अथवा "आया, हम भी भूख से मर जाएंगे ?"

संक्षेप में कहा जा सकता है कि कहानी में डौली के बालमन की चंचलता का चित्रण नहीं मिलता बल्कि समाज की ऊंच–नीच वाली वर्ग सभ्यता के कारण उसका सहमा व संकोचशील व्यक्तित्व चित्रित हुआ है।

11.7 दारोगा अमीरचन्द कहानी के प्रमुख पात्र अमीरचन्द का चरित्र चित्रण

अज्ञेय द्वारा लिखी गई कहानी दारोगा अमीरचन्द का नायक अमीचन्द है। अमीरचन्द पंजाब की हज़ारा जेल का दारोगा था। वह एक नम्बर का जालिम व्यक्ति था। अटक जेल में मार्शल ला के पुराने कैदियों के साथ उन्होंने ज्यादतियां की थीं। दारोगा के पद से उन्नति पाकर डिप्टी साहब और राय साहब का पद पा चुका था और अब ब्रिटिश एम्पायर का आर्डर उन्हें शीघ्र ही मिलने वाला था। दरोगा अमीरचन्द स्वार्थी प्रवृत्ति का व्यक्ति था। अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए दारोगा अंग्रेज सरकार का पिट्ठू बना था और अपने देश की जेलों में बन्द ए, बी, सी क्लास के सियासी कैदियों के साथ जल्लाद सा व्यवहार करता था। उसे देश की आज़ादी के लिए जेलों में बन्द कैदियों के प्रति स्वदेश होने के नाते हमदर्दी नहीं थी। वह तो अंग्रेजों को खुश करने के लिए कैदियों में दबदबा और रोब बनाए रखता था ताकि अंग्रेज़ सरकार उसे अपना हिमायती समझ कर पदोन्नति देती जाए।

दारोगा अमीरचन्द जाति से खत्री था और डील–डौल का साधारण था। उसका कद मंझला था पर अकड़ कर चलता था। दारोगा की चाल में फुर्ती इतनी थी कि परेड पर निरीक्षण के लिए जब जाता तो कैदी अकस्मात ही आधा कदम पीछे हट जाते। अमीरचन्द ने अपनी छवि को रोबीला बनाने के लिए ठाकुरी अन्दाज की मूंछें रखी थी। दारोगा की मूंछों को लेकर लोग कहते थे वह तो जल्लाद है। लेखक ने कहानी में मूंछों का वर्णन व्यंग्यात्मक लहजे में करते हुए लिखा है कि दारोगा "अपनी घनी मूंछे ऐसे उमेठ कर रखते थे कि ठाकुर ठकुराई भूल जाए । मोम लगा कर मूंछों की नोक का कसाव कुछ ऐसा तीखा रखते थे, मानो तारकशी का काम करने वाले किसी अच्छे कारीगर ने लोहे के तारों के लच्छे लेकर उन्हें बंट कर नोंक दे दी हो। दारोगा अपनी मूंछों को बंटते रहते है और तब तक सन्तुष्ट नहीं होते जब तक कि नींबू उठाकर मूंछों की नोक पर उसे भोंक कर तसल्ली न कर लें कि नींबू उससे आर–पार छिद जाता है।"

दारोगा अमीरचन्द अनुशासन प्रिय व्यक्ति था। जेल के वातावरण में उन्हें अनुशासनहीनता बर्दाश्त नहीं होती थी और सख्ती से पेश आते थे। एक बार जब अकाली दल से दारोगा की ठन गई तो अकाली समूह ने अपनी शिकायतों की सूची देते हुए घोषणा की जब तक उनकी माँगे पूरी नहीं होगी वे जेल का डिसिप्लन नहीं मानेंगे तो दारोगा भी अपना लोहा मनवाने को उतावले हो गए और कहलवा दिया "कैदी कैदी हैं, उन्हें कोई फरियाद करनी ही तो परेड के दिन कर सकते हैं, धौंस कोई नहीं मानेगा और डिसिप्लन न मानने पर सख्त कारवाई की जाएगी।" दारोगा अमीरचन्द और अकालियों के बीच संघर्ष बढ़ता गया क्योंकि दारोगा अकालियों के लिए एक पर एक सज़ा घोषित कर देता परन्तु अकालियों पर कोई असर नहीं हुआ। अकालियों की सामूहिक एकता थी उन्होंने यह सोच कर दारोगा की सज़ाओं को सह लिया "मानो गैंडे की पीठ पर कोड़े

पड़ रहे हो, सौ पड़ें तो क्या और हज़ार पड़ें तो क्या।" अंततः परेड वाले दिन जेल का अनुशासन व अपना रोब बनाए रखने के लिए दारोगा अमीरचन्द को आकाली दल के सामने झुकना पड़ा क्योंकि– "एक खालसा सवा लाख' के बराबर था और अंग्रजों का पिट्ठ लग्गू अमीरचन्द अकेला। अकाली दल की शर्त थी कि दारोगा अमीरचन्द से कोई झगड़ा नहीं है, मगर वह भी हम पर हेकड़ी जताना छोड़ दे। बस, एक बार वह हमारे सामने अपनी मूंछें नीची कर ले, फिर हम उसके सब कायदे कानून मान लेंगे। अनुशासनप्रिय दारोगा को अकाली कैदियों की बात मानने के अतिरिक्त कोई उपाय नज़र नहीं आया। अतः समझौतावादी नीति से अकालियों के साथ पेश आते हुए कहता है "हमें तुम्हें आखिर साथ रहना है। न तुम जेल छोड़ कर भागे जा रहे हो, न हम सर्विस छोड़कर जा रहे हैं। फिर हेकड़ी की क्या बात ? आपस में तो खींचतान होती ही रहती है, उससे कोई छोटा थोड़े ही हो जाता है ? कभी हमने दबा लिया, तुम दब गए, कभी तुमने जोर मारा तो हमने पैंतरा बदल लिया। कभी हमने तुम्हारी गर्दन नाप ली, कभी तुम्हारे सामने मूंछे नीची कर लीं।"

दारोगा अमीरचन्द का दृष्टिकोण एकांगी है। वह कभी नहीं सोच पाता कि लोगों की उसके प्रति क्या राय है। दारोगा सदैव आत्मप्रशस्ति में रत रहता यही कारण है कि कहानी के अन्त में बुरी तरह आहत होता है। दारोगा अकाली दल के पंच लोगों के समक्ष मूंछें नीची करके राहत पाता है कि उसे किसी अन्य ने नहीं देखा और परेड वाले दिन आई0 जी0 के सामने अकाली डिसिप्लन में रहेंगे और वही क्षण उसकी विजय का होगा" जब परेड लगेगी और दूसरे कैदियों की तरह अकाली भी कतार बांध कर खड़े होंगे, वह आई0 जी0 को उनके सामने गुजरते हुए कहेंगे कि इन लोगों का मामला अब सेटल हो गया है और सब जेल की डिसिप्लन मान रहे हैं, तब कितनी बड़ी विजय का क्षण होगा।"

दारोगा अमीरचन्द व्यावहारिक कम अंग्रेजों का पिट्ठलग्गू अधिक था, यही कारण है कि कहानी के अन्त में उसका भ्रम टूट गया जब परेड वाले दिन कैदी अनुशासनबद्ध नहीं रहे और आई0 जी0 ने अनुशासन की ढ़ील को रेखांकित करते हुए उसका तबादला जिला के जेल में इन्चार्ज के रूप में कर दिया। दारोगा अमीरचन्द इस शिकस्त को सह नहीं पाया और समय से पहले ही पेन्शन लेकर चला गया। वह दारोगा जो अकालियों को सब्ज़ बाग दिखाते हुए कहता था "मैं कानून–वानून की परवाह नहीं करता मैं चाहूँ तो तुम्हारी बैरक में पीपे के पीपे घी के भिजवा दूँ चन्दन के बाग लगवा दूँ–हाँ चन्दन के बाग" वह अपने लिए बबूल की छांह भी नहीं पा सके और लोग दारोगा का नाम भूल गए लेकिन किस्सा नहीं भूले।

लेखक ने स्पष्ट शब्दावली में दारोगा अमीरचन्द के व्यक्तित्व के कमज़ोर पक्षों को रेखांकित किया है। एक छोटी सी भूल और व्यवहार की शुष्कता ने दारोगा को धरती पर ला पटका और वह अपनी ही नज़र में गिर गया था तथा आत्मग्लानि के बोझ से मुक्त नहीं हो सका।

11.8 कठिन शब्द :

1) दुश्चिंताओं	2) वात्सल्य	3) पतोहू	4) अवसरवादी
5) अभिजात्य	6) बालसुलभ	7) मेहतर	8) निरीक्षण

9) आत्मप्रशस्ति 10) हेकड़ी

11.9 अभ्यासार्थ प्रश्न :

प्र.1. 'प्रायश्चित' कहानी के आधार पर पंडित परमसुख का चरित्र–चित्रण कीजिए।

.....

.....

.....

प्र.2. 'आदमी का बच्चा' कहानी के आधार पर बग्गा साहब की पत्नी का चरित्र–चित्रण कीजिए।

.....

.....

.....

प्र.3. 'आदमी का बच्चा' कहानी के आधार पर बाल चरित्र डौली का चरित्र–चित्रण कीजिए।

.....

.....

.....

प्र.4. 'दारोगा अमीरचन्द' कहानी के प्रमुख पात्र अमीरचन्द का चरित्र चित्रण कीजिए ।

.....

.....

.....

प्र.5. 'पढ़ाई' कहानी की मुख्य पात्र सुनन्दा का चरित्र–चित्रण कीजिए।

.....

.....

.....

11.10 सन्दर्भग्रन्थ / पुस्तकें :

1. डॉ. वंशीधर, डॉ. राजेन्द्र मिश्र : मन्नू भंडारी का श्रेष्ठ सर्जनात्मक साहित्य, नटराज पब्लिशिंग हाउस, हरियाणा।
2. नन्दिनी मिश्रा : मन्नू भंडारी का उपन्यास साहित्य।
3. डॉ. शशि जेकब : महिला उपन्यासकारों की रचनाओं में वैचारिकता।
4. डॉ. सुखबीर सिंह : हिन्दी कहानी : समकालीन परिदृश्य, अभिव्यंजना प्रकाशक, नई दिल्ली।
5. डॉ. रघुवरदयाल वार्ष्णेय : हिन्दी कहानी : बदलते प्रतिमान, पांडुलिपि प्रकाशन, दिल्ली।
6. डॉ. कान्ता मेंहदीरता : हिन्दी कहानी का मूल्यांकन, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।